Vrisha Kalpadum

1814

॥ श्रीः ॥

पशुचिकित्सा ।

अर्थात्

वृषकल्पद्रुम ।

जिसको

ग्रामनिवासी परमोदार केशवसिंह तअल्लुक़दारने
त्तम छन्दोबद्ध सुगम और सरल कवित्तोंमें रचा ।

जिसमें

स्थानी, फारसी और अँग्रेजी-मतानुसार गौ, वृष,
हिषियोंके रोग लक्षण चिकित्सा, क्रय विक्रय मुहूर्त
और नाना प्रकारकी अनुभविक अमूल्य
औषाधियाँ वर्णित हैं !

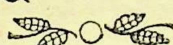
उसीको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
ध्यक्ष "**लक्ष्मीवेंकटेश्वर**" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९७९, शकाब्दाः १८४४.

कल्याण-मुंबई.

भूमिका ।



वर्त्तमान समयमें हमारे देशवासियोंका मूलधन
(खेती) ही है । प्रायः सभी देशवासी इसीके द्वारा नि
करते हैं और इसीके सहारे एक दो गौ भैंसभी रख ले
परंतु जब वे दरिद्रोपयोगी पशु दैविक अथवा भौ
व्याधियोंसे ग्रसित होते हैं तब लोगोंको बहुत बडी क
ता होती है लेकिन विना उस विषयकी औषधी जाने वि
किसान करही क्या सकते हैं ? उपरोक्त कठिनताके नि
णार्थ यह देशहितैषी यन्त्रालय " पशुचिकित्सक " ग्रं
खोजहीमें रहा करता था. निदान अब हमारे हितैषी
ल्लुकदार परमोदार केशवसिंह स्थान तियरी जिला उ
यह ग्रंथ बनाय भेजदिया, इसमें बैल गौ भैंसादि पशु
रोगहारक यन्त्र और उनके चित्रसमेत शुभाशुभ
और सम्पूर्ण रोगोंके शमन करनेहारी अनेकानेक औ
वर्णित है । सब किसानोंको यह परमोपयोगी पुस्तक
इयही एक २ अपने घरमें रखना योग्य है, कारण कि
द्वारा वे पशुओंको भलीभाँति नीरोग रखके अपना
लेसकेंगे ।

आपका कृपापात्र-

खेमराज श्रीकृष्णदा

" श्रीवेंकटेश्वर " (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष-मुं

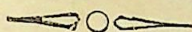
देव
पशु
चर
पशु
यंत्र
गोवृ
पशु
मुहू
वृष
पशु
पशु
पशु
हलच
गोने
अशु
गोरं
अशु
शीश
श्रीवा
खरज

82,220

श्रीः ।

अथ वृषकल्पद्रुमग्रन्थकी

विषयानुक्रमणिका.



विषय.	पृष्ठांक.
देववंदना	१
पशुशालारचनाविधि....	२
चरहीकी विधि	,,
पशुको सर्वरोग सर्वारिष्ट निवारण मंत्र वा यन्त्र	३
यंत्रविधि	,,
गोवृष क्रय विक्रय मुहूर्तचक्र	४
पशुरक्षा, घरमें लाना या ले जानेका मुहूर्त	,,
मुहूर्तका चक्र	५
वृषपशुयात्रा	६
पशुपीडानिवारण मंत्र विधि	,,
पशु बरदासि, रक्षाकरण मंत्र	,,
पशु रखनेकी विधि	७
हलकई वृषभ शुभाशुभ	९

अथ गोवृष शुभाशुभ लक्षण ।

गोनेत्र शुभ लक्षण	१०
अशुभ शृंग लक्षण	,,
गोरंग अशुभ	,,
अशुभदंत लक्षण	,,
शीश वा मुखलक्षण....	११
ग्रीवालक्षण	,,
स्वरलक्षण....	,,

अनुक्रमणिका।

विषय.	पृष्ठांक.
अगलक्षण	११
जिह्वालक्षण	,,
बदखुरिनके लक्षण	,,
दुबरई वा ठाठिके लक्षण	१२
अधिक वा हीनलक्षण	,,
अंडकोषलक्षण	,,
नसैं वा रगोंके लक्षण	,,
मूत्रलक्षण	,,
नेत्रलक्षण	१३
श्याम तारू जीभ ओंठलक्षण	,,
श्वासलक्षण	,,
लिंगलक्षण	,,
शृंगलक्षण	,,
रंगलक्षण	१४
फुलहारंगलक्षण	,,
फुलहावृषलक्षण	,,
नेत्रलक्षण	,,
कायरवृषभलक्षण	,,
शुभलक्षण	,,
ओठलक्षण	,,
इंद्रियलक्षण	,,
अंगलक्षण	,,
खुरलक्षण	१५
छाती वा ठाठिके लक्षण	,,
त्वचा वा रोमलक्षण	१६
शृङ्गलक्षण	,,

विषय.	पृष्ठांक.
पुच्छलक्षण	१६
नेत्र वा श्वासलक्षण	"
कंधलक्षण	१७
चालके लक्षण	"
जंघालक्षण	"
नेत्रलक्षण	"
अंगलक्षण	१८
अंडकोषलक्षण	"
हस्तीवृषलक्षण	"
लक्ष्मीप्राप्तिकरण वृषभलक्षण	१९
हलनादोष	"
डोलना दूसरा नाम नेहर	"
झुमनादोषलक्षण	"
अंगहीन वृद्धिदोष नादिया वगैरह	२०
धूसरिदोषलक्षण	"
नसुढिया नहसुबा	"
अहिमुखीदोष	"
चौंकदार भडका करै....	२१
हरिणी पटिया दोषी	"
लमटंगा	"
मुदा वृष लक्षण	"
ढेल मुहा थोथिया	"
डुरिया नाम वृष	२२
कुसादरूह	"
अश्व, साना वृषलक्षण	"
वर गँत्तन वृष लक्षण	"

अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.
कमरा वृष लक्षण	२२
कुलिञ्च वृष लक्षण	२३
बडकन्न वृष लक्षण	"
झुँपिया वृष लक्षण	"
बेवरिहा वृषभलक्षण	"
चकैया वृषदेहीका लक्षण	"
फतेपेशानी	२४
मृगानेत्र अशुभ लक्षण	"
कञ्जानेत्र अशुभ लक्षण	"
ताखीदोष लक्षण	"
कनानेत्रा अशुभ लक्षण	"
ऐंचाताना व ढेरा नेत्र लक्षण	"
नेत्रकोया चितला शुभ लक्षण	२५
नेत्रपलक चितला शुभ लक्षण	"
भइँचिता नेत्र अशुभलक्षण	"
भइनेत्र लक्षण	"
कोतेचश्म वृषलक्षण	"
चितखोवा नेत्र लक्षण	"
दंतदोष छद्दरि लक्षण	२६
छद्दरि दंतदोष लक्षण	"
नवदंत अशुभ लक्षण	"
दंतनिपोसा वृष अशुभ लक्षण	"
सुतरदंत वृष अशुभ लक्षण	२७
भरकदंत वृष मध्यम लक्षण	"
दंतलक्षण वा प्रमाण	"
बडे बैलकी पहिचान	२८

विषय.	पृष्ठांक.
खुर फैला वृषभ लक्षण	२८
घोलिया खुर लक्षण	"
खुरचपाती वृष लक्षण	"
खुरखुरा वृषभलक्षण	"
खुरकटा वृषभ लक्षण	"
खुरघसीटा वृषभलक्षण	"
कचखुरा वृषभ लक्षण	"
शृङ्गोंके लक्षण शुभाशुभ वर्णन	"
मोराशृङ्ग लक्षण	३०
बडशृङ्ग लक्षण	"
मेढियाशृङ्ग लक्षण	"
भेडियाशृङ्ग लक्षण	"
औंधीचाचरि शृङ्गलक्षण	"
वकियाशृङ्गलक्षण	"
सरगापतालीशृङ्गलक्षण	"
कैंचा शृङ्गलक्षण	३१
सैरेयाशृङ्गलक्षण	"
कोकिला शृङ्गलक्षण	"
मैनाशृंगलक्षण	"
ईंडाशृंगलक्षण	३२
ण्डावृषभपैदायशी	"
ण्डाशृंगलक्षण	"
ण्डापैदायशीशृंगलक्षण	"
टशृंगावृषलक्षण	"
रशृंगावृषलक्षण	"
यागृंगलक्षण	"

अनुक्रमणिका ।

बिषय.	पृष्ठांक.
खुरकपलीनाशृंगलक्षण	३३
गेरलाशृङ्गलक्षण	,,
खुराखुरशृङ्गलक्षण	,,
कौडिहाशृङ्गलक्षण	३४
वृषरंगशुभाशुभलक्षण	,,
बौंरारंगपूछका	,,
बौंरारंगदेहका शुभ	,,
बौंरासोनहलारंगलक्षण	,,
कचेलियारंगलक्षण	,,
कजरारंग	३५
श्यामकर्णरंग	,,
चंदुवा टिकुवारंग	,,
मुहधोवाश्वेतवदन	,,
पीलारंग	,,
इकसाधुमयलारंग	,,
भुरारंग	३६
सकोलरंग	,,
करदुम्मारंग	,,
ललदुम्मारंग	,,
कबरारंग अरुण	,,
चितलारंग दुइतरहका है	३७
करुआतेलियारंग	,,
करुवा वृषभरंग	,,
नीलवृषभरंग	,,
गोरवारंग	,,
गोंरसिरवा	३८

क.	विषय.	पृष्ठांक.
३३	धुसारिहा रंगदोष	३८
”	कुलहारंगकुष्ठदोष	”
”	तिलहारंग	”
३४	माखियारा रंग	”
”	ओडावृषभ रंग	”
”	कागमदनरंग	३९
”	चौदह रंगके पृथक् २ लक्षण	”
”	गरियार रखादरवृषलक्षण	”
”	बैठुवाखादर लक्षण	४०
”	मनखादर लक्षण	”
३५	चमकुल खादरलक्षण	”
”	मध्यमधीरा चलैके लक्षण	”
”	माहिदोषधूसारिवर्णन	”
”	छंजन दोष	४१
”	खंदयल दोष	”
”	धूसरि माहिषको	”
३६	महिषके शुभभौंरी वर्णन	”
”	रारिहा भौंरीवृषभ अशुभ	”
”	ट्टिया भौंरी	४२
”	डलुइयाभौंरी अशुभ लक्षण	”
”	महिषीमातन गर्भाधारण विधि	”
३७	महिषी नाँघेपर ठहरती न होय उसका उपाय	४३
”	महिषीके वियायके महीना प्रमाण	४४
”	महिषीवियायके महीना अशुभ	”
”	सर्वपशुओंकी बियातीबेर क्लेश होइ सो निवारण	”
”	षियोंके बियानेपर मेली निकराति है ताके लक्षण	”
३८	नेकी	५४

विषय.	पृष्ठांक.
गो महिषीका दूध सूखजाताहै तिसकी दवा	४९
गो महिषी दूध बढावेको मंत्र	४६
तथा यंत्र....	"
तथा दवा	"
सर्वचोपयाके रोगकी पहिचान; लक्षण	४
पहिली पहिचान नेत्रलक्षण·	"
दूसरी पहिचान मूत्रपरीक्षा	"
तीसरी पहिचान गोबर लक्षण....	"
चौथी पहिचान नाडीपरीक्षा	६
पांचवीं पहिचान कान छूनेकी दवा	
छठई पहिचान मिजाज परखैके लक्षण	
चलनेकी थकवाहीकी दवा	
दवा मालिसकी	
सेंदुरुफ बटी	
दवा अजमाई	
थकवाहीपर औटा	
भरे वृषभके बुझावको बफारा देनेकी विधि	
महिष भरिजाय रस्ता चलेमें ताको उपाय	
महिष वृषभ लादेते पीठि वा छाती सूजिजाय	
तिसका उपाय गरवा, पट्ठारोग लक्षण दवा	
महिषिकी मंदाग्निका मसाला	
घमहा वृषभ लक्षण वा दवा	
वृषभ तरवासेके लक्षण	
कूल उतरेकी दवा	
दवा झिटका, चोट, मोच गुखुरू डोलै कूल उतैर	
गुखुरू अगले पैरके डोलेके उपाय	

विषय.	पृष्ठांक.
गुखुरू दागैकी विधि	५७
सैंक	५९
कोई अङ्गमें गर्मीते सूजनि होय ताकी दवा	”
कोई अंगकी गांठि–गिरह जोरमें जो कठोर बहुत ह्वैजाय गुम्मर निकरि आवै ताकी दवा	६०
कुम्हेडी रोग लक्षण	”
नेत्रमें भेलावां लगानेके लक्षण....	”
वृषभ वा महिषके कांधेमें झिटका लागेकी दवा	६१
वृषभ वा महिषका कांध सूजै वा पाकै फूटै ताके लक्षण वा दवा	”
कांधे फूटि बहै वा पानी आवै ताको मलहम	६२
कांधेमें बार जामेका तेल	”
जखमपर यह दवा लगावै तो पाकै फूटै नहीं जल्दी सूखै	६३
कुरिया जखम धोनेका पानी	६४
जखम साफ करनेका मलहम	”
जखमसे खून बन्द करनेकी दवा	”
जखम साफ करनेका दूसरा मलहम	६५
जखममें पीव आनेपर मलहम	”
मलहम जखम जलदी अच्छा करनेका	”
जौन जखम अच्छा होजाय सूखै न ताकी दवा	”
जखम अच्छेपर बार न जामेकी दवा	६६
कटी पूँछपर बाल जमनेका तेल	”
पशुका पेट फाटै आँतैं निकसि आनेकी दवा	६७
वृषभके नासूरका मलहम	”
दागेके जखमपर लगानेका मलहम	६८
सब तरहकी फुरयोंके निकसनेका उपाय	६९

विषय.	पृष्ठांक
फुरिया पकावेकी दवा	६
फुरियामें मांस न बाढै ताकी दवा	७
वृषभके खुर फाटने व पीब पानी बहनेका मलहम	,,
बदखुरिनकी इलाज	७
कीराशाई नाशन विधि	,,
बुझावाकी दवा, टटका, मन्त्र, ...	,,
मलहम कीरा निवारण माछी न बैठे	७
मलहम कंठमालानाशक	७
आदमियोंके लिये उत्तम मलहम	,,
पनियारी रोग लक्षण	७
बेलियारोग लक्षण, दवा, दागेकी विधि.	,,
घेघारोग लक्षण, दवा, बफारा, गोली, लेपन	७
मसाला सूजनि मिटानेका	८
दागेकी विधि	,,
हैलुवा रोग लक्षण, दवा, लेपन, बफरा, मसाला	,,
ऑरंजा कण्ठदुःख, दवा, लेप, दाग	८
हलकमें सूजन	८
खजलीकी दवा, लक्षण	८
गजचर्मकी दवा	८
खौरारोग लक्षण	८
कच्छू राक्षस तैल, त्वचारोगनाशक	,,
महामिरचाद्य तैल	८
परिहुल रोगलक्षण, दवा	८
चुप्पारोग लक्षण, दवा	,,
पिंगरोगदांतनका	९
तारू रोग लक्षण वा दवा	,,

विषय.	पृष्ठांक.
अनछरारोग लक्षण वा दवा	९०
मेझकीरोग लक्षण, दवा दागैकी विधि	९१
बहतारोग लक्षण वा दवा	९२
सूत वामरोग लक्षण वा दवा	९३
आरजा मुखबन्द	,,
वृषभके मुखमें कांटा ह्वैजातेहैं	९४
घुमना रोग लक्षण वा दवा	,,
घुमना रोग झारैका मंत्र	९५
उदर फूलैके लक्षण वा दवा	,,
कटकवाउके लक्षण	९६
गुदामें बाती चलावैकी विधि	९७
सब तरहके पेट फूलैकी दवा	,,
मन्त्र साबर पेट फूलैके झारैका	९८
दवा फूले वृषभकी	९९
शूल रोग लक्षण व दवा	,,
हरकिस्मकी शूल वा बदहजमीकी दवा	१००
शूल जो बहुत दिन होय ताते पेटमें सूजन आवे	१०१
करसारोग लक्षण दवा	१०२
गर्दनकी नस वा पट्टा चढिजाय ताके लक्षण व दवा	१०३
नमका रोग लक्षण, दागनेकी विधि, दवा.	,,
अर्द्धंगरोगलक्षण दवा, दागनेकी विधि	१०५
आरजा निर्घटका लक्षण व दवा	१०६
हन्न वायुके लक्षण, दवा	१०७
डनक वायुके लक्षण व दवा	१०८
दागकी शकल	१०९
षला वायु लक्षण व दवा	,,
सर्वरोग हरन उपाय....	११०

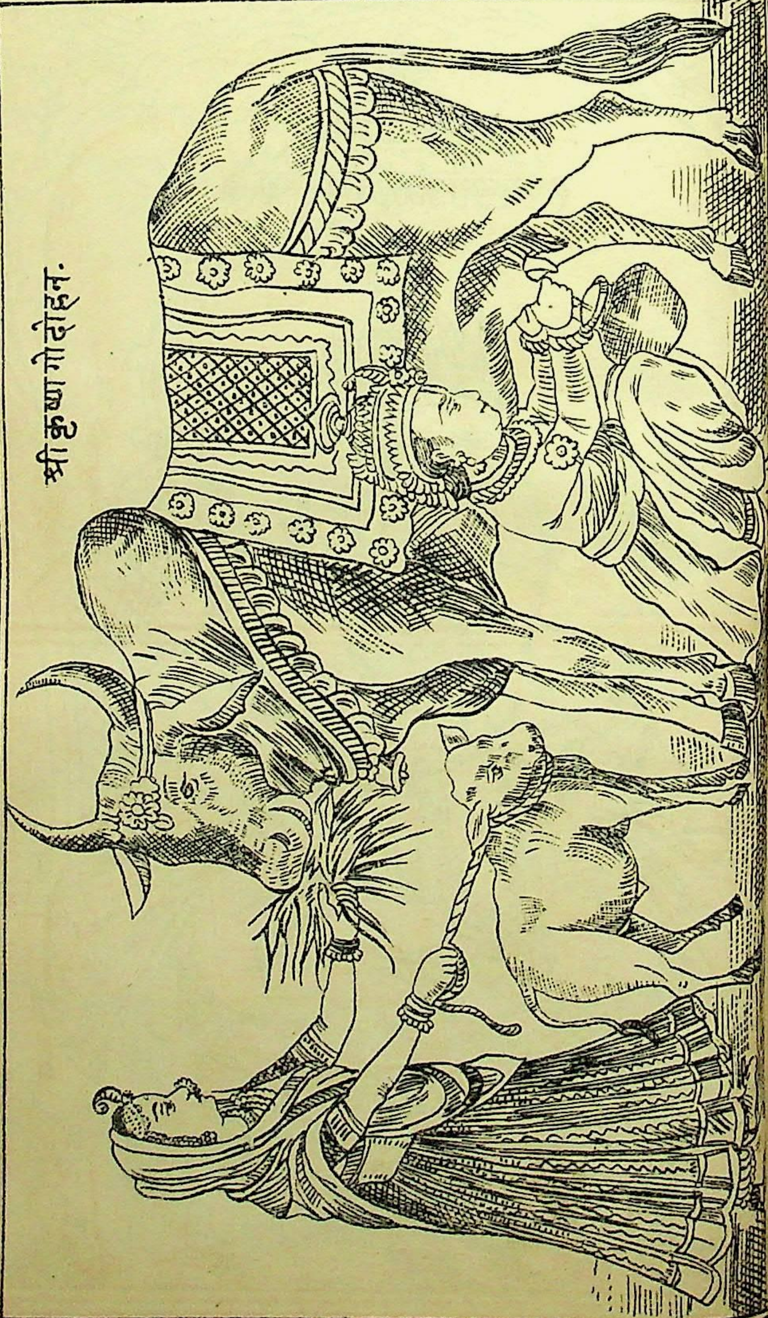
विषय.	पृष्ठांक.
कोई रोग न आवे ताकी दवा	११
मनियाँ फूटे रोग लक्षण वा दवा	”
ओदीरोग लक्षण, दवा, टटका, दागनेकी विधि	११
नेत्रपीडाके लक्षण वा दवा	”
आँखिनकी फूली माँडा ठेठरकी दवा	११
रतौंधीकी दवा	११
जारा, माँडा, फूली, ठेठरके लक्षण वा दवा	१
गोली जारा आँखिनको मिटानेकी दवा	१
झजिला वृषलक्षण दवा	”
चपटी वा किलोनिनकी दवा	१
कामीला वृषलक्षण....	१
वृष महिषके झरीला रोग लक्षण वा दवा	”
अंडकोष सूजें ताके लक्षण वा दवा	१
बफारा	१
गजचर्मरोग	१
जहरबात लक्षण वा दवा	१
गरदव्वा रोग लक्षण दवा	१
पटका रोग लक्षण दवा	१
बुडका नाम रोग लक्षण दवा	१
घुरका नाम रोग लक्षण, दवा	
बेधन रोग लक्षण, दवा	
चालीसा मसाला चारों रोगपर	
जहर खायेके लक्षण वा दवा	
संखियाकी गोली खायेके लक्षण वा दवा	
सिंगिया जहरकी गोली खायेके लक्षण दवा	
खुरपका ज्वर लक्षण वा दवा	
तेल खुरपकाके जखम परका	

विषय.	पृष्ठांक.
खुरपका खुरहाज्वर झारेका मन्त्र साबर....	१३५
दूसरा साबर मन्त्र घुरका, वौंडी, डींबरा, खुरपका रोग नाशन	१३६
विषहरारोग लक्षण वा दवा	१३७
विषरोग दूसरी किस्मका तिसके लक्षण दवा	”
सरदी वा वादीते वृषभ पोंकै ताके लक्षण व दवा	१३८
गरमीते वृषभ पोंकै ताकी दवा	१३९
महिष वृष रक्त पोंकै	१४०
पेसाव बन्द होइकैं दवा	१४१
कोहज्जारोग लक्षण, दवा	”
पेरमें रस बादी उतरै ताके लक्षण व दवा	१४२
मसाला, लेप दागिकी विधि	”
परकानाम रोग लक्षण, दवा	१४४
सेरदमी रोगलक्षण व दवा	१४५
आरजा सांक दमीका	१४७
रागखांसी वा धांसा	१४८
महाकल्याणपिंड	१५०
लेपन दिमागका	१५१
तिलानाम रोग लक्षण दवा	”
त्वकीकाथ	१५२
सर्वविष निवारण गरुडमन्त्र	१५४
कोई पशु सूजी खाजाय ताके लक्षण, दवा	”
मसाला हाजमेका	१५६
सुजवा रोग लक्षण व दवा	”
महुवा वीसी रोग लक्षण व दवा	१५७
रस पित्ती उछरैके लक्षण व दवा	१५८
मसाला वसंतऋतुका	”

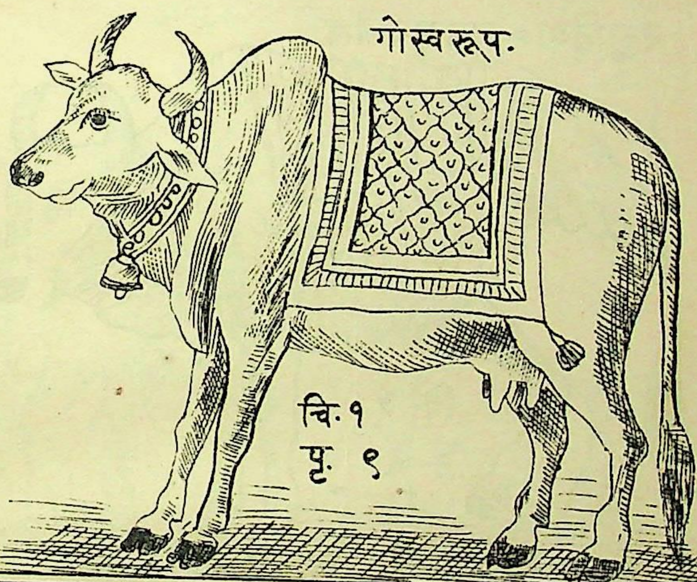
विषय.	पृष्ठांक
मसाला ग्रीष्मऋतुका	१५
मसाला वर्षाऋतुका	”
मसाला शरदृतुका	१६
मसालाचनेठि शरद वा हेमन्तऋतुका	१६
मसाला हेमन्तऋतुका घुँघुवारी पिंड	”
मसाला औटी शिशिरऋतुका	१६
मसाला तनु पुष्ट करन हेमन्तऋतुका	”
नासु हिमऋतुका	”
मसाला एलुवा पाग	१६
मसाला सेंदुरुफ	”
मसाला छोहारा बटी पाग	१६
मसाला क्षुधाकर	”
मसाला हाजमा व पाचनका शिशिरऋतुका	१६
मसाला सर्वरोग उदर व्याधि वगैरह पर	”
मसाला कमताकतिका	१६
मसालाका नाम अठरोजा	”
मसाला सर्व उदरव्याधिपर	१६
मसाला बदहजमी वा देह सूजैका	”
सारा मसाला	”
मसाला तैयारीका	१६
मसाला बदहजमीका	”
मसाला बादी बदहजमीका	”
मसाला बहुत फायदेका	१६
फस्त खोलै रुधिर लेवेकी जगह वा रगनके नाम	”
गोशांति	१७

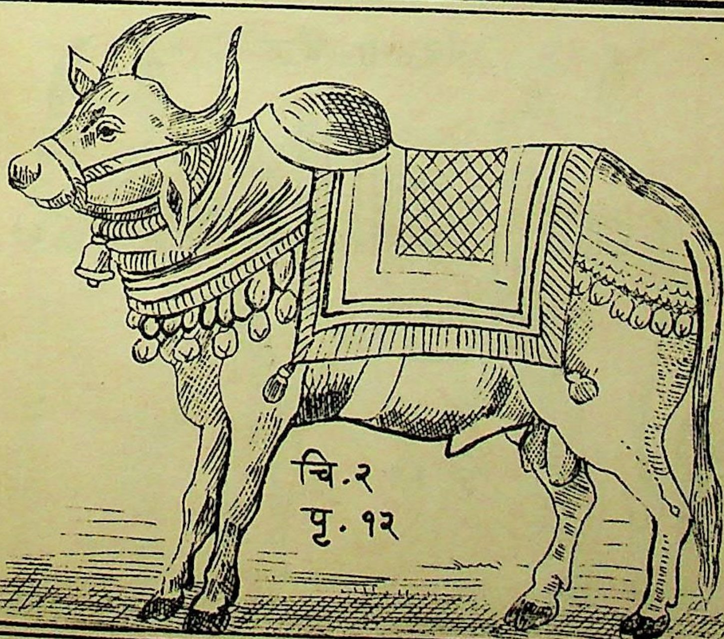
इति अनुक्रमणिका समाप्त ।

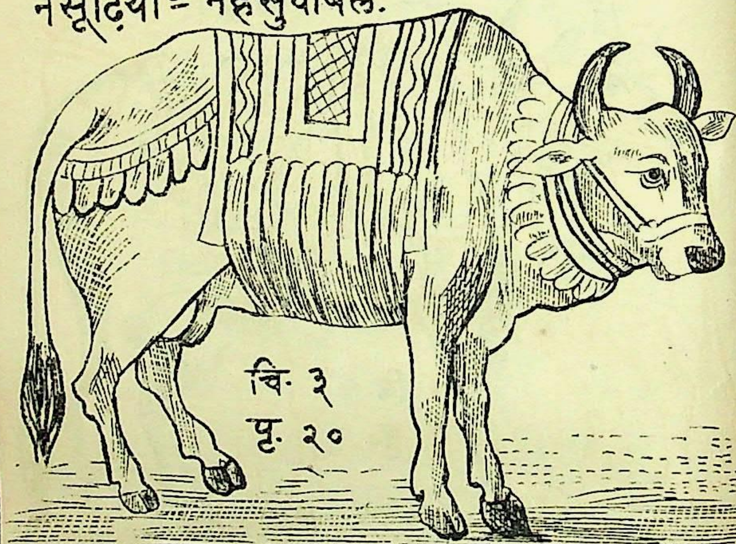


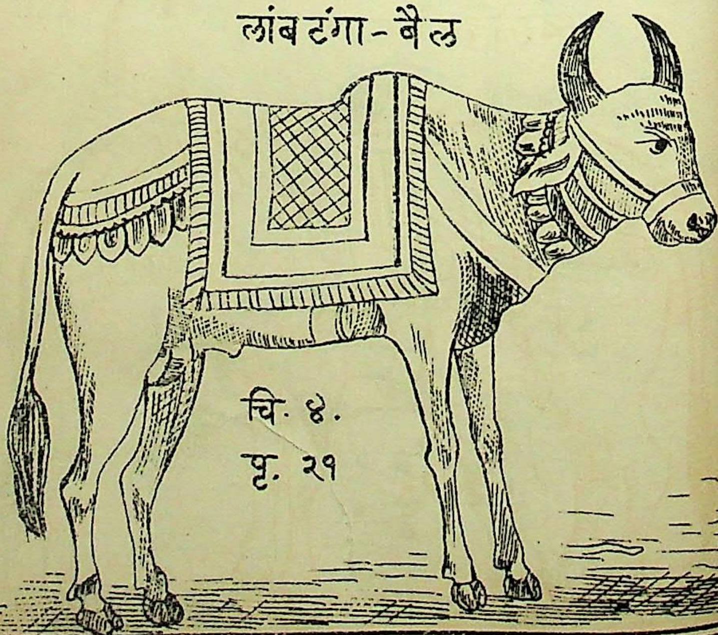


श्रीकृष्ण गोदोहन.

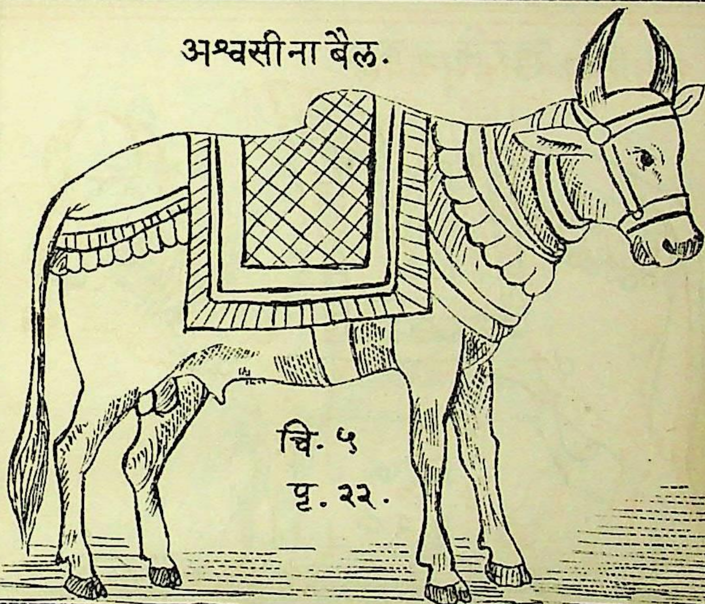

गोस्वरूप.
चि. १
पृ. ९


चि. २
पृ. १२


नसूढ़िया = नह्सुवाबैल.
चि. ३
पृ. २०

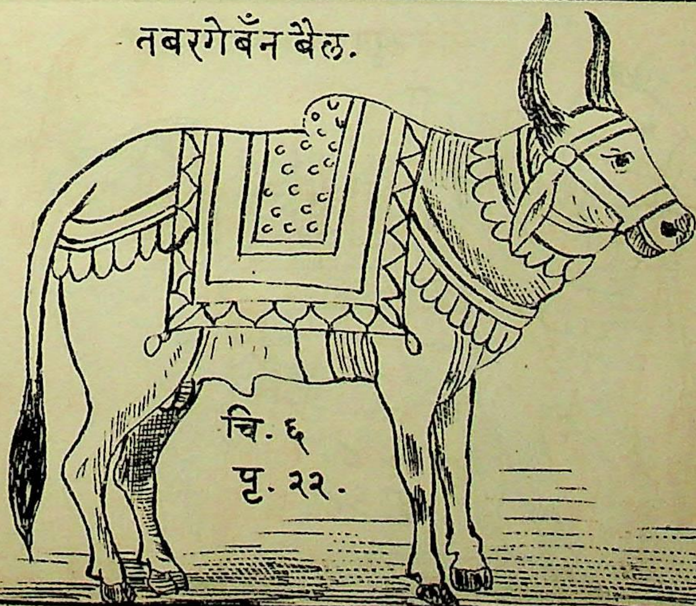

लांबटंगा - बैल
चि. ४.
पृ. २१

अश्वसीना बैल.



चि. ५
पृ. २२.

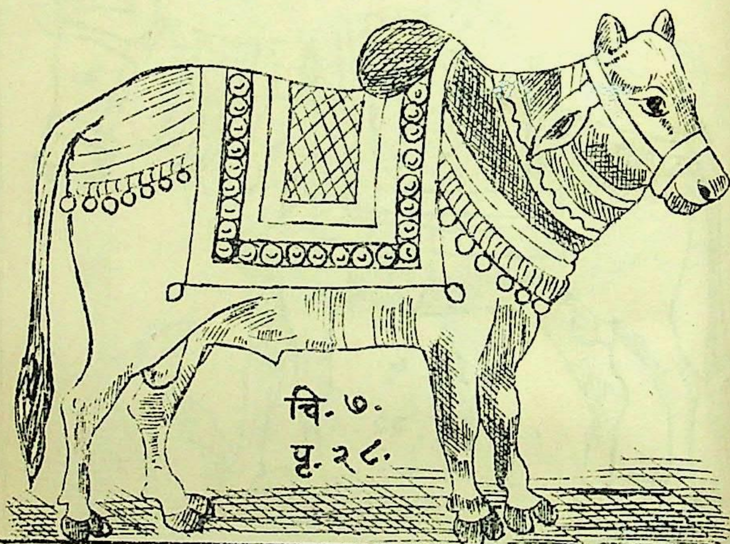
तबरगेबँन बैल.



चि. ६
पृ. २२.

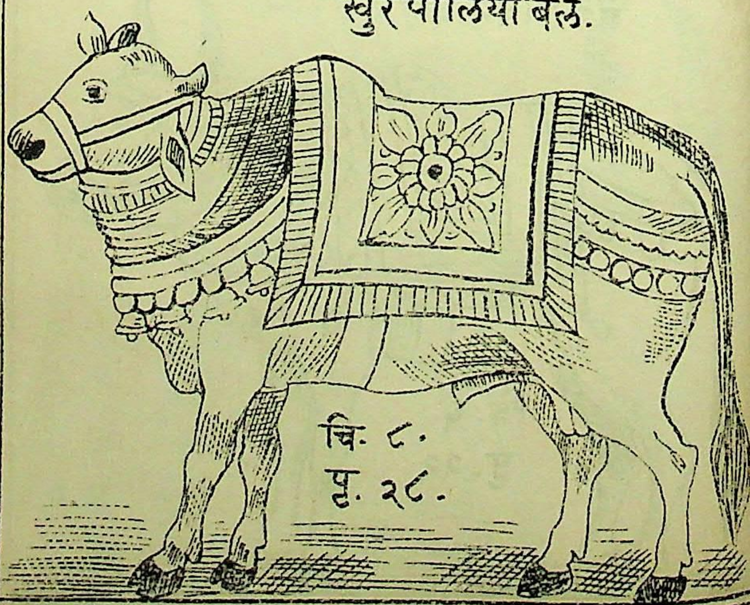
वृषभ चित्र.

खुर फैला बैल.

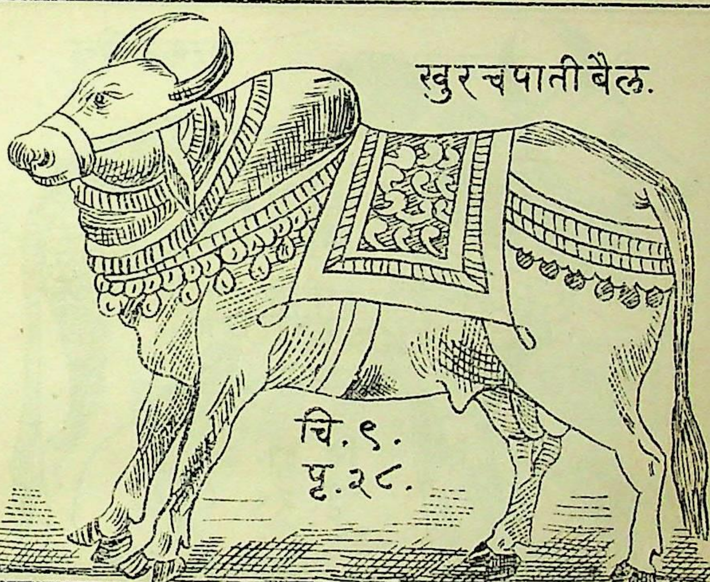


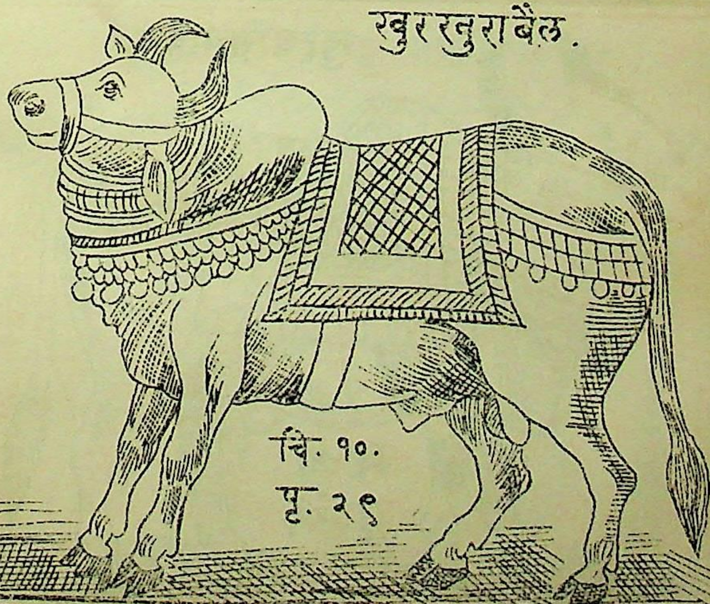
चि. ७.
पृ. २८.

खुर पालिया बैल.

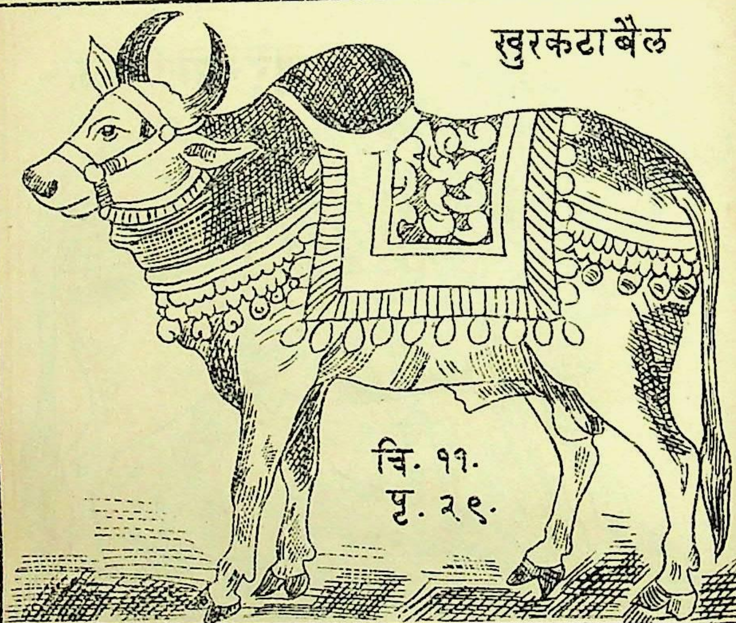


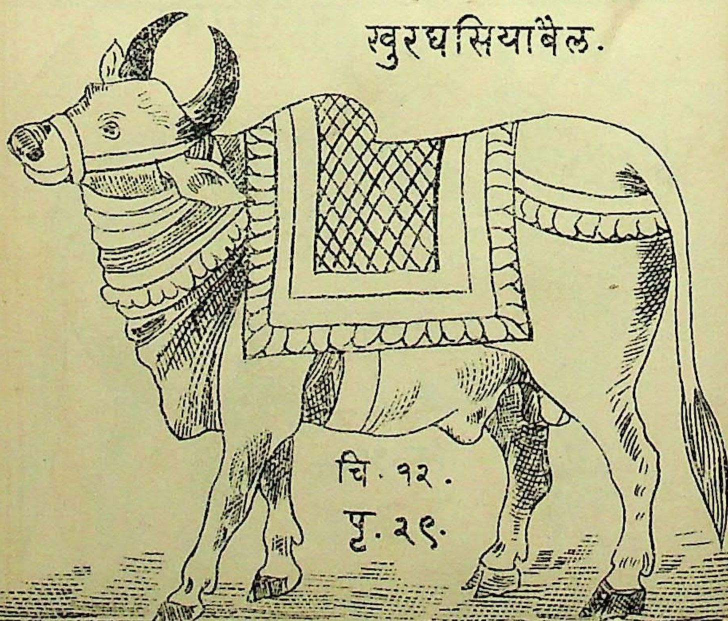
चि. ८.
पृ. २८.

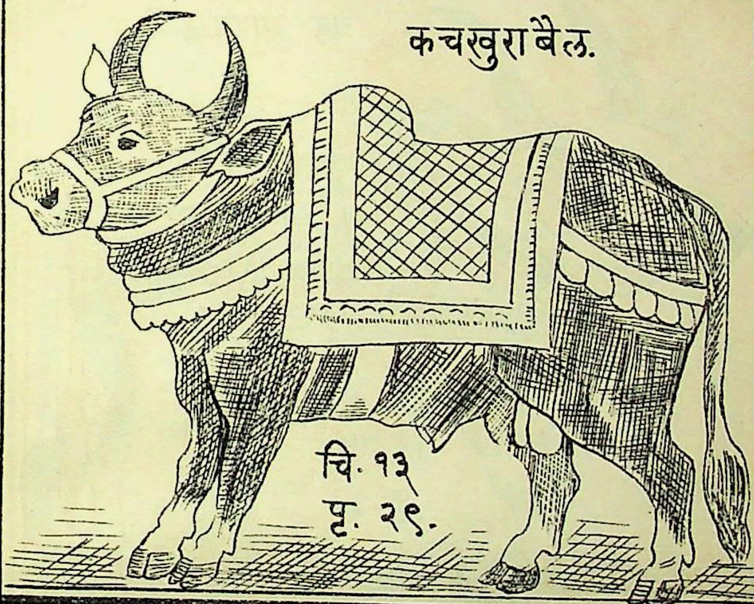

खुरचपाती बैल.
चि. ९.
पृ. २८.

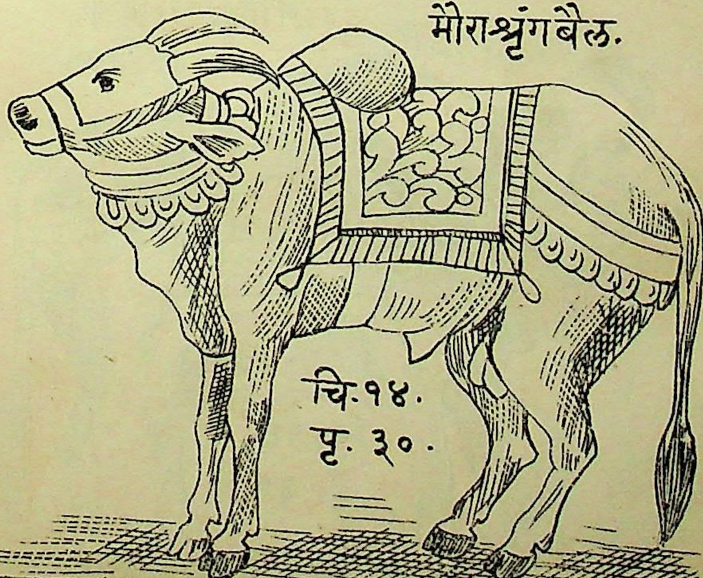

खुरखुरा बैल.
चि. १०.
पृ. २९

वृषभचित्र.

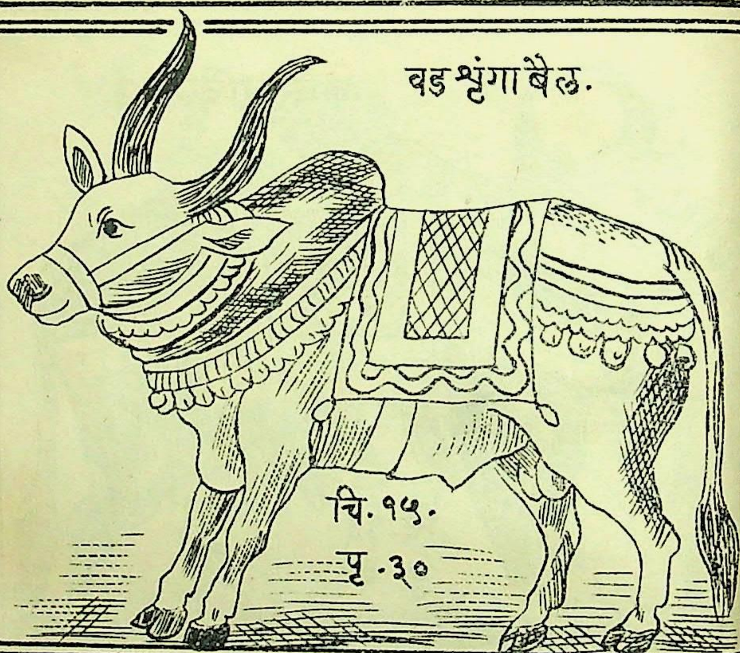


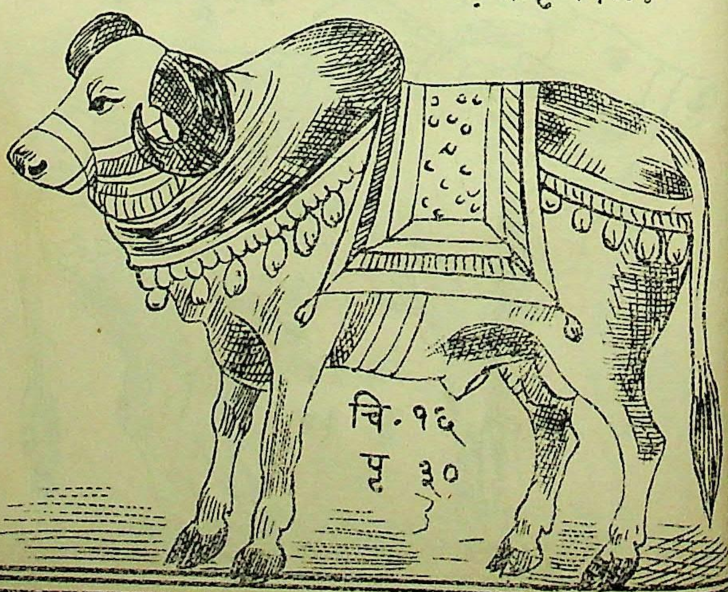


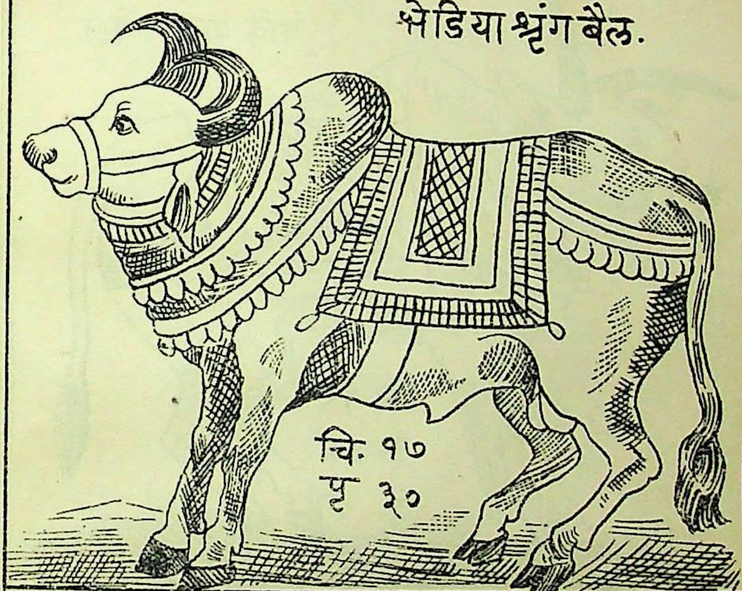

कचखुरा बैल.
चि. १३
पृ. २९.


मोराश्रृंग बैल.
चि. १४.
पृ. ३०.

वृषभचित्र.

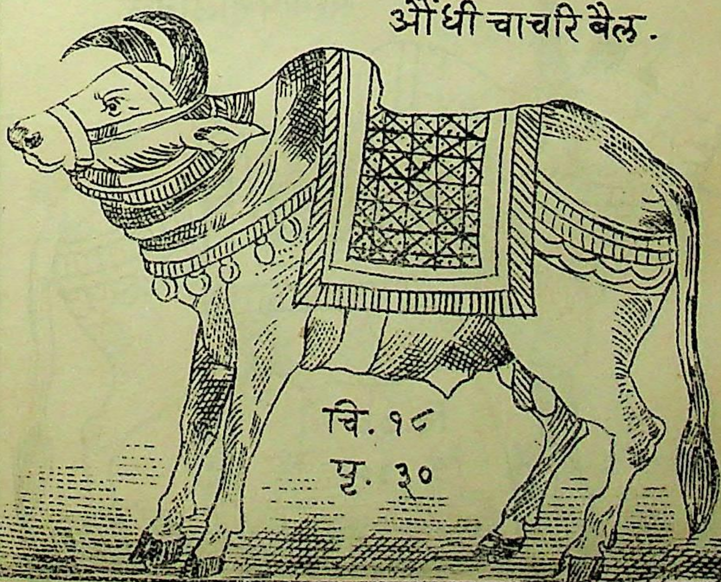






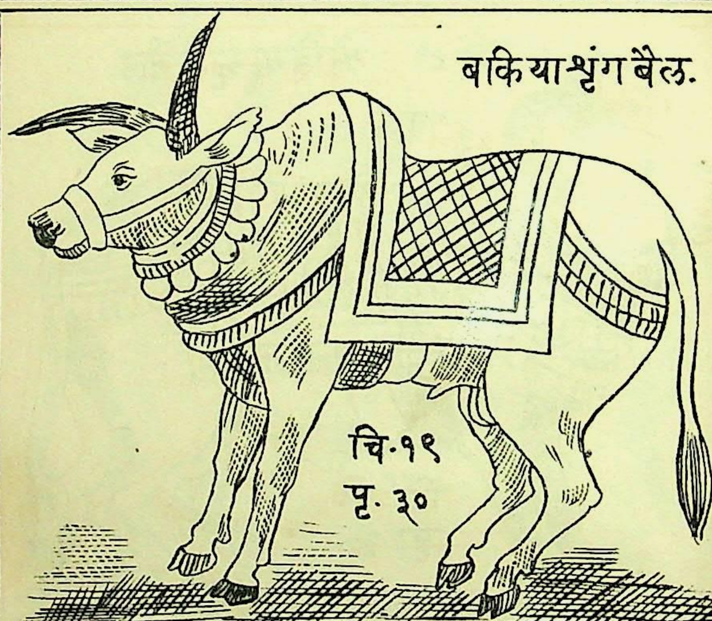
भेडिया श्रृंग बैल.

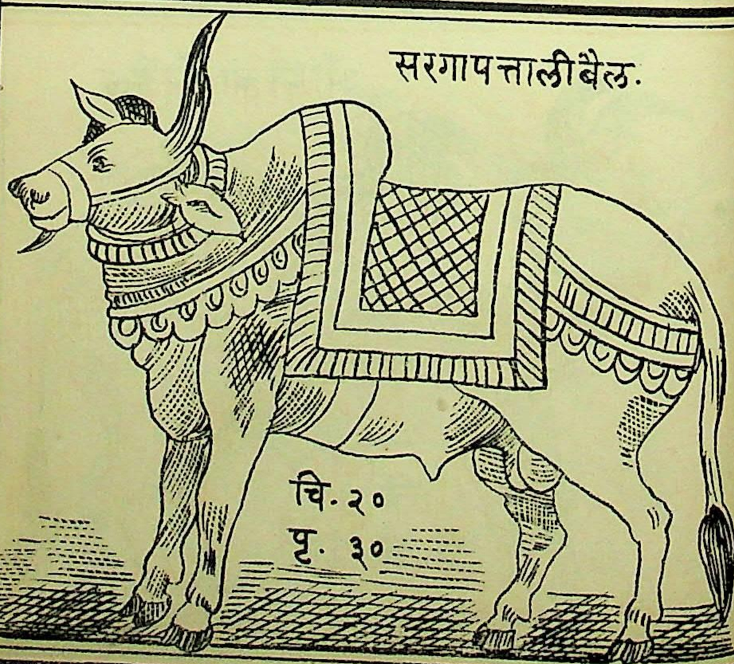
चि. १७
पृ ३०

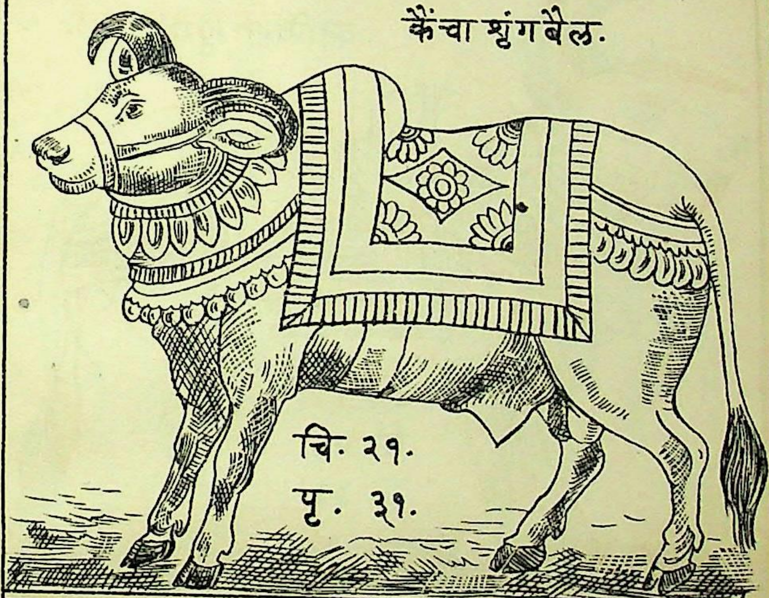


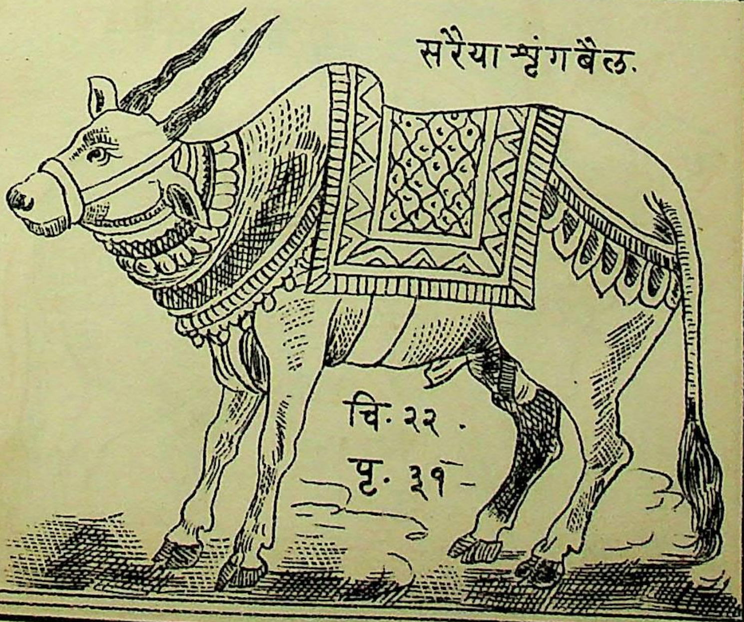
औंधी चाचरि बैल.

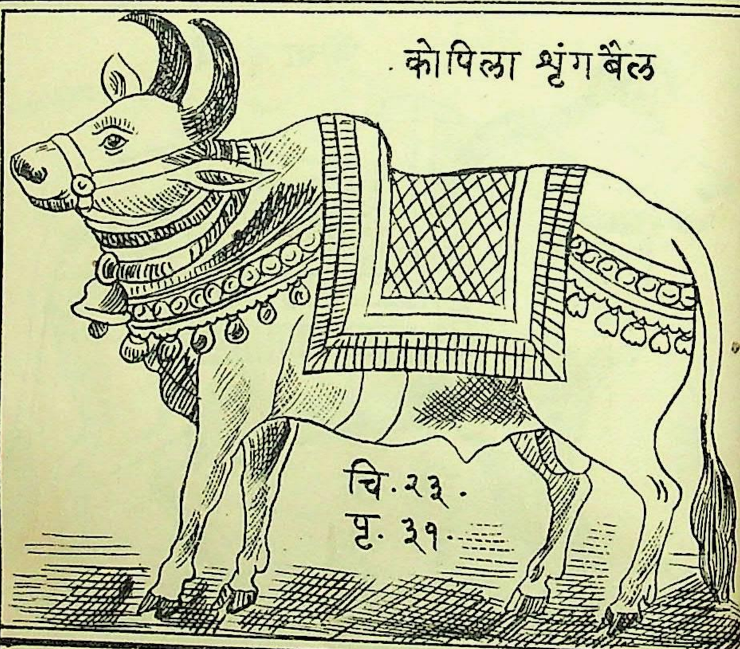
चि. १८
पृ. ३०

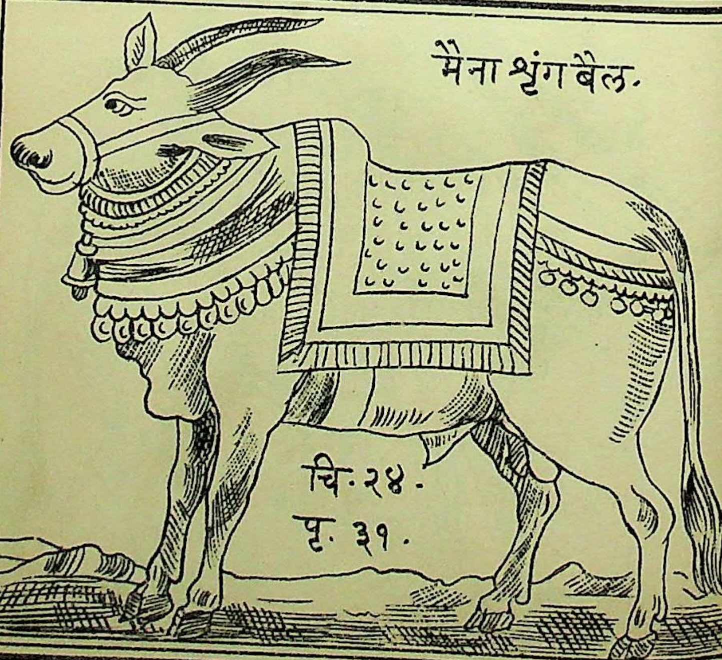

बकियाश्रृंग बैल.
चि. १९
पृ. ३०

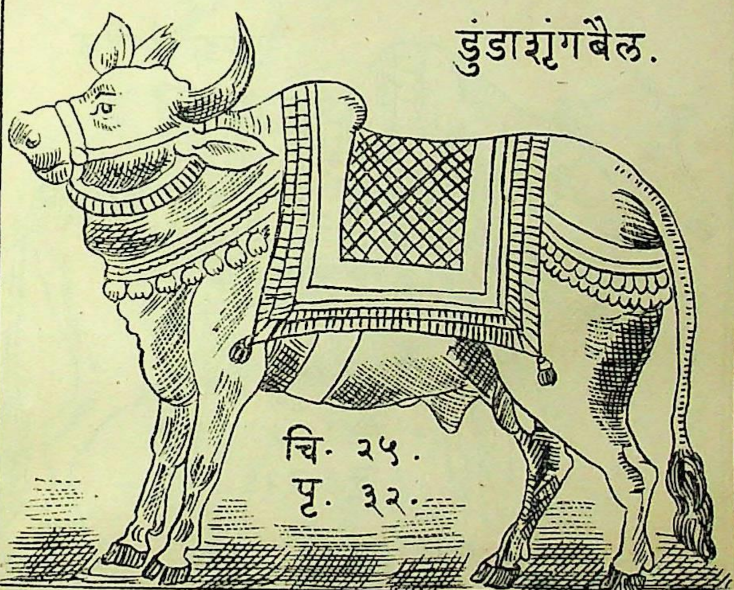

सरगापत्ताली बैल.
चि. २०
पृ. ३०

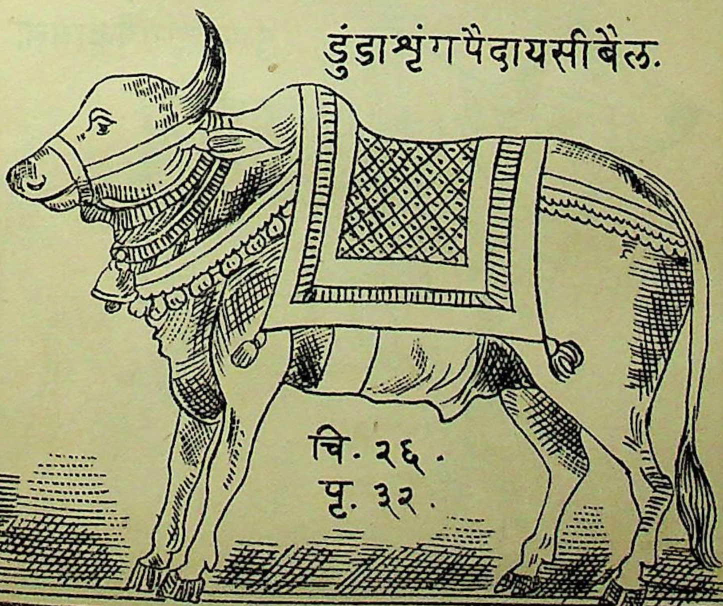

कैंचा शृंगबैल.
चि. २१.
पृ. ३१.


सरैया शृंगबैल.
चि. २२.
पृ. ३१.

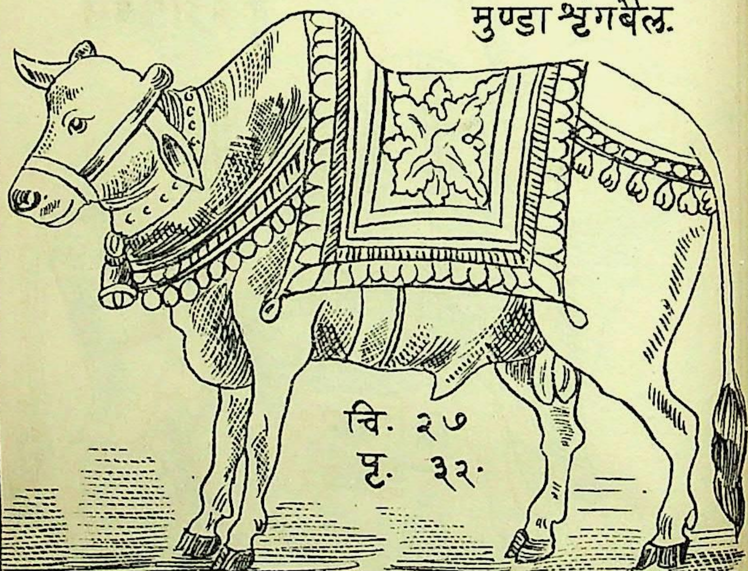

कोपिला शृंग बैल
चि. २३.
पृ. ३१.

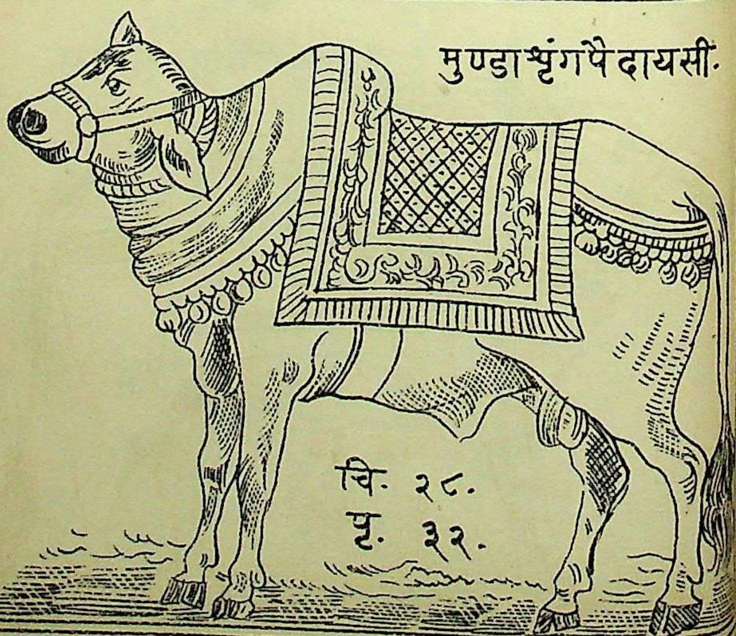

मैना शृंग बैल.
चि. २४.
पृ. ३१.

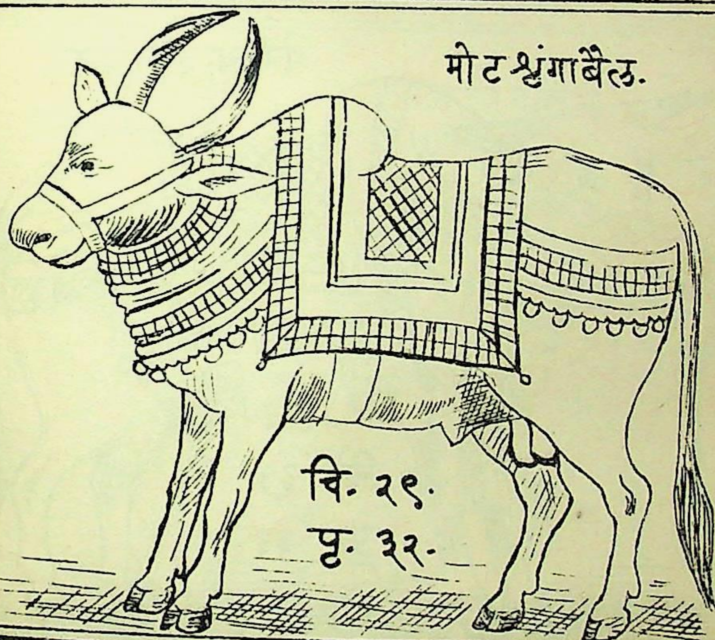

डुंडाशृंगबैल.
चि. २५.
पृ. ३२.

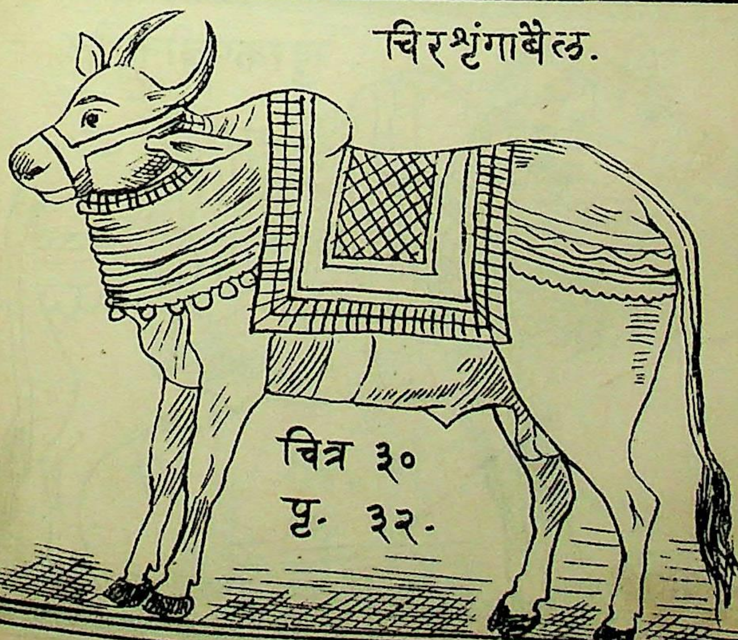

डुंडाशृंगपैदायसीबैल.
चि. २६.
पृ. ३२.

वृषभचित्र.

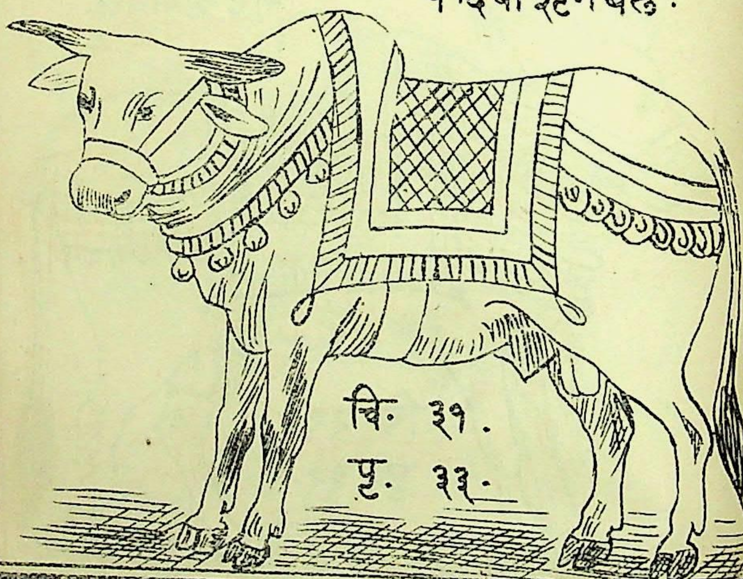


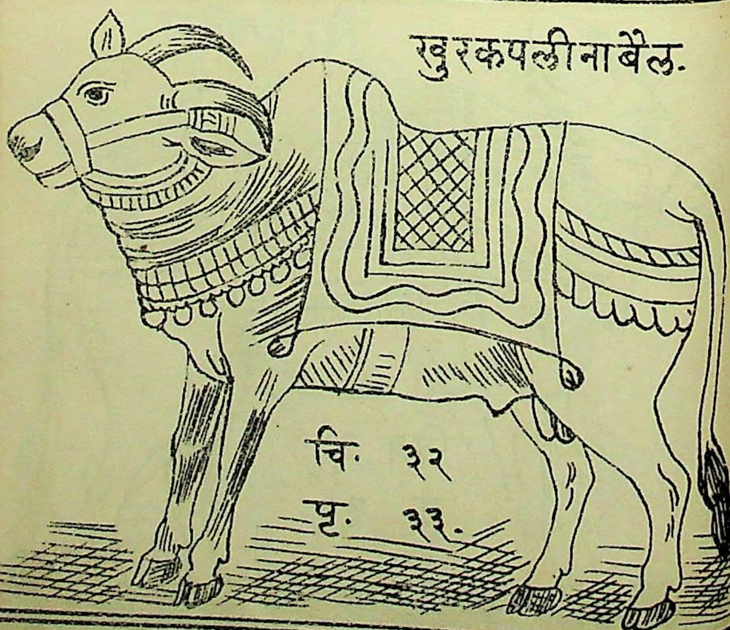


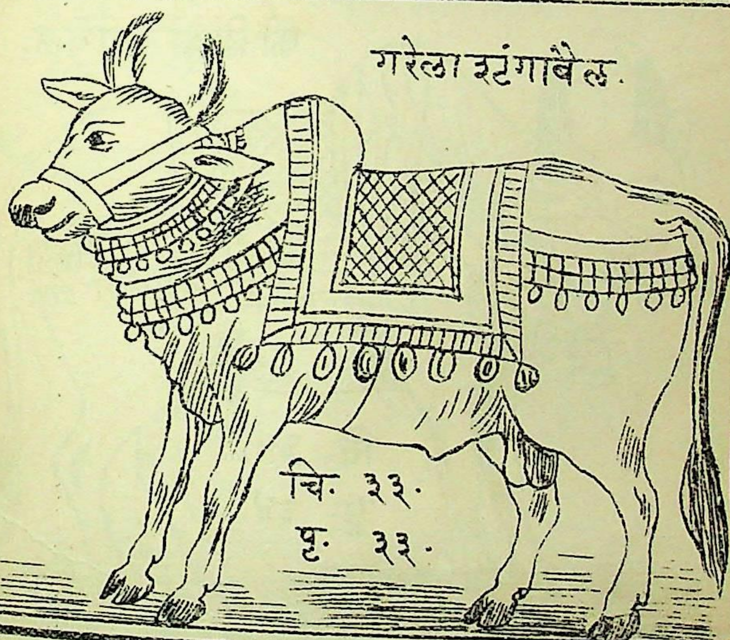

मोटशृंगाबैल.
चि. २९.
पृ. ३२.

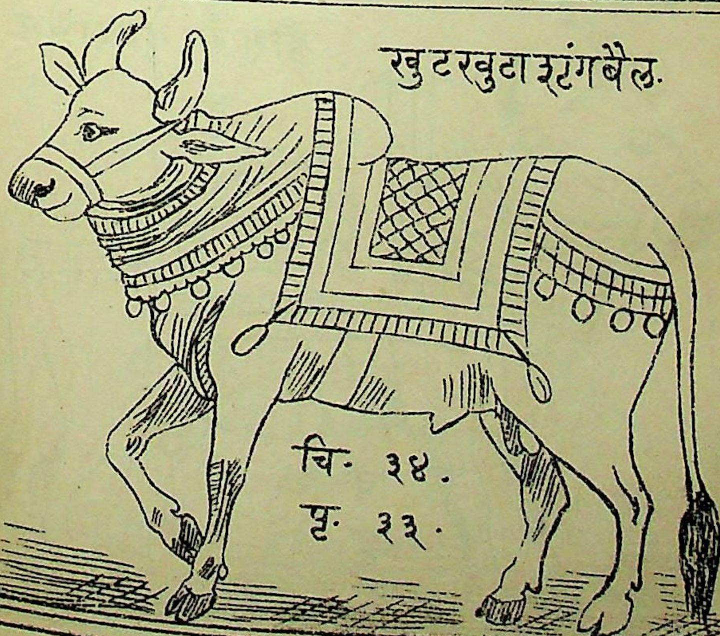

चिरशृंगाबैल.
चित्र ३०
पृ. ३२.

वृषभ चित्र.

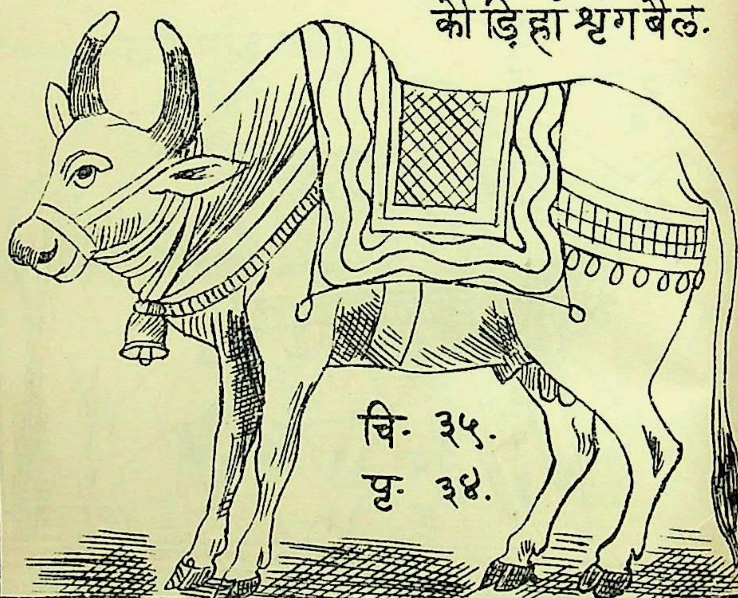


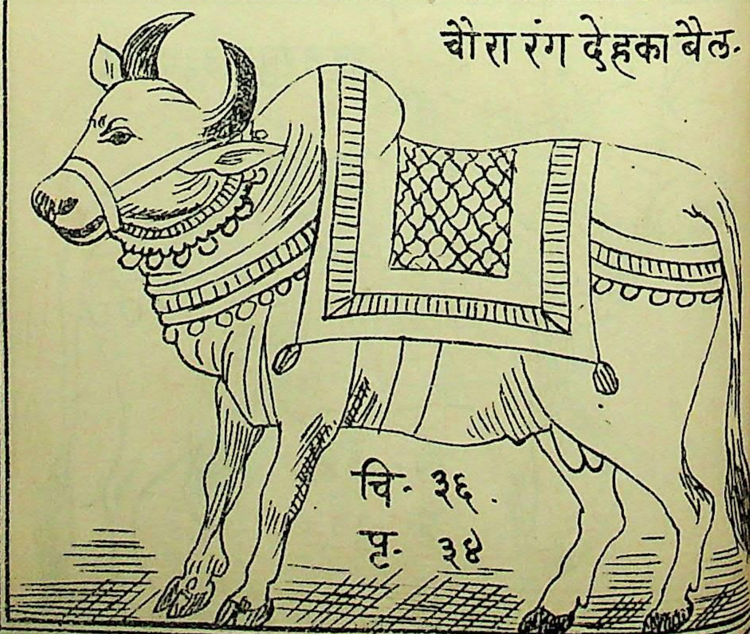


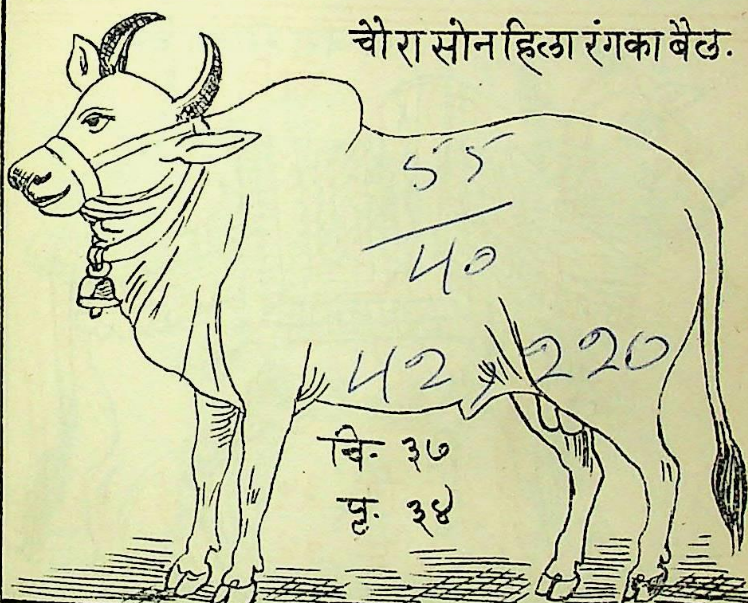

गरेला श्टंगाबैल.
चि. ३३.
पृ. ३३.

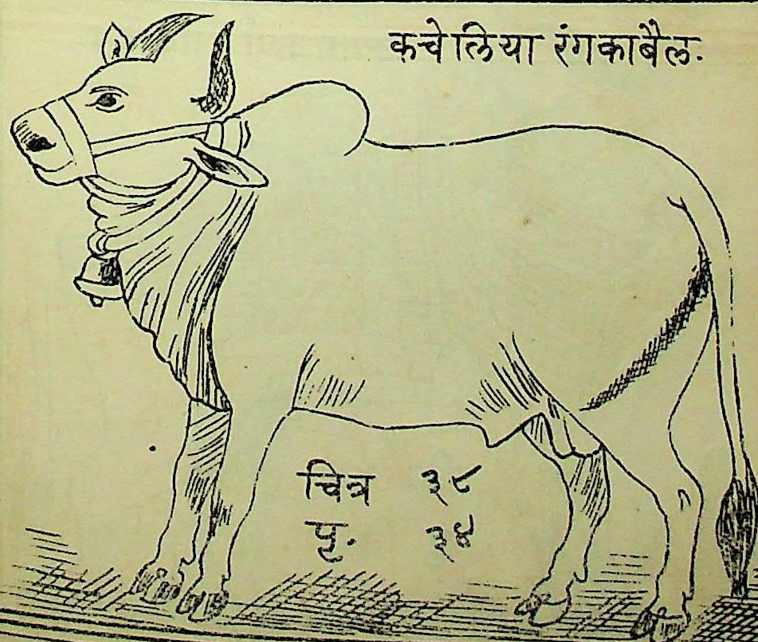

खुटखुटा श्टंगबैल.
चि. ३४.
पृ. ३३.

वृषभ चित्र.

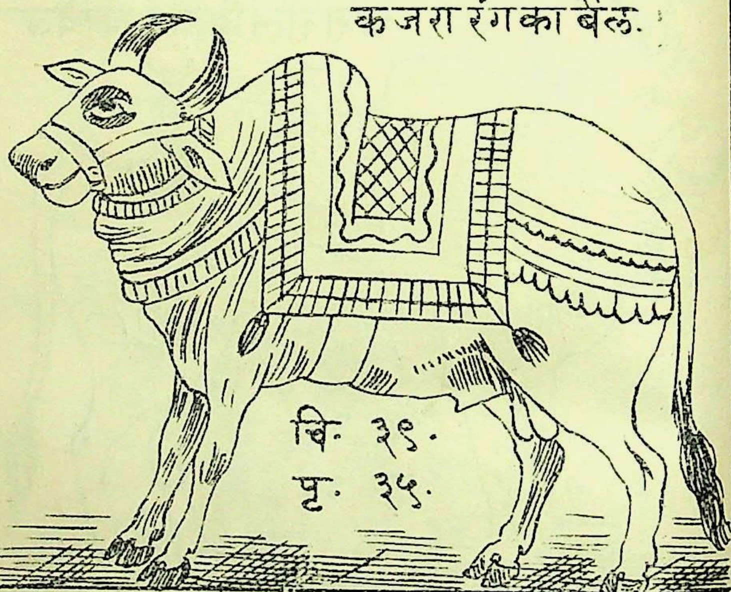


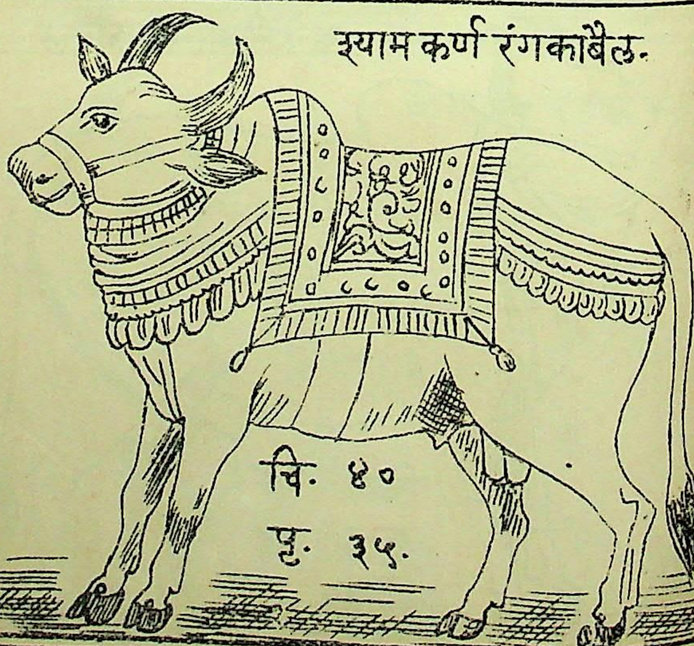


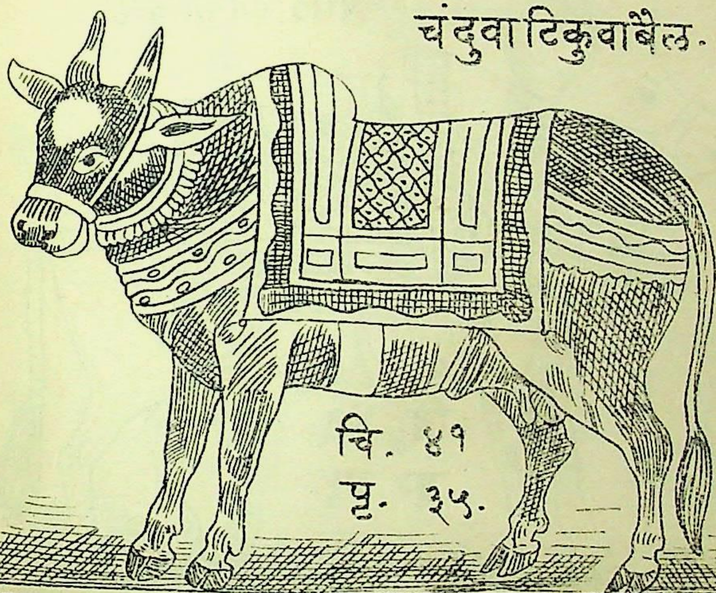

चौरा सोन हिला रंगका बैल.
चि. ३७
पृ. ३४

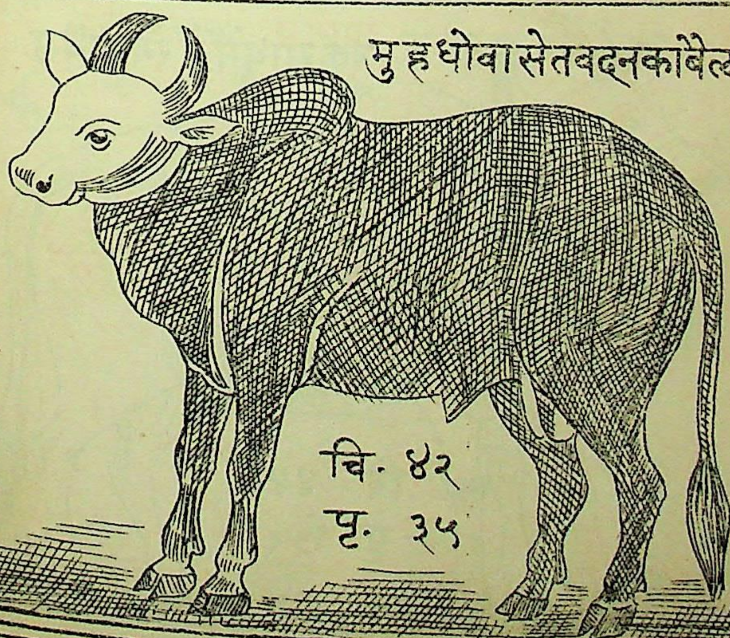

कचेलिया रंगकाबैल.
चित्र ३८
पृ. ३४

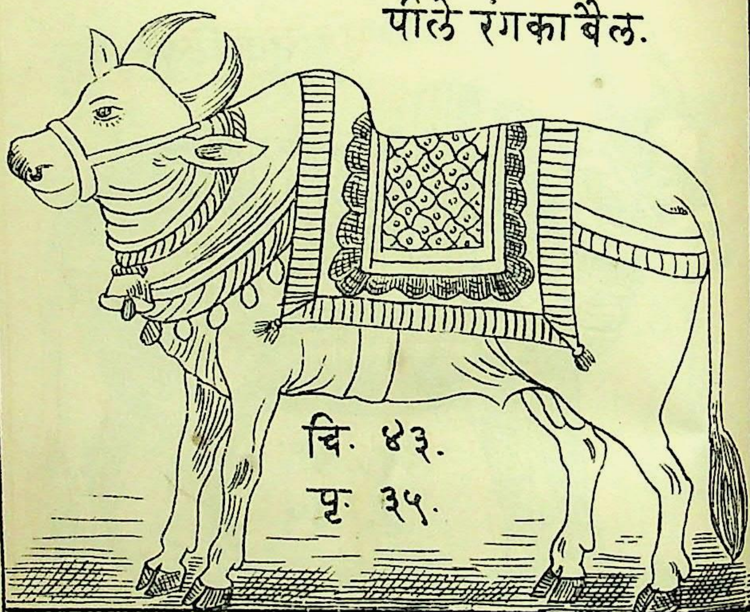
वृषभचित्र.

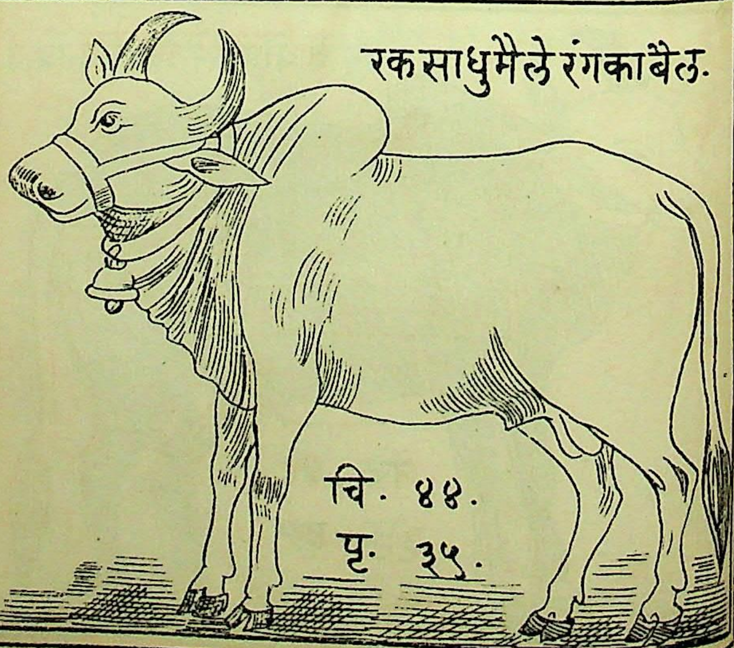


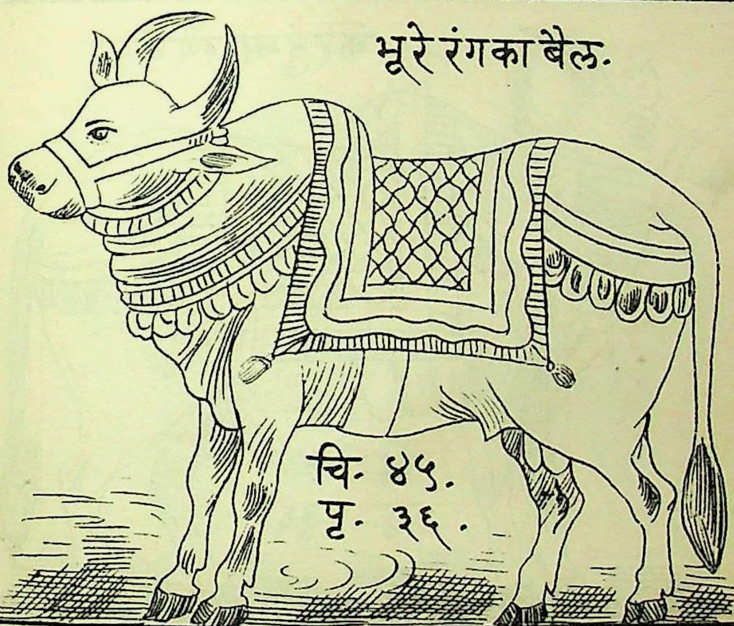


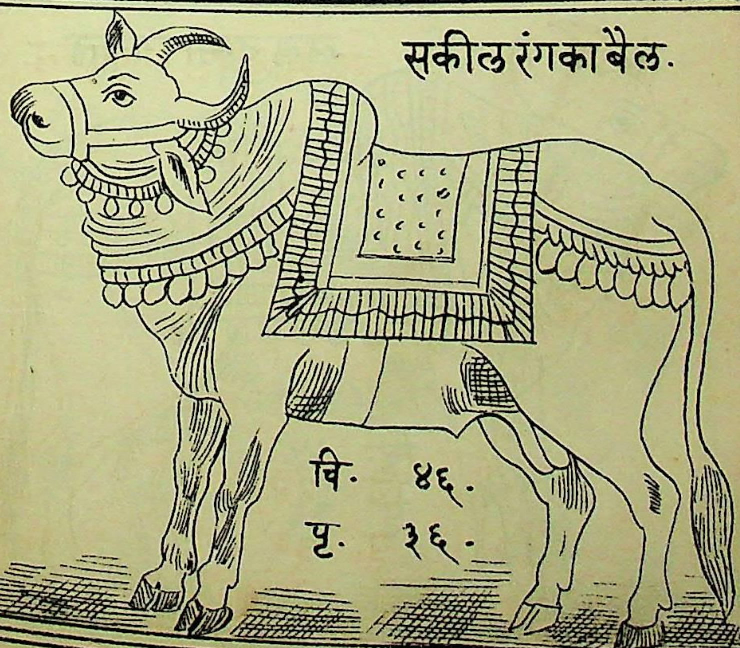

चंदुवा टिकुवा बैल.
चि. ४१
पृ. ३५.


मुहधोवा सेतबदनका बैल
चि. ४२
पृ. ३५

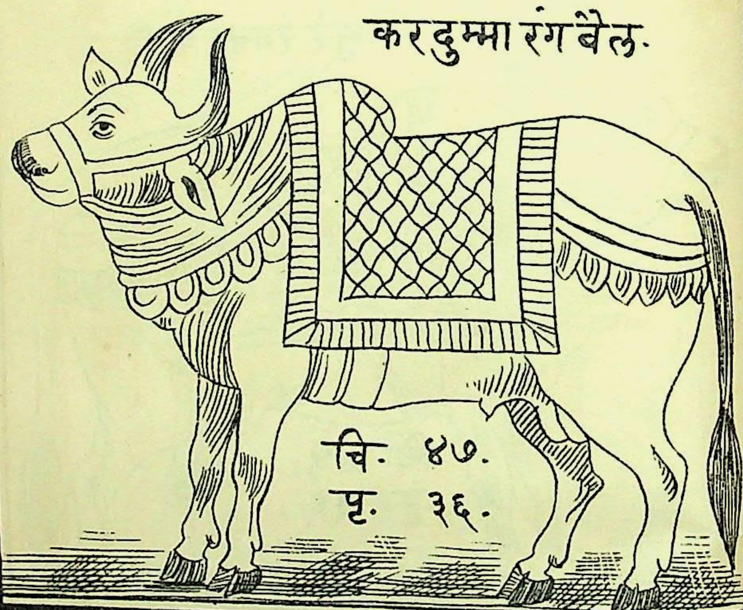

पीले रंगका बैल.
चि. ४३.
पृ. ३५.

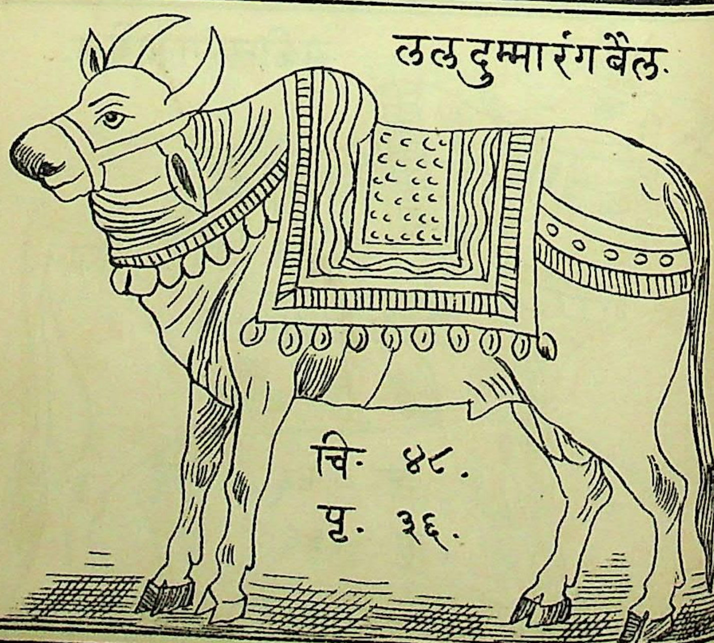

एकसाधुमैले रंगका बैल.
चि. ४४.
पृ. ३५.

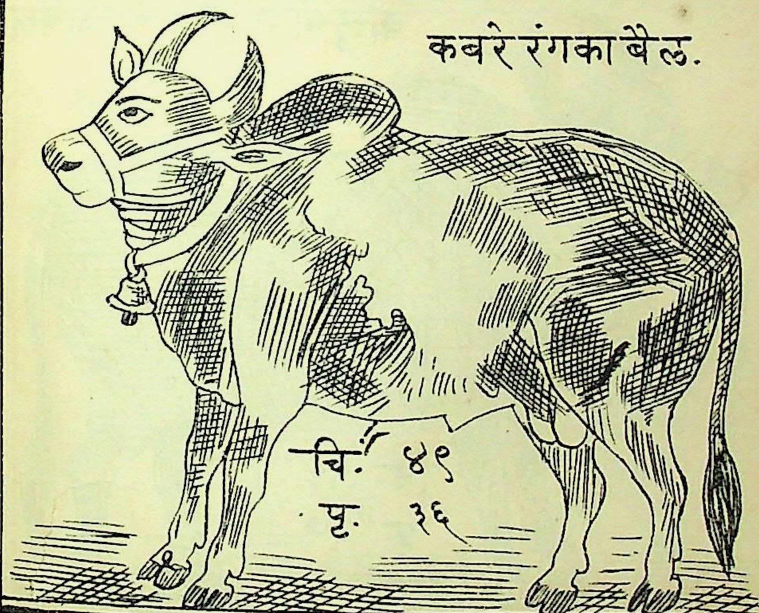

भूरे रंगका बैल.
चि. ४५.
पृ. ३६.

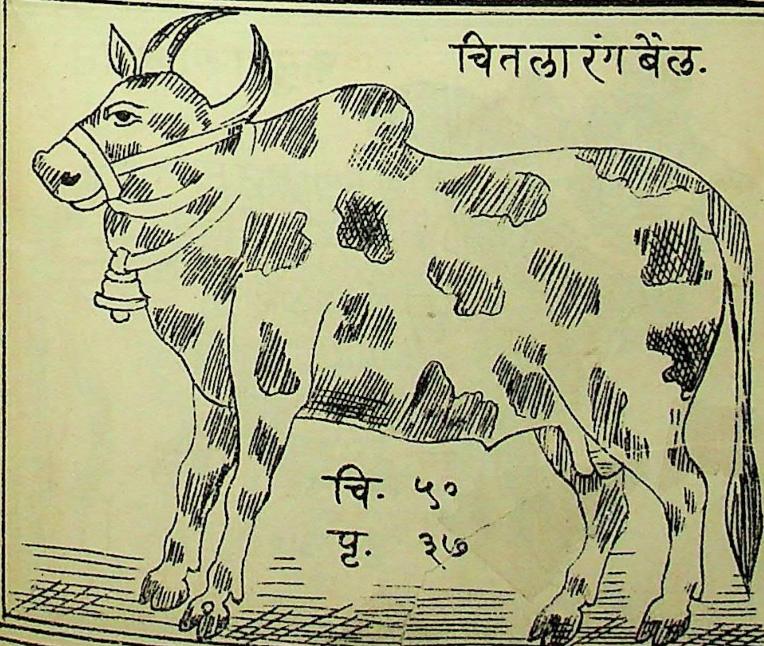

सकील रंगका बैल.
चि. ४६.
पृ. ३६.

वृषभ चित्र.

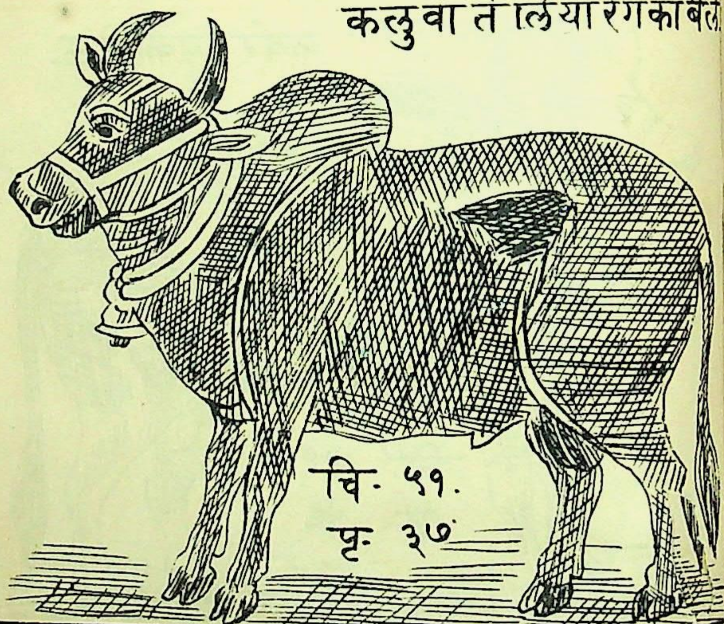


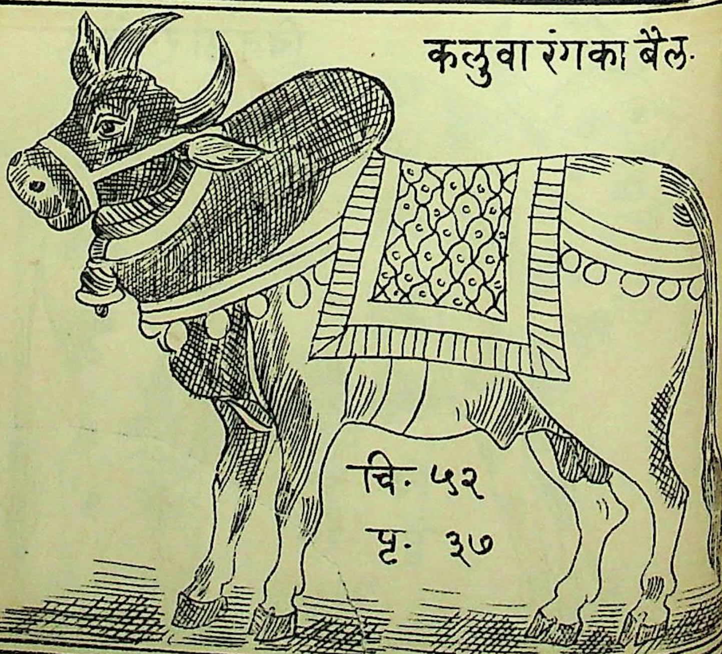


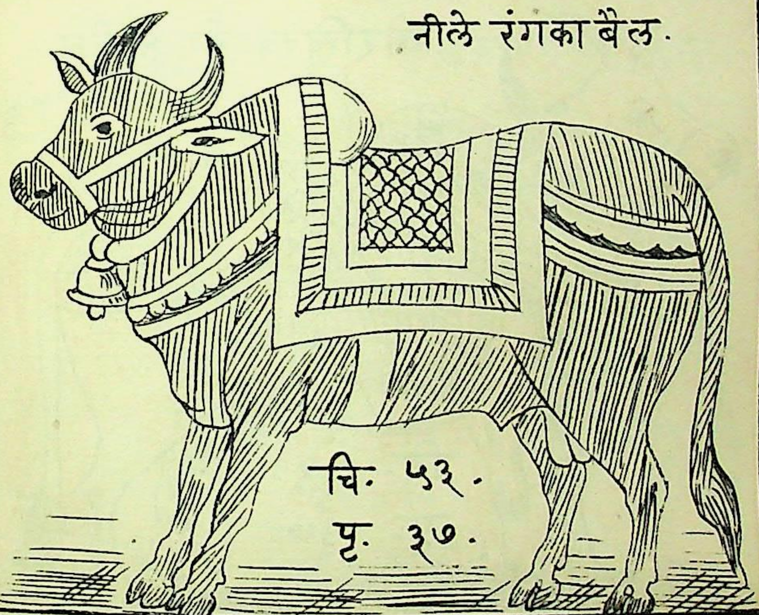

कबरे रंगका बैल.
चि॰ ४९
पृ॰ ३६

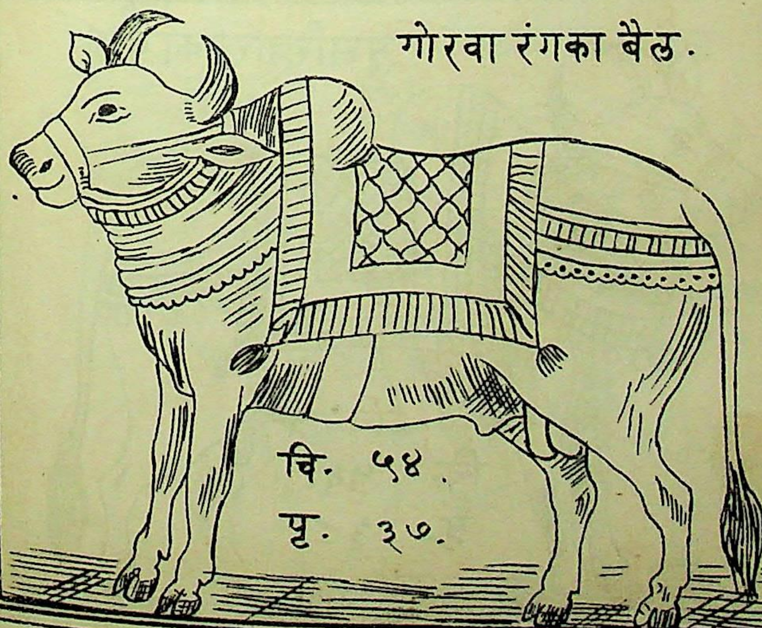

चितला रंग बैल.
चि॰ ५०
पृ॰ ३७

वृषभ चित्र.

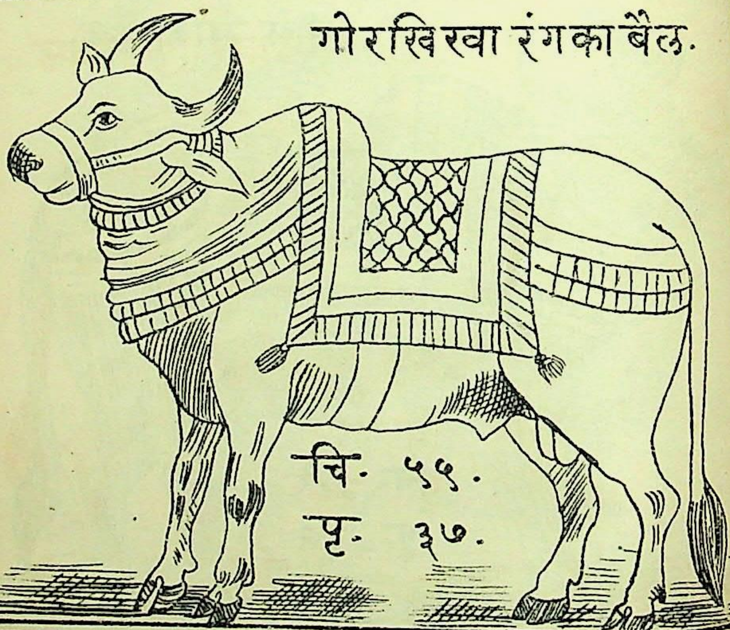


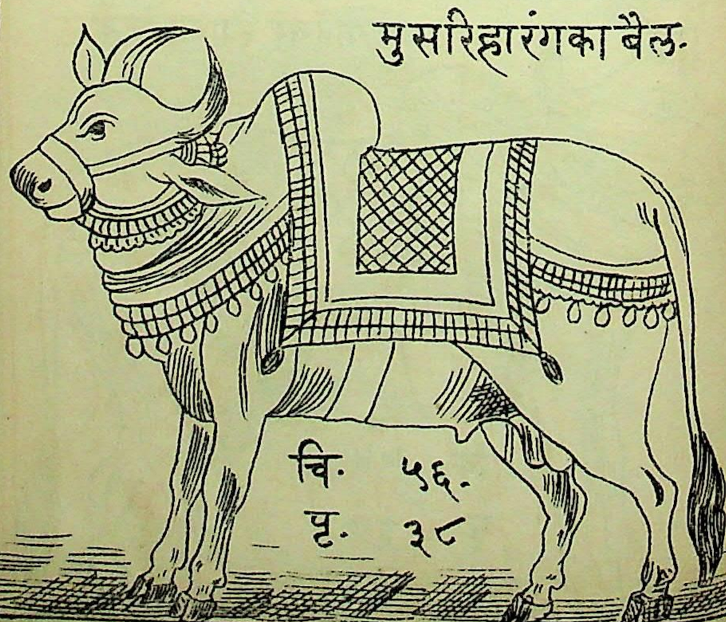


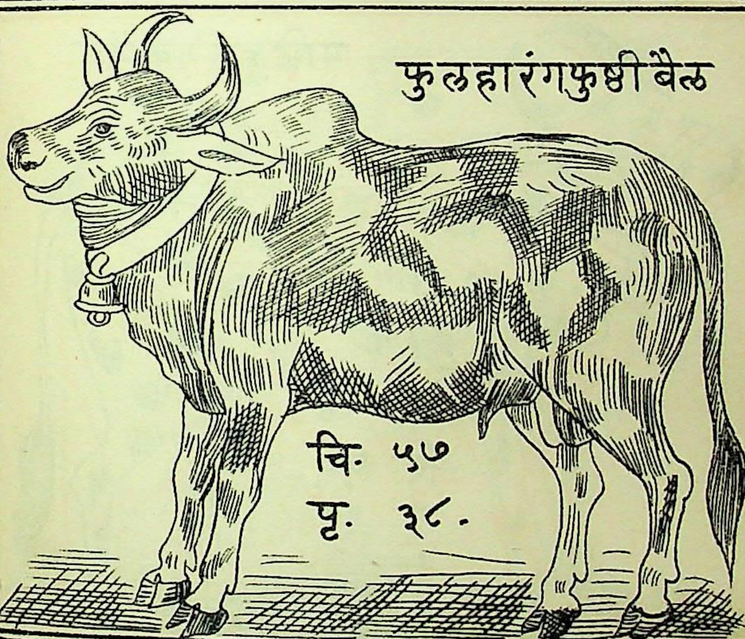

नीले रंगका बैल.
चि. ५३.
पृ. ३७.

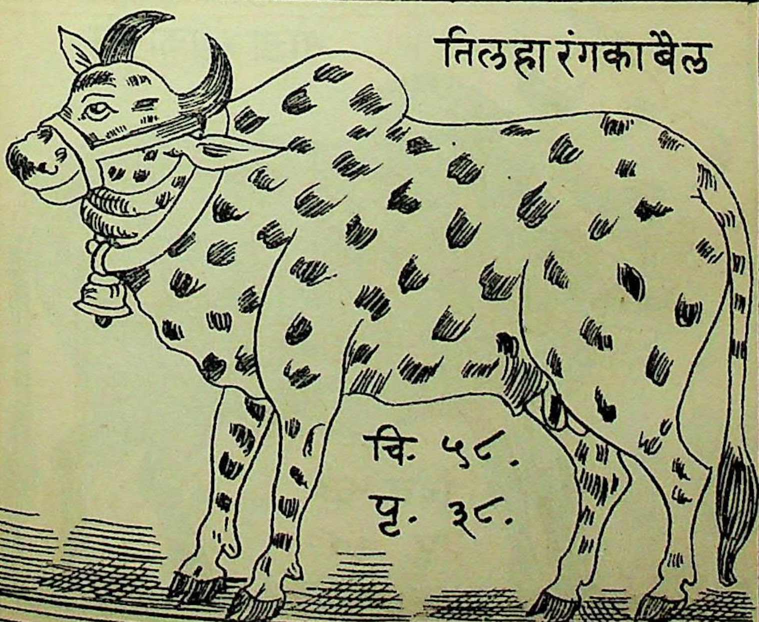

गोरवा रंगका बैल.
चि. ५४.
पृ. ३७.

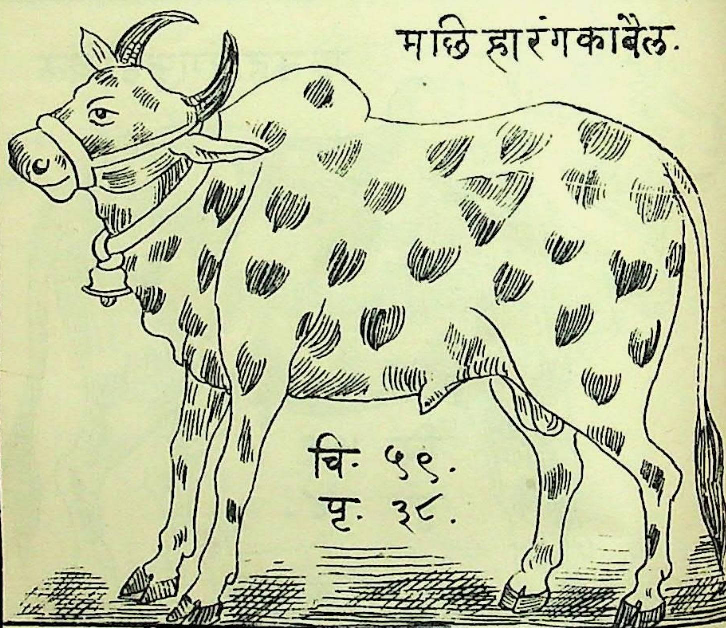
वृषभचित्र.



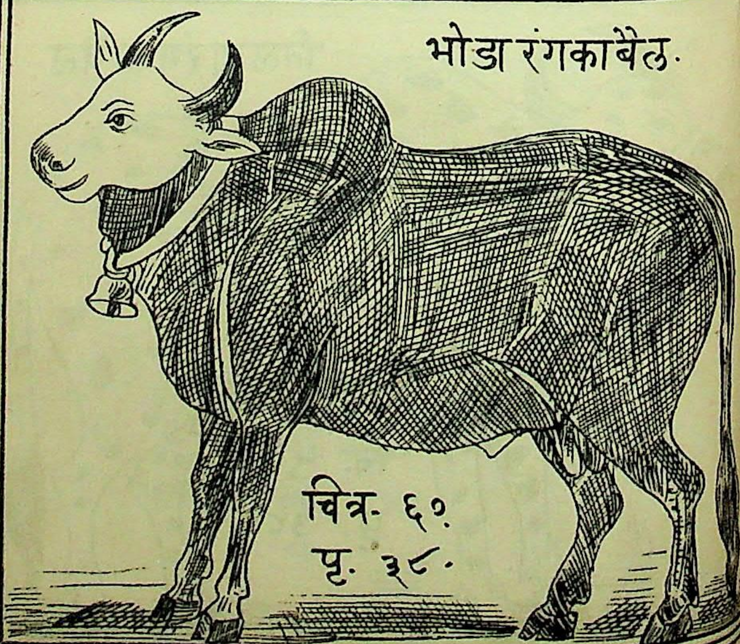



फुलह्या रंगफुष्ठी बैल
चि. ५७
पृ. ३८.

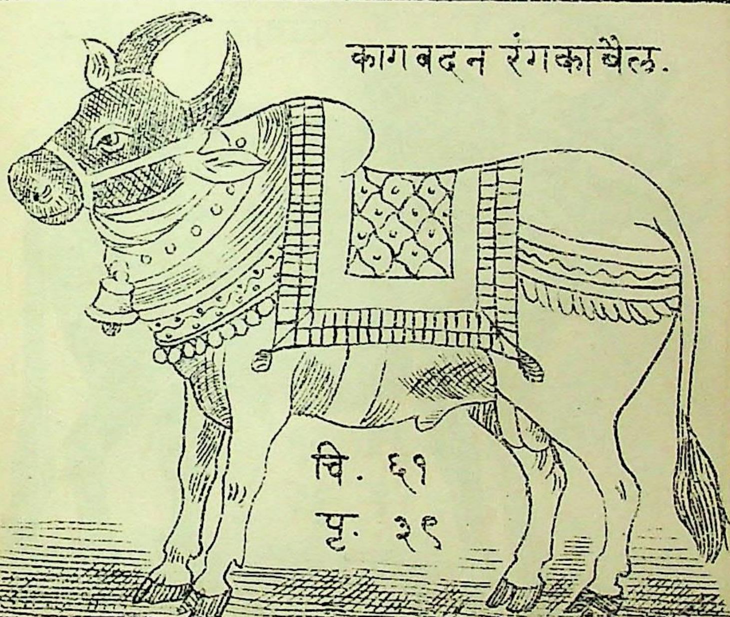

तिलह्या रंगका बैल
चि. ५८.
पृ. ३८.

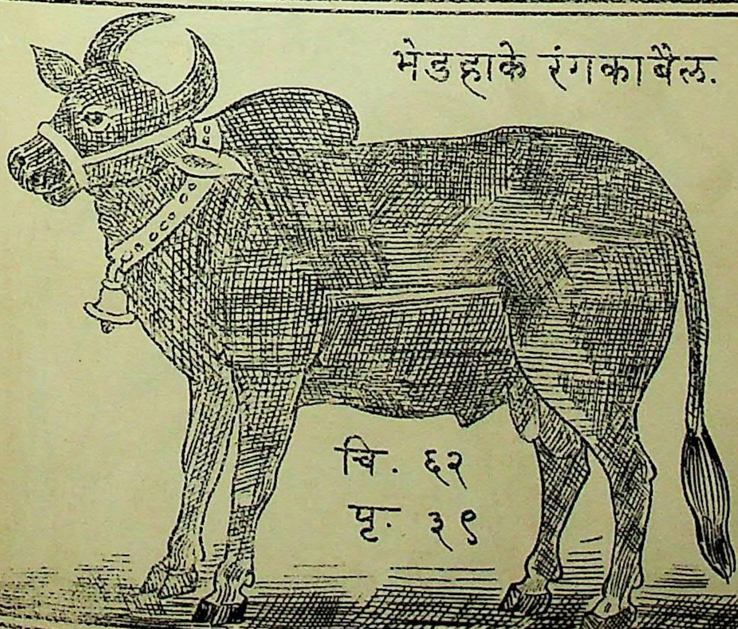


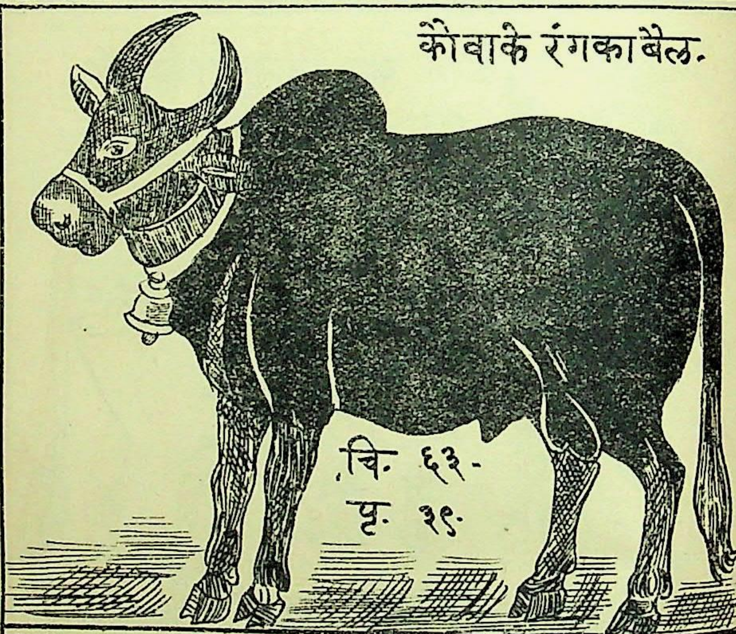
चि. ५९.
पृ. ३८.

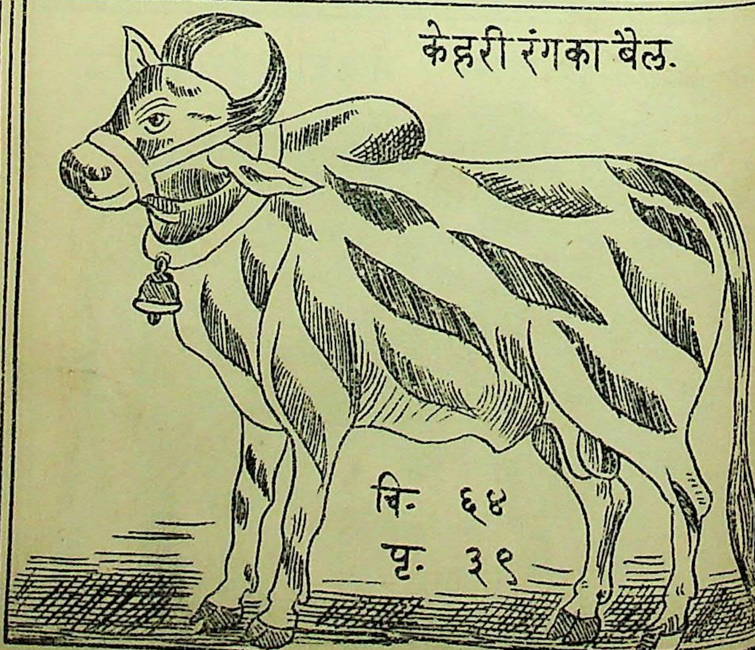


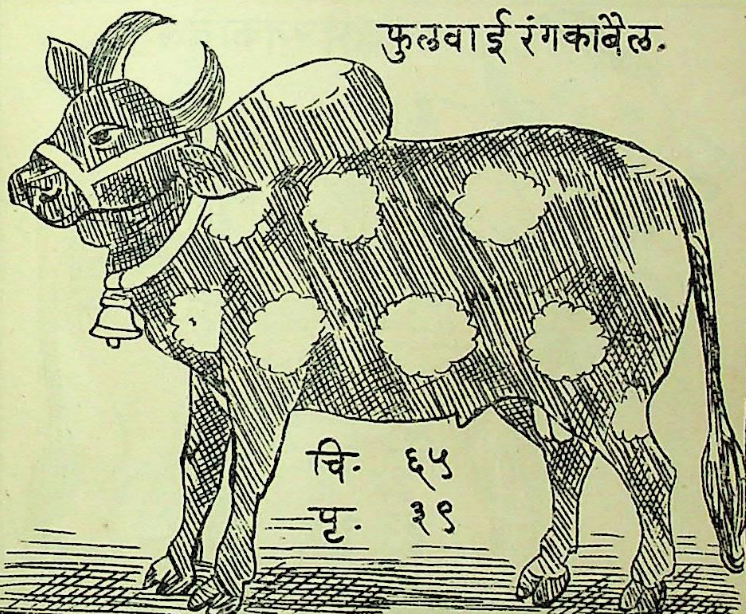
चित्र. ६०.
पृ. ३८.

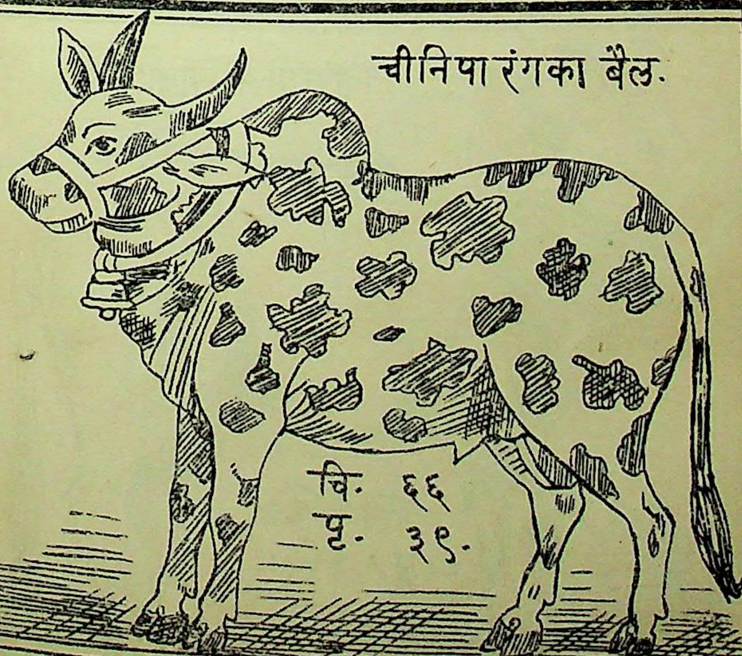

कागबदन रंगका बैल.
चि. ६१
पृ. २९


भेडहाके रंगका बैल.
चि. ६२
पृ. २९

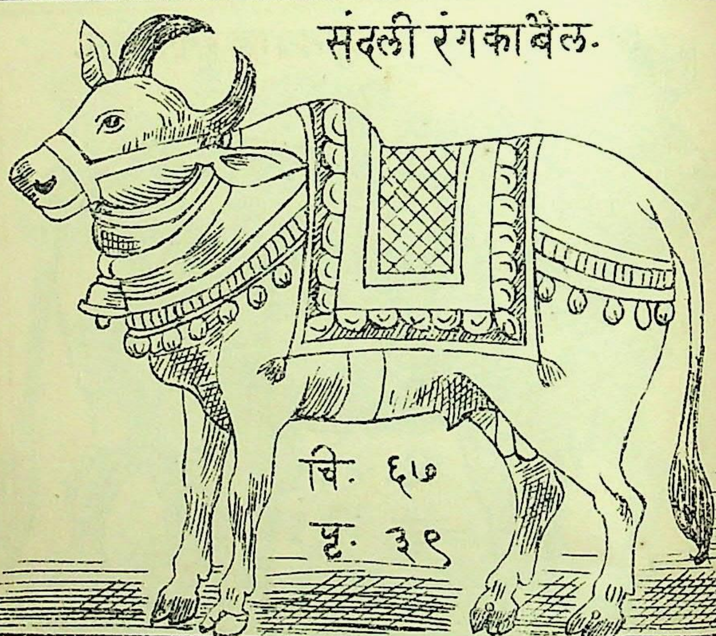

कौवाके रंगका बैल.
चि. ६३.
पृ. २९.

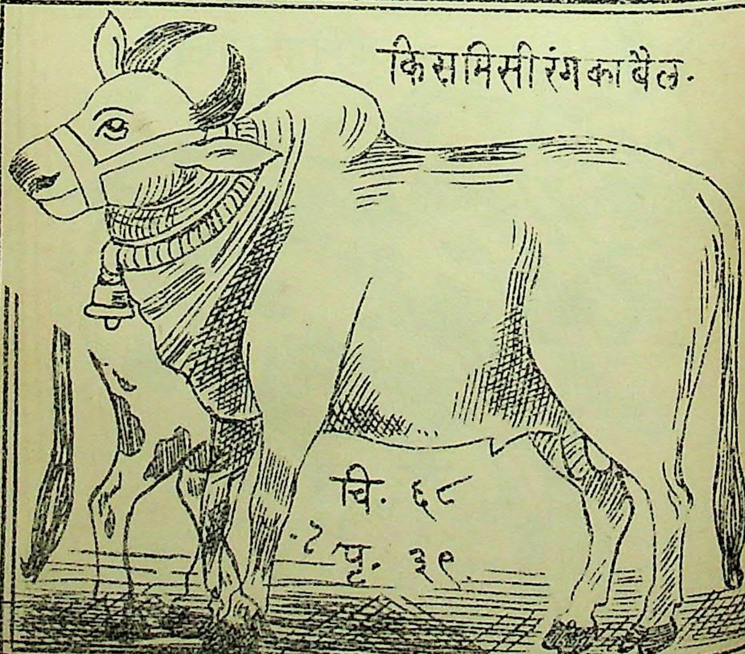

केह्नरी रंगका बैल.
चि. ६४
पृ. २९

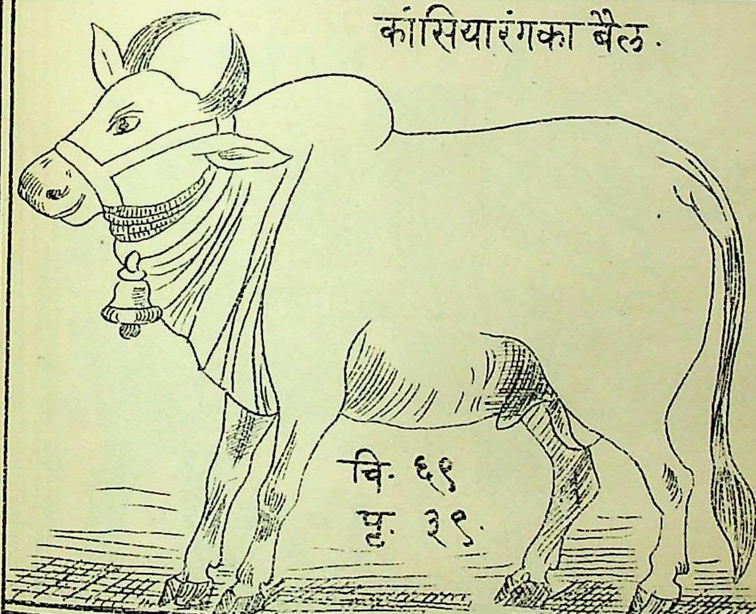

फुलवाई रंगका बैल.
चि॰ ६५
पृ॰ ३९

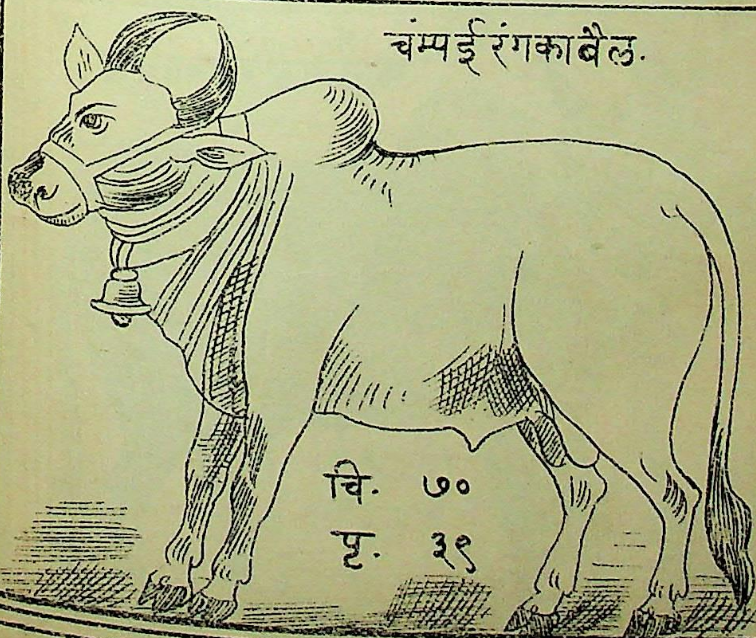

चीनिपा रंगका बैल.
चि॰ ६६
पृ॰ ३९.

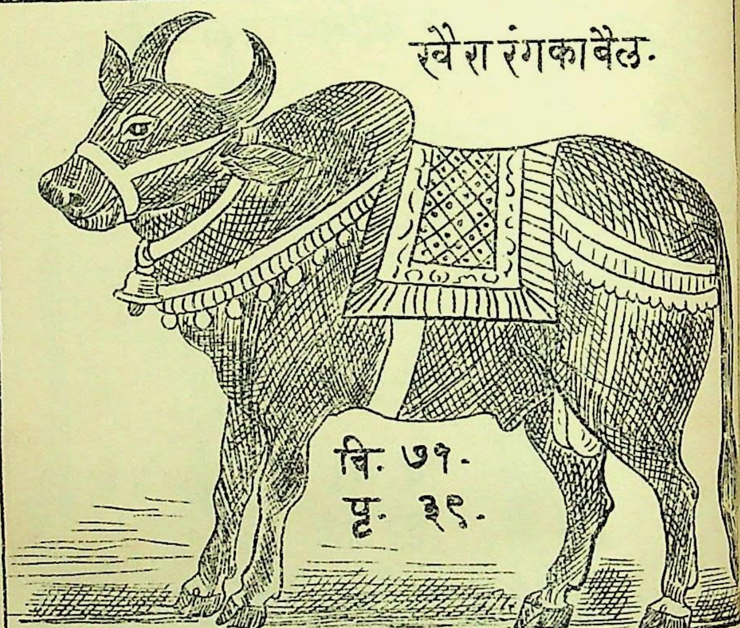
वृषभ चित्र.

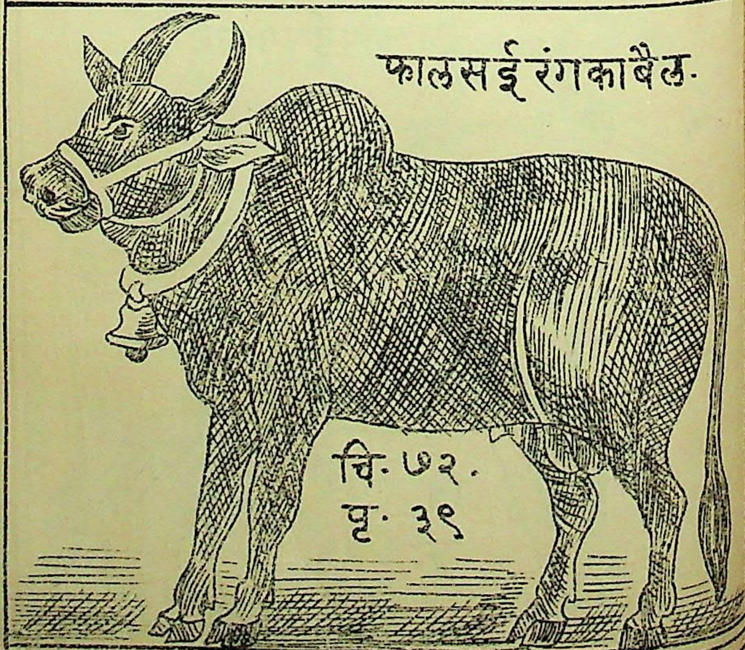


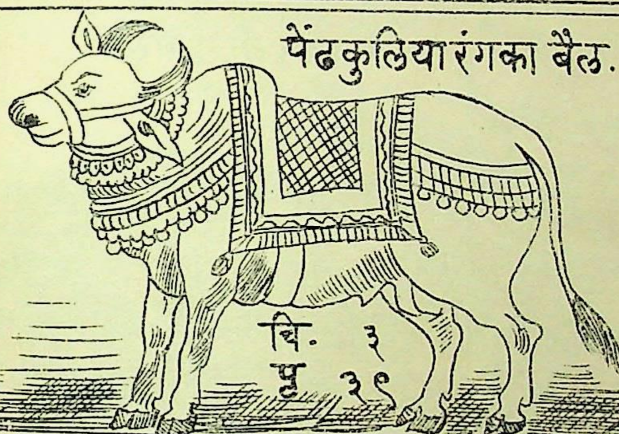


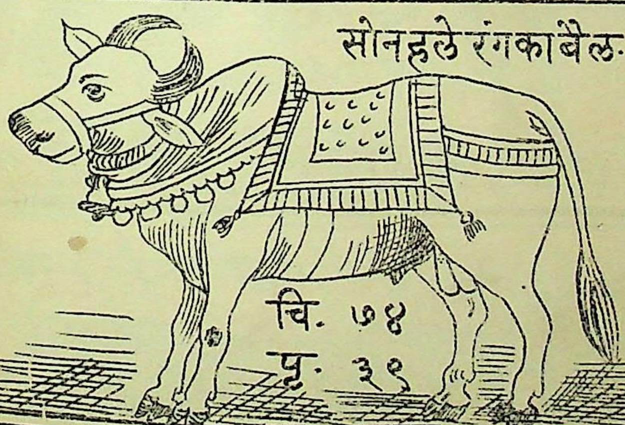

कांसियारंगका बैल.
चि. ६९
पृ. ३९.

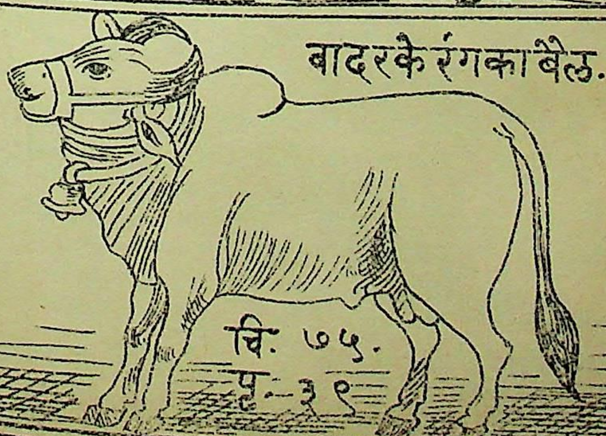

चंम्पई रंगका बैल.
चि. ७०
पृ. ३९

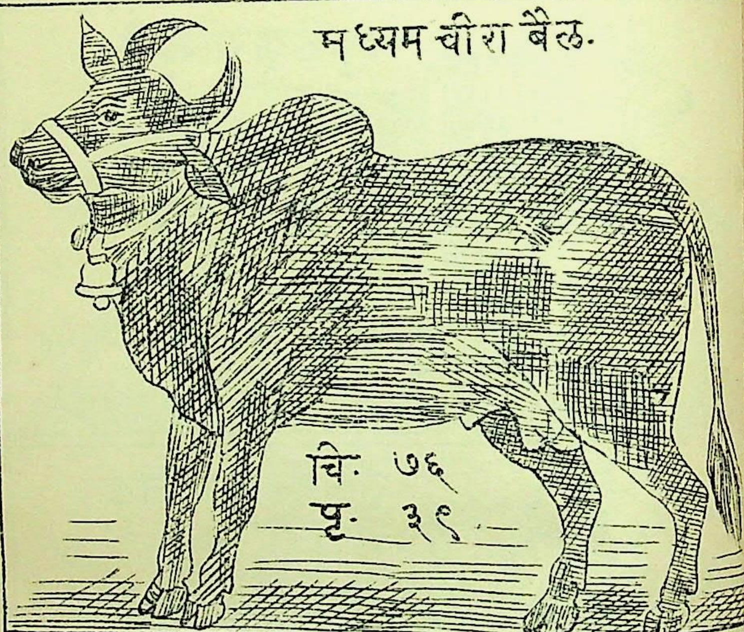

खैरा रंगका बैल.
चि. ७१.
पृ. ३९.

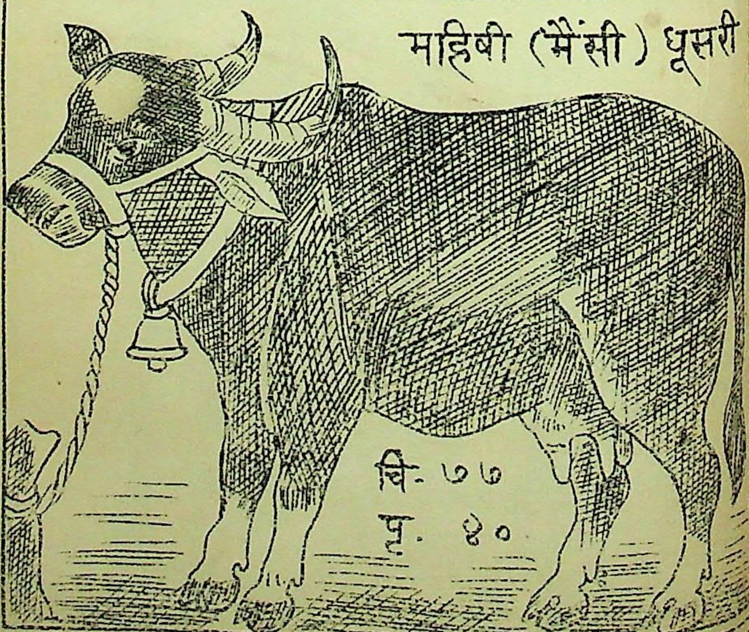

फालसई रंगका बैल.
चि. ७२.
पृ. ३९


पेंढकुलियारंगका बैल.
चि. ३
पृ. ३९


सोनहले रंगका बैल.
चि. ७४
पृ. ३९


बादरके रंगका बैल.
चि. ७५.
पृ. ३९





दोह
कवि
दोह

॥ श्रीः ॥

अथ

वृषकल्पद्रुमप्रारंभः ।



श्रीगणेशायनमः ।

दोहा–गणपतिगिरिजाईशअरु, विधिवंदौं करजोरि ।
विष्णुचरणकोध्यानधरि, भाषौं ग्रन्थ बहोरि ॥

कवित्त–सिद्धिकेसदनगजवदनविशालतन दरशाकियेते वेगिहरतकलेशको ॥ अरुणपरागकोलिलाटमें तिलकसो है बुद्धिके निधानरूपतेजज्योंदिनेशंको ॥ मंगलकरन भवहरनशरनगये उदित प्रभावजाको विदितहमेशको ॥ जेतेशुभकाजतामेंपूजिये प्रथमताहिऐसेजगवंदनसोंनंदनमेहशको॥

दोहा–वृषकल्पद्रुमग्रन्थको, नामकीनउच्चार ।
कछु निदानरुजकोकहौं, पशुसुखहेतुविचार ॥
औरदवाकछुजोसुनी, ग्रन्थनमें अवलोक ।
लिखिहौंआगेतेसबै, हरनपशुनको शोक ॥
वरणिशुभाशुभकछुकविधि, थोरोऔरविधान ।
बिगरो जो यामेंलखौ, सोसुधारुबुधवान ॥
संवतरसगुणग्रहशशी १९३६ पौषमासतिथितीज ।
ग्रन्थअरंभनकीनतब, वृषतनहितकोबीज ॥
अवधराजधानीजहाँ, शहरलखनऊजान ।
ताकेपश्चिमजानियो, सोरहकोशप्रमान ॥

जिलालिखौंउन्नावको, मियाँगंजके पास ।
आसीवनिकोपरगना, तियरिग्रामममेंवास ॥
तालुकदारकहावहीं, केशवसिंहअहीर ।
तिनसंग्रहकरिग्रन्थयह, हरनवृषभकीपीर ॥
कुण्डलिया—हिन्दुस्थानी फारसी, अँगरेजीमतऔर ।
तीनोकोसंग्रहाकियो, वृषपशुकोशिरमौर ॥
वृषपशुकोशिरमौरचिकित्सावरणिबखानौ ॥
दवाकरौतत्कालरोगको जो पहिचानौ ॥
कहैंकेशवपरसादजौननरबुद्धिसयानी ।
तिनको मतलखि लिख्यो ग्रंथयह हिन्दुस्तानी ॥

अथ पशुशालारचनाविधि ।

छन्दकुकुभा—शीतउष्णअरुवायुबचावै गृहकी रचना की
जामेंरोगनिकटनहिंआवैसोप्रकारलखिलीजै ॥
चारौ दिशादिवालअनूपमखिरकीबहुतरखावै ॥
शीतलमन्दसमीरवायुजहसुखपशुकोउपजावै ॥
ओस नीर आतपहि बचावै छाया पुष्टकरीजै ॥
एकझरोखाऊपरराखै तेहिदुर्गंधिहरीजै ॥
मलअरुमूत्रसाफबहुराखैतहाँ रोगनहिंआवै ॥
याविधिपशुकीरक्षाकीजैसकलसुःखउपजावै ॥
दोहा—ढारू भूमिबनाइये, जहां पशुनको स्थान ।
दुःखहरैबहुसुखबढै, जानौयहमतिवान ॥

अथ चरही की विधि ।

श्लोक—स्वामिहस्तप्रमाणेनदीर्घविस्तरसंयुतौ ॥

वसुभिश्चहरेद्भागंशेषांकेफलमादिशेत् ॥ १ ॥
पशुरोगः पशोर्नाशः पशुलाभः पशुक्षयः ॥
पशुरोगः पशोर्वृद्धिः पशुभेदोबहुप्रदः ॥ २ ॥

अर्थ।

दोहा–पशुकेचारालायको, चरहीनापविधान।
शुभअरुअशुभविचारिकै, रचनाकरौसुजान ॥
चौपाई–पशुमालिककेहाथनपाई। लंबाईचकलईमिलाई
आठभागदेजोबाढरिहै। भिन्नभिन्नफलताकेकहै ॥
एकबचैपशुहानिकरावै। दुइकेबचेनाशफलपावै ॥
तीनबचैपशुलाभसदाई। चारिबचेतेक्षयहोइजाई ॥
पाँचबचैपशुरोगबढावै। छः के बचे वृद्धिउपजावै ॥
सातबचैपशुभेदेजानौ। आठबचैंबहुवृद्धिबखानौ ॥

अथ पशुकोसर्वरोगसर्वारिष्टानिवारणमंत्र वा यंत्र।

अथमंत्रपरईका–अर्ज्जुनःफाल्गुनोजिष्णुःकिरीटिश्वेत्त वाहनः ॥ बीभत्सुर्विजयीकृष्णःसव्यसाचीधनंजयः ॥ ॐक्लीं श्रींकुंकार्त्तवीर्यार्जुनाय नमः ॥ ॐगोरक्ष ॥ ॐ गोरक्ष ॥ ॐगोरक्ष ॥

अथ यंत्रविधिः।

चौ०–एकपरईमाटीकीलावै। पेंदीमाधिमें छिद्र करावै ॥
कलमकरैदाडिमकीलकरी। मसिसेलिखिपरईकेभितरी ॥
मंत्रऔरश्लोकसमीता। रविदनशुभजानौतेहिमीता ॥

तेहिपरईकोधूपकरावै । अन्नदानकछु विप्र देवावै ॥
दरवाजेऊपरबँधवावै । गो वृष महिषको रोगहटावै ॥

अथ गोवृषक्रयविक्रयमुहूर्तचिंतामणिमत ।

दोहा–छिप्रअंत्य अरुकृत्तिका, इंद्रपुनर्वसुचंद्र ।
शतवसुक्रयविक्रयकहत, गाइनकोमुनिवृन्द ॥

अन्यमत दोहा ।

अन्यमत गोक्रय विक्रयमुहूर्त.			
ति.	वा.	नक्षत्र	
१	सू.	ह.	अ.
२	चं.	पु.	पुन,
३	बु.	रे.	कृ.
५	बृ.	ज्ये.	मृ.
६	शु.	श.	ध.
७	श.		
८			
९			
१०			
११			
१२			
१३			
१५			

रिक्ताअमातिथि अशुभ, अ
मंगलकोवार । जेनक्षत्रशुभ
तेकहौं । कृत्तिन कोनि
रधार । हस्तअश्विनी पुष्य
कहि; और रेवतीजानु
कृत्तिकाइन्द्रपुनर्वसू; मृगशि
रशतभिषमानु ॥ वासवमिति
शुभनखतए, क्रयविक्रयकहि
सोय । सदा अनंदितरहतहै
मनचीते फलहोय ॥ अथ
शुरक्षा ॥ घरमेंलायके चार
देन। औरदूसरमुहूर्त जेहिस्था
नमें राखनहोय तेहिका
प्रवेश वा वहाँते प्रथमयात्रा
छन्दघनाक्षरी ॥ मतमुहूर्तचिं

तामाणिका ॥ राशि शुभखगनकी अठवोंसदनशुद्धजो नयाकीयोनिओचरनखतगायेहैं। ऐसे सपयसदनमेंपशुनको राख्यो जिनदिनतिनहीअषेसुखपायेहैं ॥ रिक्तादृशआठै-मगलश्रवण ध्रुवचित्रामेंसदनतेजिनबाहरेपठायेहैं। पाये-सबदुःख तिनइनहींमेंराखेजिनातिननिजजीकोभूरिशोकउ-पजायेहैं ॥ १ ॥

पशुरक्षा सु. ल. २। ३ ४। ६। ७। ९ १२। अष्टमशुद्धनिजयोनी नक्षत्रमेंप्रथमघर लावैका			पशुका प्रथमपशु-स्थानमेंप्रवेश और वहासे प्रथमयात्रा बाजुबांधरेकामुहूर्त्त			पशुयात्राव्यवहार समुच्चयका मत।		
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र	ति.	वा.	नक्षत्र.
१			१		अ.भ.कृ.	१	सू.	पू.३
२	सू.	स्वा.	२	सू.	मृ.आ.पुन.	२	चं.	ज्ये.ध.
३	चं.		३			३		
५		पुन.	५	चं.	पु.श्ले.म.	५		मृ. रे.
६	बु.		६	बु.		६	बु.	
७	बृ	श्र.	७	बृ.	पू.रेह.स्वा.	७	बृ.	वि.अ.
१०	शु.	ध.	१०	शु.		१०	शु.	श्ले.
११			११		वि.ऽनु.ज्ये.	११	श.	
१२	श.		१२	श.		१२		
१३		श.	१३		मू. ध. श.	१३		
१५			१५		रेवती.	१५		

अथ वृषपशुयात्रा ।

(व्यवहारसमुच्चयग्रंथका मत)

दोहा—लिखोमहूरतवृषभपशु, यात्राकरैजोकोय ।
यकव्यवहारसमुच्चय, ग्रंथमतेकहिसोय ॥
रिक्ताआमाअष्टमी, अरुमंगलकेवार ।
इनमेंजोयात्राकरै, ताकोअशुभविचार ॥
मघाविशाखाअश्विनी, औरज्येष्ठाजानु ।
तीनौंपूर्वारेवती, चंद्रशर्ववसुमानु ॥
ताकोसदासुमंगल, सुखभोगैबहुसोय ।
जोयहिमारगमेंचलै, शोधिमुहूरतकोय ॥

अथ पशुपीडानिवारणमंत्र ।

ॐ भीमासुरिपशुबाधांहरहरपशूनवअवस्वाहा

इतिमंत्रः ॥ अथविधिः ।

दोहा—यहीमंत्रतेझारई, सर्वपशुनसबरोग ।
कागजपरमसिसेलिखै, तौनयंत्रकोयोग ॥
ऊगरसूतलपेटिकै, औरेकरोविधान ।
आहुतिघृतकीदीजियो, इकशतआठप्रमान ॥ १०८
हरिआहुतिमेंमंत्रपढि, सुवाछुवावैयंत्र ॥
फिरिपशुकेबांधौगरे, हरैरोगयहमंत्र ॥

अथ पशुवरदासि रक्षाकरण ।

ॐ भीमासुरिपशुबाधांहरहरपशूनवअवस्वाहा ॥
दोहा—जोनपशुनकोताकते, चारापानीहोय ।

तेरोगीकमहोतिहैं, जानिलेउसबकोय ॥
कमज्यादाजिनपशुनको, चारापानीदेय ।
ते बेराम रोगी रहैं, ग्रंथमतेकहिसोय ॥
स्वामीअपनेपशुनको, राखैख्यालकराय ॥
तासोंअच्छाजानियो, रोगनतेबाचिजाय ॥
जिनकेपशुबहुदुखितहैं, स्वामीको है पाप ।
अन्त नरकमो जातिहैं, उनहिंनकेरेशाप ॥

चौ०—जोजोरोगलिखेयहिमाहीं । ह्वातेबाजेहोतवृषाहीं ॥
पवनसमानरोगहैंजेते । बुरासमीरलागतेहोते ॥
औरकछुकरुजबाकीजेहैं । सकलपशुनदुखदेतमहाहैं ॥
स्वामीपशुकेरहैंभुलाने । चारापानीदेखिनजाने ॥
यहिमहँलक्षणबहुरोगनके । खुलेहवाललिखेहैंतिनके ॥
पशुनकेरिअच्छेनकीरीती । स्वामीदेखिराखिनितप्रीती ॥
यहिपरख्यालकरैजेनाहीं । रोगपशुनपरफैलिजोजाहीं ॥
पशुकेस्वामिनकोयहचाहिये । घासपयारजमाकरिधरिये ॥
पवनबुरोओसूखासाला । समयमेहबहुबाढताला ॥
आगेकामआइहैधरो । चाराकीगफलतमतिकरो ॥

दोहा—चाराजबनाहींमिलै, तबपशुछोडिचराय ।
नाकनकाराजोकछू, सोआगेचरिखाय ॥

चौपाई—जहरदारघासैबहुपाता । तोनखायरोगीह्वैजाता ।
घटेतलावघासबहुजामैं । शरदप्रकीर्तिहोतहैतामैं ॥
यहिकेखायेरोगबढावै । पशुकोबनमेंनहींचरावै

दोहा—मतलबतेज्यादाचहो, चाराजमाकराय।
जेहिमापशुघरकेसकल, अच्छाचाराखाय॥
चौ०—छाहींथानबँधेरहेंजिनके। बीमारीतेबाचेहैंतिनके॥
वर्षाऔरधूपतेजानो। शीतलनिशिकोपवनबखानो॥
इनतेबचैनीकसोकहियो। याप्रकारखरदासिकरैयो॥
बरपैमेघभीजिदुखपावै। घासदुपहरीतनुदहकावै॥
शीरोपवनरातिकोपाला। मारेजाडेनभयेबिहाला॥
ओसरातिकीतनुमेंलागी। इनसबतेदुखहोयअभागी॥
औरएकविधिरोगबढतहैं। मैलाबुरानीरपीवतहैं॥
बहुतसाफपानीकोदीजै। सुखीरहैतनुवृद्धिकरीजै॥
वृषकल्पद्रुमरीतिजोकरिहै। ताकोभलसदाईगहिहै॥
वृषकोताकुकरोदिनराती। सुखपावैवहसोबहुभाँती॥
सुनौखुराकएकवृषकेरी। थोरेदामनमिलैघनेरी॥
औरबातएककहौंसुनाई। गोवृषतेहैलाभसदाई॥
वृषभजोतिमेहनतिबहुकरे। गाईदूधबच्चाअनुसरे॥
दोहा—अपनीजौनखुराकते, लाभकरैअधिकार।
छाडिदूबरोदेतिहैं, स्वामीपशुबीमार॥
ग्रामनगरपुरलघुबडे, सकलबजारबखान।
थोरेदामनमोंमिलै, दवाजानुबुधवान॥
लिखिहौंयाहीग्रंथमें, सकलदवापरमान।
पक्कीतौलतुलाइये, याकोयहीविधान॥
अथ एक हलपर कईवृषभ शुभाशुभचाहिये॥

पाराशरमतेनोक्तम् ।

श्लोक-हलमष्टगवंधर्म्यंषड्गवंमध्यमंस्मृतम् ॥
चतुर्गवंनृशंसानांद्विगवंवृषघातिनः ॥ १ ॥

दोहा-एकैहलपरराखिये, कइवृषमुनौप्रवीन ।
उत्तममध्यमनीचके, लक्षणकहौंनवीन ।

चौ०-उत्तमजेहिकिसानकोभाखै। आठवृषभइकहलपरराखै॥
षट्वृषमध्यमसोपहिचानौ । चारिउक्योयाहीविधिजानौ॥
अतिनिकृष्टपशुघातीजोई । दुयवृषभेहलजोतेसोई ॥

अथ गोवृषशुभाशुभलक्षण ॥ (देखोचित्र नं० १)

वाराहमिहिरकृतबृहत्संहिताकामत ॥ छन्दकुकुभा ॥
वाराहीकृतबृहत्संहिताज्योतिषमतहैजोई ।
ताकेअर्थलिखौंभाषामेंसमुझैंनरसबकोई ॥
गोवृषलक्षणकछुकशुभाशुभप्यारेकहौंबखानी ॥
यह विचारिकैजोकोइपालैताकीहोइनहानी ।
धेनुदोषकोनहींविचारामुनिनकछुकालिखिराखा ।
गोनिंदासुखतेमतिभाषैमानुषतनुमुनिराखा ॥

श्लोक-पराशरःप्राहबृहद्रथायगोलक्षणंतत्क्रियतेततोयम् ॥
मयासमासःशुभलक्षणास्ताःसर्वास्तथाप्यागमतो
भिधास्ये ॥ १ ॥

अर्थ ।

दोहा-पाराशरमुनिजोकह्यो, अन्यमुनिनसोंभाखि ॥
ताहीकोसंक्षेपयह, गोवृषलक्षणराखि ॥

चौ०–गौवैंशुभलक्षणकीखानी । शास्त्ररीतिशुभअशुभ बखानी ।

अथ गोनेत्रअशुभलक्षण ।

श्लोक–अस्राविलरूक्षाक्षामूषकनयनाश्चनशुभदागावः ।
प्रचलच्चिपिटविषाणकरटाःखरसदृशावरणाश्च ॥ २

अर्थ ।

चौ०–आँसूढरगऊजोजानौ । अरुमलीनआँखैंपहिचानौ ।
कछुकरुखाईनेत्रनहोई । मूषकसमदृगजानौजोई ॥
लक्षणइनमेंएकौदेखै । महादोषताको अवरेखै ॥
याकोकछुसंदेहनकीजै । अपनेसुखतेनाहिंभनीजै ॥

अथ अशुभशृङ्गलक्षण ।

दोहा–हलनाचपटाशृङ्गजो, सकलअशुभकी खानि ।
ताहीकोपहिचानियो, मुनिमतकह्योबखानि ॥

अथ गोरंग अशुभ ।

दोहा–अरुणवरुणगोगातसब, गुंजाकेसमहोय ।
पाराशरमुनिकेमते, अशुभरंगहैसोय ॥
जोनगऊकोदेखिये, गर्दभरङ्गसमान ।
ताकेलक्षणअशुभहैं, मुनिमतकह्योबखान ॥

अथ शुभदंतलक्षण ।

श्लोक–दशसप्तचतुर्दंत्यःप्रलंबमुण्डाननाविनतपृष्ठाः ॥
ह्रस्वस्थूलग्रीवायवमध्यादारितखुराश्च ॥ ३ ॥

अर्थ ।

दोहा–मुखमैंदेखौदशनजो, दशगनतीमेंहोय ।

ताकेलक्षणअशुभहैं, जानिलेवसबकोय ॥
सातदशनजोदेखिये, कीतौचारिनिहारि ।
याहूलक्षणअशुभहैं; मुनिमतकह्योविचारि ॥

अथ शीश वा मुखलक्षण ।

दोहा–लंबेमुंडकिगाइजो, कीलंबामुखहोय ।
औरपीठिवालीलखौ, अशुभजानियोसोय ॥

अथ ग्रीवालक्षण ।

दोहा–ठमकामोटीघींचलखि, जवाकारजोहोय ।
पाराशरमुनिअशुभकहि, जानिलेवसबकोय ॥

अथ खुरलक्षण ।

दोहा–फाटेखुरकीगाइजो, सदारहैखुरफाट ।
पाराशरमुनिकहतहैं, लेननजायोहाट ॥

अथ अंगलक्षण ।

श्लोक–श्यावातिदीर्घाजिह्वागुल्फैरतितनुभिरति बृहद्भिर्वा ॥
अतिककुदाःकृशदेहानेष्टाहीनाधिकांग्यश्च॥ ४ ॥

अथ जिह्वालक्षण ।

दोहा–लोहियाँरंगकीजीभहै,बहुलंबीजाहोय ।
अशुभहोतमुनिकेमते, जो पहिचानैकोय ॥

अथ बदखुरिनकेलक्षण ।

दोहा–जेहिगाईकीबदखुरी, अतिलंबीजोहोय ।
कविहुछोटीदेखिये, महादोषहैंसोय ॥

अथ दुबरईवाठाठिकेलक्षण ।

दोहा—जौनगऊतनुदूबरी, ठाठिकिभारीहोय ।
याहूदोषनमेंगन्यो, सकलअलक्षणसोय ॥

अथ अधिक वा हीनलक्षण ।

दोहा—जेहिगाईकेदेहमें, कोइअंगजोहीन ।
कीतौकोई अधिकलखि, महादोषसंगीन ॥

अथ वृषशुभाशुभलक्षण । (देखोचित्र नं० २)

श्लोक—वृषभोप्येवंस्थूलातिलंबवृषणः शिराततः ॥
क्रोडास्थूलशिराचितगण्डास्त्रिस्थानंमेहतेपश्च ॥ ५

अथ अंडकोशलक्षण ।

दोहा—अंडकोशजेहिवृषभके, अतिमोटेजोंहोय ॥
अरुलंबेबहु देखिये, महादोषसोहोय ॥

नसैंवारगोकेलक्षण ।

दोहा—जौनवृषभकेकोखिमें, बहुतनसैंदिखराय ।
तेहिराखेघरअशुभहै, सबधनदेइबहाय ॥
चौहारिदूनोमेंलखो, बहुतनसैंजोहोय ।
अतिबहुमोटीदेखिये, महाअशुभफलसोय ॥

मूत्रलक्षण ।

दोहा—मूतेवृषतबदेखिये, तीनिजगहदेइमूति ।
बडोदोषहैअशुभअति, यासोंकरोनप्रीति ॥
श्लोक-मार्जाराक्षःकपिलःकरटोवानशुभदोद्विजस्येष्टः ॥
कृष्णोष्ठतालुजिह्वःश्वसनोयूथस्यघातकरः ॥ ६

अर्थ-अथ नेत्रलक्षण ।

दोहा-नेत्रहोंयमार्जारसम, कपिलरंगवृषजानि ।
अथवागुंजाकीतरह, ब्राह्मणकोशुभदानि ॥
औरजातिकोअशुभहै, याहिनलीज्योकोय ।
जोघरराखैअसवृषभ, सबसुखडारैखोय ॥

श्यामतारू जीभ ओंठ लक्षण ।

दोहा-तारूओंठअरुजीभलखि, श्यामवरणजोहोय ।
महाअशुभवृषजानियो, ताहिनराखोकोय ॥

अथ श्वासलक्षण ।

दोहा-बहुश्वासाजेहिवृषभके, आवैसांकगँभीर ।
यूथनाशकरहोयसोइ, स्वामीरोगशरीर ॥

अथ लिंगलक्षण ।

श्लोक-स्थूलशकृन्मणिशृंगः सितोदरःकृष्णसारवर्णश्च ॥
गृहजातोपित्याज्योयूथविनाशावहोवृषभः ॥ ७ ॥
दोहा-जौनवृषभकोलिंगकी, पलईमोटदीखि ।
यूथनाशकरजानियो, मुनिमतकह्योविशेखि ॥

शृङ्गलक्षण ।

दोहा-पलईतकमोटेलखौ, शृंगबराबरिहोय ।
यूथनाशकरजानियो, याहिलेउमतिकोय ॥

अन्यमत-

सोरठा-नाममुरलिहासोय, गोलशृंगबेनोक्कके ।
उपरबरोबरिहोय, महादोषवृषत्यागिये ॥

रंगलक्षण ।

दोहा-मृगारंगतनुदेखिए, पेटसफेदीहोय ।
यहूयूथकोनाशकर, भूलिलेउमातिकोय ॥

अथ-फुलहारंगलक्षण ।

श्लोक-श्यामकपुष्पाचितांगोभस्मारुणसंनिभोबिडाल ।
विप्राणामपिनशुभंकरोतिवृषभःपरिगहीत ॥ ८

अर्थ-फुलहारंगलक्षण ।

दोहा-भस्मरंगतनुअरुणकछु, श्यामवर्णकफूल ।
चारोंवर्णनकोअशुभ, मतिलीज्योकोइभूल ॥

नेत्रलक्षण।

दोहा-नेत्रबिलारीसमलखौ, सोदोषीवृषजान ।
देयकष्टस्वामीनको, चारौंवणसुजान ॥

अथ कायरवृषभलक्षण ।

श्लोक-येचोद्धरंतिपादान्पंकादिवयोजिताःकृशग्रीवाः ॥
कातरनैनाहीनाश्वपृष्ठतस्तेनभारसहाः ॥ ९ ॥

अथ ।

दोहा-जौनवृषभहलशकटरथ, चलतलेउपहिचान ।
पगमानौचहलागडे, बोझनसहै सुजान ॥

पतरीपींचकोवृषभजो, बोझेकाचरहोय ।
पीछेकोघरहीनलखि,ऐसैजान्योसोय ॥
आँखैंजोभययुक्तहैं, भारनसहैसुजान ।
इंचारौंलक्षणनिरखि, वृषकायरपहिचान ॥

अथ शुभलक्षण ।

श्लोक-मृदुसंहतताम्रोष्ठास्तनुस्फिजस्तालुजिह्वाश्च ॥
तनुह्रस्वोच्चश्रवणाः सुकुक्षयःस्पष्टजंघाश्च १० ॥

अर्थ-अथ ओष्ठलक्षण ।

दोहा-जाहिवृषभकेओंठलखि, अतिकोमलजोहोय ।
औरबराबरिदेखिये, ताँबेरँगशुभसोय ॥

इन्द्रियलक्षण ।

दोहा-इन्द्रियछोटीतामरँग, तारूपहिसमहोय ।
जिह्वायहिरँगदेखिये, महासुलक्षणसोय ॥

अंगलक्षण ।

दोहा-छोटगठातनुदेखिये, ऊँचेश्रवणनिहारि ।
कोखीसुंदरहोयदोउ, तेलक्षणशुभकारि ।
जाँघेंदूनौंश्रेष्ठबहु, चपटीमिलीनहोयँ ।
याहूशुभलक्षणकह्यो, जोपहिचानैकोय ॥

श्लोक-आताम्रसंहतखुराव्यूढोरस्काबृहत्ककुद्युक्ताः ॥
स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वग्रोमाणस्ताम्रतनुशृंगाः ॥ ११ ॥

अर्थ-अथ खुरलक्षण ।

दोहा-लक्षणदेखौखुरनके, मिलेएकमेहोयँ ।

रंगतितौंबेकीकछुक, महासुलक्षणसोय ॥

छाती वा ठाठिके लक्षण ।

दोहा–छातीचौडी वृषभकी, भारीठाठि जो होय ।
महाबलीशुभजानियो, याहिलेउखबकोय ॥

त्वचा वा रोमलक्षण ।

दोहा–खालरोमलखिनम्रता, चिक्कनेहोयँमहीन ।
पाराशरमुनिकहतहैं, येलक्षणशुभदीन ॥

शृंगलक्षण ।

दोहा–छोटेशृँगतामेवरण, सकलसुमङ्गलखानि ।
पाराशरमुनिको मतो, दीन्योंकछुकबखानि ॥

श्लोक–तनुभूस्पृग्वालधयोरक्तांतविलोचनामहोच्छ्वा-
साः ॥ सिंहस्कंधास्तन्वल्पकंबलापूजिताःसुगताः ॥

अर्थ–अथ पुच्छलक्षण ।

दोहा–पतरीलम्बीपूँछ जो, भूमें लागत जाय ।
यहशुभलक्षणजानियो, मुनिमतदियो बताय ॥

नेत्र वा श्वासलक्षण ।

दोहा–नेत्रनकीकोरैंलखौ, अरुणवरुणजाहोंय ।
नथुननकीफुफकारमें, शब्दगँभीरीसोय ॥
येलक्षणशुभजानिये, कछुक्रोधीचितमाह ।
ऐसेवृषकोपालिये, दिन ।दिन बढै उछाह ॥

कन्धक्षलण ।

सिंहवर्णजोकांधहै, बहुमोटेदरशाय ।
शुभलक्षणकोवृषभहै, राखोघरमेंलाय ॥
गरेकीखालमानेकंमर ताके लक्षण ।
दोहा–कमरगरेकीखालजो, लटकातिरहहमेश ॥
छोटी कोमलदेखिये, यहलक्षणशुभवेश ।

चालके लक्षण ।

दोहा–चालमनोहरको वृषभ, स्वामीको सुखदेत ।
ऐसेवृषकोराखिये, कामहोयंमनचेत ॥

अथ जघालक्षण ।

श्लोक–वामावर्त्तैर्वामेदक्षिणपार्श्वेचदक्षिणावर्त्तैः ॥
शुभदाभवंत्यनडुहोरेखाभिश्चैणकानिभाभिः १३
अर्थदोहा–बाँइजाँघकेरामलखु, वामावर्त्तदेखाय ।
दक्षिणजंघाकेनिरखु, दहिनावर्त्तसोहाय ॥
मृगाजंघसमजंघदोउ, यहिलक्षण शुभयोग ।
यहवृषपालैसुघरनर, सोकरिहैसुखभोग ॥
श्लोक–वैडूर्य्यमाल्लिकाबद्धदक्षिणाःस्थूलनेत्रवर्ष्माणः ॥
पार्ष्णिभिरस्फुटिताभिः शस्ताःसर्वोपिभारवहाः ॥१४॥

अथनेत्रलक्षण ।

दोहा--वैडूर्य्यमणिकेसदृश, जनुचँबेलिकेफूल ।
पानीकेबुल्लानसम, नेत्रहोयँसुखमूल ॥

खुरफाटेनहिंदेखिये, यतनेलक्षणजानि ।
बहुभारीबोझासहै, बहुतबलनकी खानि ॥

श्लोक–घ्राणादेशेसवालिर्माज्जारमुखः सितश्चदक्षिणतः ॥
कमलोत्पलकलाक्षाभः सुबालधिर्वाजितुल्यजवः ॥ १५ ॥

अथाङ्गलक्षण ।

दोहा–नथुनापरत्रिवलीपरी, मुखमंजारिसमान ।
कमलमध्यसमरंगतन, दहिनेसितकछुजान ॥
अथवालाखकेरंगतन, सुंदरपूँछबखानि ।
घोडेतुल्यजोवेगहै, सकलसुमंगलखानि ॥

श्लोक–लंबवृषणोमंदोदरश्चसंक्षिप्तवंक्षणाक्रोडः ॥
ज्ञेयोभाराध्वसहोजवेतितीव्रोऽश्वतुल्यजवः ॥ १६ ॥

अर्थ–अथ अंडकोशलक्षण ।

दोहा–अंडकोशजेहिवृषभके, लंबेपतरेहोय ।
मेषउदरसमउदरहै, साँकरिकोखिबनोय ॥
जोभारीबोझासहै, चलैबहुतमगमाह ।
ऐसेवृषकोराखिये, नितप्रतिकरउछाह ॥

श्लोक–सितवर्णः पिंगाक्षस्ताम्रविषाणेक्षणोमहावक्रः ॥
हंसोनामशुभफलोयूथस्यविवर्द्धनः प्रोक्तः ॥ १७ ॥

अर्थ–अथहंसावृषभलक्षण ।

दोहा–श्वेतवर्णतनुवृषभको, नेत्रबड़ेरँगपीत ।
ताँबेकेसमशृंगदोउ, मुखकोभारीमीत ॥

शुभफलकोदातारहै, यूथकिवृद्धिकराय ।
यहिरँगहंसाजाहिघर, सबदुखदेतबहाय ॥

श्लोक-भूस्पृग्वालधिरातास्रवंक्षणोरक्तदृक्ककुद्मीच ॥
कल्पाषश्वस्वामिनमचिरात्कुरुतेपतिंलक्ष्म्याः ॥ १८ ॥

अर्थ-अथ लक्ष्मीप्राप्तिकरणवृषभलक्षण ।

दोहा-दूनोआँखैंताम्ररँग, धूमासकलशरीर ।
पूँछहोइभुँइमोलटकि, आंखैंलालँगभीर ॥
औरठाठिभारीलखौ, यहि पाँचोशुभयोग ।
जोअसवृषकोपालै, तहँलक्ष्मीसुखभोग ॥

श्लोक-योवासितैकचरणोयथेष्टवर्णश्वसोपिशस्तफलः ॥
मिश्रफलोपिग्राह्योयादिनैकांततः प्रशस्तोऽस्ति ॥१९॥

अर्थ-दोहा-श्वेतचरणतनुओररँग, शुभलक्षणकोसोय ।
जोसबअच्छेनामिलैं, तौमिलेंगकाहोय ॥

इति श्रीवाराहमिहिरकृतबृहत्संहितायां गोलक्षणम् ।

अथ हलनादोष ।

सोरठा-साम्हूँहालैजौन, ताहूकोहलनाकहै ।
जानिलबुधतौन, याहूकोत्यागनकरै ॥

अथ डोलना ॥ दूसरानाम नेहर ।

सोरठा-नेहरिदोषलखाय, ठाडरैंहुपथानपर ।
चरणउठायउठाय, आगूपाछूजोधरै ॥

अथ झुमनादोषलक्षण

सोरठा-झुमनादोषबताय, सकलचौपयाकोकहै ।

हालाकरैवनाथ, दहिनेबामेझूमिझुकि ॥
अथ अंगहीनवृद्धिदोष ॥ नादियानगैरह ।
दोहा–सकलअंगमेंदोखिये, जटाखुरीकुछहोय ।
ताहिनादियाकहतहैं, याहिनराखोकोय ॥
याकेजोतेअशुभफल, करैद्रव्यकोहीन ।
दुखीरहैतनरुजबढै, मानोसाँचप्रवीन ॥

अथ धूसरिदोषलक्षण ।

दोहा–पूँछकेनीचेगुदाढिग, अगलबगलपहिचानि ।
अमिषवृद्धिगूँथीलखै, ताहिधूसरीमानि ॥
सोरठा–देखतदूरिकराय, महादोषयाकोकहैं ।
सकलसुःखहरिजाय, जोघरराखैअसवृषभ ॥
अथ नसुढिया ॥ दूसरानाम नहसुवादोष ।
(देखोचित्रनंबर ३)
दोहा–दोषनहसुवाकाठिनहै, जोवृषकेतनुहोरि ।
आधीपसुरीदेखिये; जौनाकिनारेकोरि ॥
छब्बिसपसुरीहोतिहैं, सकलवृषभतनुमाहिं ।
अर्द्धकिनारेकोलखौ, महादोषकहिताहि ॥

अथ श्यामतारूपशुभाशुभलक्षण ।

दोहा–सकलपशुनकोभेदयह, जाकोतारूश्याम ।
बडोदोषगंभीरहै, ताहिनराखोधाम ॥
चौ०–बगलैश्यामअरुणजोतारू । ताकोनाहिकछुदो[ष]
चारू ॥ तारूमध्यश्यामदरशावै । ताहिदोषसबग्रन्थ[न]

अथ अहिमुखीदोष । 55/40

दोहा–वृषमुखजिह्वादेखिये; निकसीरहैहमेश ।
ताको कहियेअहिमुखी, लपलपायनहिंवेश ॥
कितनोहोयधनाढ्यनर, यहिवृषराखैकोय । 42,220
सोदरिद्ररुजतनु बढै, सबसुखडारैंखोय ॥
कोउकोउनरसाँपिनकहैं, दूसरनामबखान ।
महादोषगंभीरहै, याहिनराखुसयान ॥

अथ चौंकदारभडकाकरै ।

दोहा–चौंकोविजुकैचूरके, तेहिमतिलेउसुजान ।
जियकोदुइमनजानिये, लक्षणतेपहिचान ॥
कछुखटकैबाजासुनै, छत्रनीलपरदेखि ।
भटकैभागैगिरिपरै, सोदुखदेतविशेखि ॥

अथ हरिणपेठियादोष ।

दोहा–चपकापीठीमेंउदर, मृगसमकहौंबखान ।
हरिणपेटियानामवृष, ताकोसुनोसुजान ॥
सेवाजोबहुतैधिकरौ, कबहुँनदेहँमोटाय ।
दूबरकमताकातिरहै, महादोषसो आय ॥

अथलमटंगा ॥ (देखोचित्र नं ९)

दोहा–लमटंगासारसचरण, नामकहौंवृषकेर ।
बदसूरतकमजोरहै, चालचलैंमगथेर ॥

अथ पँगुदावृषलक्षण ।

दोहा–लंबेपगटेढौलखौ, सकलजोरिबँददेखि ।

बहुतखराबानिहारिकै, ताहिनलेववि शोखि ॥

अथ ढिलमुँहाथोथिया ।

दोहा–ढीलामुख अरु थोथिया, नामकहौंवृषकेर ।
लिंगकिपलईलटाकिबहु, हालैचलतेबेर ॥
कमताकतितेंहिजानियो, यासोंकरौनप्रीति ॥
बहुतबुरात्यागनकरो, यहकिसानकीरीति ॥

अथ पँडरियानामवृष ।

दोहा–सुनैपँडरियावृषभको, कबहुँनदेहमोटाय ।
भैंसीभैंसापरचढै, मेहनतिकरिहाँफिजाय ॥
गाइनतनदेखैनहीं, कबहुँनमनठहराय ॥
ऐसेकोत्यागनकरो, बहुत अनीतिलखाय ॥

अथ कुसादरूह ।

दोहा–चेहरामुखजोवृषभको, फैलाचकलाहोय ।
सोकुसादरूहीकहौं, बहुतमरकहासोय ॥

अथ अश्व सीनावृषलक्षण) देखो चित्र नं० ५)

दोहा–अश्वाकेसमहृदयवृष, जबरदस्ततेहिजान ।
कछुबदसूरतिदाखिये, ठोकरलेयनिदान ॥

अथ तबरँगवनवृषलक्षण ॥ (देखो चित्र नं० ६)

दोहा–पिछिलाधरजोवृषभको, बहुतहीनजोहोय ।
बदसूरतिकमजोरहै, तबरँगवनकहिसोय ॥

अथ कमरीवृषलक्षण ।

दोहा-कमरीवृषसोजानियो, कमरझुकीबहुहोय ।
खालीपीठिनिहारिये, कमताकतिहैसोय ॥

अथ कुलिञ्चवृषलक्षण ।

दोहा-जाहिवृषभकोदेखिये, कूँचपाछिलेपायँ ॥
चलतेलागैंएकमें, पगपगमेंमिलिजायँ ॥
देखतमेंफूहरलगै, चलैबहुतमगथोर ।
ऐसेकोत्यागनकरो, लीनहोउतेहिफेर ॥

अथ बडकन्नावृषलक्षण ।

दोहा-बडकन्नावृषकोकहौं, जाकेबडबडकान ।
सुस्तरहैमगकमचलै; मेहनतिकाचरजान ॥

अथ झुंपियावृषलक्षण ।

दोहा-सुनाझुंपयानामवृष, नाककहतसबकोय ।
पूँछकिबालरिमेंलखौ, बार अधिकघनहोय ॥
चौपाई-पूँछझंपियाछोटेकान, ऐसावृषभकमाऊजान ॥

अथ नेवरिहावृषलक्षण ।

दोहा-जावृषकेनेवरलगैं, मगमेंचलतकलेश ।
रुधिरबहैखुररगरते, बारंबारहमेश ॥
यहिवृषकोमतिलीजियो, नीकनकबहूँहोय ।
जबलगजीवैगृहविषे, सोचाकिसानैहोय ॥

अथ चकैयावृषदेहीका ।

दोहा-सुनौचकैयावृषभके, लक्षणकहौंबखानि ।
सकलअंगदेहीगढी, जोरबंदशुभजानि ॥

सोलंगाकमहोतहै, सकलकाममेंजोर ।
ताकतबरनीकोलगै, सबवृषकोशिरमौर ॥

अथ फतेपेशानी ।

दोहा–मस्तकचौडाचाकला, वृषकोबहुत जो होय ।
रूपवानबल अधिकहै, चलैबहुतमगसोय ॥
कछुकजबरईकरतहै, सुनौसकलदैकान ।
ताकोवर्णननामकरि, फतेपेशानीजान ॥

अथ मृगानेत्र अशुभलक्षण ।

दोहा–जाकेनेत्रविलोकिये, नीचेलखौप्रवीन ।
जगहनेत्रकीदूसरी, मृगानेत्रकहिदीन ॥

अथ कंजानेत्र अशुभलक्षण ।

दोहा–जाहिवृषभकोदेखिये, नेत्रपूतरीजौन ॥
सोभूरेरँगहोतहै, कंजाकहियेतौन ॥

अथ ताखीदोपलक्षण ।

दोहा–एकनेत्रकंजालखौ, दूजोवरणजोश्याम ।
सोवृषताखीअशुभहै, हरैसकलधनधाम ॥

अथ कानानेत्रअशुभलक्षण ।

दोहा–कानाकहियेतीनिविधि, फूलीठेठरफूट ।
ताकेफलमध्यमकहौं, कछुकपटकोखूट ॥

अथ ऐंचातानावाढेरानेत्रलक्षण ।

दोहा–ढेरावृषसोजानियो, तिरछाकोरनिहारि ।
नेत्रपूतरीउलटिहै, फूहरअशुभविचारि ॥

अथ नेत्रकोयाचितलाअशुभलक्षण ।

दोहा-वृषभचक्षुभीतरलखौ, कोयाचितलाजानु ।
श्यामसफेदीहोतहै, महाअशुभफलमानु ॥

अथ नेत्रपलकाचितला अशुभलक्षण ।

दोहा-पलकैंनेत्रनकीलखौ, चितलीश्यामसफेद ।
तेहिवृषकोमालिकसदा, दुखीरहै सुनुभेद ॥

अथ भुँइचीतानेत्रअशुभक्षलण ।

दोहा-भुँइचित्तावृषजानियो, सदारहैभुँइचीत ।
ताकेलक्षणअशुभहैं, जानिलेउतुममीत ॥
भैंसाबरदाआदिमी, अरुभुइचितातुरंग ।
ऐबकैरैंमानैनहीं, करैंसकलसुखभंग ॥

अथ गजनेत्रलक्षण ।

दोहा--गजसमानजोहिवृषभके, नेत्रहोयँबहुछोट ।
सोकाचरखादरकहौ, मारुखायभुँइलोट ॥
अरुण आँखियामेंलखौ, तौंजानौवृषतेज ।
शुभअरुअशुभनहोतिहै, कछुरिसकोपरहेज ॥

अथ कोतेचश्मवृषलक्षण ।

दोहा-छोटीआँखिनकोवृषभ, बहुतअरुणताहोय ॥
कोतेचश्मसोनामहै, सकलअलक्षणसोय ॥

अथचितखोवानेत्रलक्षण ।

दोहा-चितखोवाजोवृषभहै, नेत्रनतेपहिचान ।

भारीभयकारीलखौ, दुइमनकेरसमान ।

अथ दन्तदोषछद्दरिलक्षण ।

सोरठा-सुनौसकलदैकान, वृषभदोषलक्षणकहौ ।
छद्दरिलीजोजान, होतरदनषटजासुके ॥

अथ सद्दारिदन्तदोषलक्षण ।

दोहा-सातदशनमुखमेंगनौ, सद्दरिकहौंबखानि ।
महादोषवृषजानियो, करैसंपदाहानि ॥
छद्दरिकहैसुसद्दारत, चलुकेहूघरजाइ ।
चारिउकोनबटोरिकै, फेरिकिसानैखाइ ॥

अथ नवदन्तअशुभलक्षण ।

दोहा-नवदंतावृषजानियो, महादोषगंभीर ।
जेहिकिसानगृहदेखियो, वाकेरोगशरीर ।

अथ दंतनिपोसावृष अशुभलक्षण ।

दोहा-दंतनिपोसावृषभके, लक्षणसुनौसुजान ।
नीचेकेरोअधरलखु, लटकारहैनिदान ॥
दंतदेखियहिसोंपरैं, महादोषगंभीर ।
तेहिवृषकोस्वामीसदा, रोगीरहैशरीर ॥

अथ सुतरदन्तवृष अशुभलक्षण ।

दोहा-जाहिवृषभकेवदनमें, रदनबडेजोहोय ।
ऊँटाकिसमताजानियो, सुतरदंतकहिसोय ।
ऐसदशनवृषकेहवै, सोजलदीघिसिजाय ।
गिरैपोपलाहोयमुख, पिंगरोगहोइजाय ॥

दोहा–मध्यदोषसोजानियो, याको सुनियेभेद ।
सेतिनलीजैअसवृषभ, दूरिहिदूरिखरेद ॥

अथभरकदन्तावृषमध्यमलक्षण ॥

दोहा–जाहिवृषभकेवदनमें, रदनगिरैंयकबार ।
ताहिभड़कदन्ताकहैं, याकोसुनोविचार ॥
फिरजामैयकसुतसब, कछुकअशुभफलसोय ।
जाकेगृहमेंअसवृषभ, झगरारोजैहोय ॥
चौ०–बहुतमाहिषवृषतीनिवर्षमें । आठादन्तउखारतमुखमें ॥
भरकदंतसोनामकहावै । कोउशुभकोउअशुभबतावै ।

अथ दन्तलक्षण वा प्रमाण ।

दोहा–मानुषअश्वकेमुखरदन, तरऊपरदुहुँओर ।
गोवृषमहिषकेजानियै, होतएकहीछोर ॥
चौ०–विनदाँतनकोऊपरजानो । खालीमुसुकुरतहाँबखानो ॥
जबहींगोबियायतबहीदेखै । दुइरदबच्चामुखअवरेखै ॥ पेटते-
दुइदांतजमाई । औरौकछुकक्होंसुनुभाई ॥ एकमासबीते-
तेहिमानो । दूधदांतमुखनिकरतजानो ॥ तीनिवर्षलग्युतेहि-
कहजानैं । बच्चाकहिकाहिसकलबखानैं ॥ फिरियकदांतदूधको-
उखरैं । कछुदिनपीछेदुसरोझरै ॥ फिरिदुइदांतजमावैभाई ।
तबदुइदंता नाम कहाई ॥ जो वृषहोयअङ्गकोभारी ।
औमाहिषीकोकहौंविचारी ॥ वरषअढाइमेतेहिजानो । दूधदां-
तउखरतहैंमानो ॥ प्रथम एकरदउखरैभाई । तबदुइ-
दन्तानामकहाई ॥ फिरि वह दूसरदांत उखारै । इकदुइ-
मासकेबादिनिहारै ॥

दोहा—तेहिपीछे एक वर्षके, फिरिदुइदन्तउखार ।
चारदाँततबकहतहैं, जामेंतौनउदार ॥
चौ०—फिरिपीछेदुइडेढवर्षके । उनकोढिगरदजौनदूधके ।
तेहि उखरे छः दन्त बखानै । पांचवर्षतेहिपूरोजानै ॥
तबहिंवृषभकोकहैजुवाना । लेइकामतेहिअधिकसुजाना ।

अथ बूढेबैलकीपहिचान ।

दोहा—वृद्धापनवृषकोकहौं, रदननतेपहिचान ।
खिसेंहोयअरुबडेबहु, हालतयहीप्रमान ॥
चौ०--तीनवर्षवरधावरधाइ । तिरियाजोबनवर्षअढाई ॥
मर्दकजोबननितनितधारा । भोजनपावैदुइदुइबारा ॥

अथ खुरफैलावृषभलक्षण (देखोचित्रनं ०७)

दोहा--खुरफैलासोजानियो सदारहैखुरफैल ।
पैदाइशतेहोतहै, कमताकीतिवहबैल ॥
देखतमेंफूहरहवै, मगमेंचलिलँगराय ।
ऐसेवृषकोपरिहरौ,लीनहोयफिरिजाय ॥

अथपोलियाखुरलक्षण (देखोचित्र न ०८)

दोहा--बहुफैलेटेढेलखो, बडेबडेखुरदेखि ।
ताकोपोलियानामकहि, कमताकातवृषलेखि ॥

अथ खुरचपातीवृषलक्षण (देखोचित्र नं ० ९)

दोहा--सुनोचपातीखुरवृषभ जेहिलक्षणकोहोय
चपटेचपटेगोडलखि, कमताकतिहैसोय ॥

बारहकेरेतमें, औग्रीषमकोघाम।
चलैनपावैसोवृषभ, जोनचपातीनाम॥

अथ खरखुरावृषभलक्षण (देखो चित्रनंबर० १०)

दोहा—जौनवृषभखुरदेखिये, गर्दभटापसमान।
सोबदसूरतचालुक्रम, महाअशुभफलजान॥

अथ खुरकटावृषभलक्षण (देखोचित्रनं० ११)

दोहा—खुरकटवृषलक्षणकहौं, चलतराहपहिंचान।
पिछिलेपगअगिलेनके, पीछूपरतसोजान॥
राहचलतिसयलायनहिं, औरदोषकछुनाहिं।
याकोखुरानमानिये, वृषराखौघरमाहिं॥

अथ खुरघसींटावृषभलक्षण (देखोचित्रनं० १२)

दोहा—खुरनघसीटावृषभके, लक्षणसुनौसुजान।
पुहुमीखुररगरतचले,बडादोषपहिचान॥
खुरखियाँय ताके बहुत,जखमीसोहोइजाय।
औरोकछुदूषणनहीं, ठाढोरहैबनाय॥

अथ कचखुरावृषभलक्षण (देखो चित्रनं० (१३)

दोहा—कहौंकचखुरावृषभके,लक्षणसुनौप्रवीन।
श्वेतअरुणभूरेलखौ,मेहनतिमेंबहुदीन॥

अथ शृंगोंकेलक्षणशुभाशुभवर्णन।

दोहा—वृषलक्षणजोशृङ्गके,चारिभाँतिसंयोग।
नामशुभाशुभबदसकल,औरकछूहैरोग॥
शृङ्गवृषभकेदेखिये,जाविधिविधिरचिदीन।

भिन्नभिन्न लक्षण कहौं, जानौ परम प्रवीन ॥

अथ मौराशृङ्ग लक्षण (देखो चित्र नं० १४)

दोहा—मौरा वृष सूघर बहुत, चलै राह में जोर ।
पलई शृङ्गन की झुकी, कछु कठाठ की ओर ॥
मौरा जिन के वृषभ हैं, नित उठि तिन हिं उमंग ।
पाताखट कै वृक्ष को, उड़ै पवन के संग ॥

अथ बड़शृङ्गा वृष लक्षण (देखो चित्र नं० १५)

दोहा—बड़शृङ्गा जो वृषभ है, बद सूरति देखराय ।
थोरे दिन में देह की, सबता कातिघाटि जाय ॥

अथ मेढिया शृङ्ग लक्षण (देखो चित्र नं० १६)

दोहा—मेष शृङ्ग सम शृङ्ग है, मेढिया वृषभ कहाय ।
शुभ अरु अशुभ न जानिये, राखो घर में लाय ॥

अथ भैंडिया शृङ्ग लक्षण ॥ (देखो चित्र नं० १७)

दोहा—शृङ्गन की नोकै दुवो, झुकि टेढी बहु होय ।
नेत्रन के ढिग सामुहैं, भेंडिया कहिये सोय ॥

अथ औंधी चाचरि शृङ्ग लक्षण ॥ (देखो चित्र नं० १८)

दोहा—औंधी चांचरि को वृषभ, शृङ्ग झुके मुख ओर ।
नीचे जरल चिन्ह जाति है, ताको कछू न खोर ॥

अथ वाकिया शृंग लक्षण ॥) देखो चित्र नं० १९)

दोहा—वाकिया वृष को दाखिये, ठाढ सूधय कृ शृंग
यक सूधो मुख तन हवै, जोरा खैमुख भंग ॥

अथ सरगापत्ताली शृङ्गलक्षण ॥ (देखोचित्र नं० २०)

दोहा—जोसरगापत्तालिवृष, सकलअशुभकीखान ।
जोकिसानघरराखई, ताकोदुःखनिदान ॥
एक शृङ्गसूधोखडा, इकलटकोभुइँओर ।
ताहिकुलक्षणजानियो, हरैसकलधनचोर ॥

अथ कैंचा शृङ्गलक्षण ॥ (देखोचित्र नं० २१)

दोहा—कैंचावृषनदसूरतीं; कछुकअशुभफलदेय ।
एकशृङ्गअनतेगयो; एकअनतको होय ॥

अथ सैस्या शृङ्गलक्षण ॥ (देखोचित्रनं० २२)

दोहा—वृषभसैस्याजानियो सूधेशृङ्गप्रमान ।
शक्तीकेसमदेखियो, बडो लडैयाजान ॥

अथ कोपिला शृङ्गलक्षण (देखोचित्रनं० २३)

दोहा—कोपिलावृषकोदेखिये, आगेशृङ्गझुकाय ।
कोइकोइकोतियाकहतिहैं, फूहरमहादेखाय ॥
हालिझूलिलटकैकछू, सोकमताकातिहोइ ।
याहूदोषनमें कछुक, जोपाहिचानैकोइ ॥
दांतघिसेअरुखुराघिसे, शृङ्गगयेकोपिलाय ।
ज्वानीबलबिधनालयो, रह्योबुढापाछाय ॥

अथ मैना शृङ्गलक्षण ॥ (देखोचित्रनं० २४)

दोहा—तरवारिकेम्यानसम, शृङ्गाकारनिहारि ।
मैनावृषकोनामकहि, लक्षणकहौंविचारि ॥
बहुबलिष्ठमजबूतहै, शुभलक्षणकीखानि ।

चौंकैभडकैबहुतकै, वृद्धापालगमानि ॥

चौ०–मैनावृषभबडाबलवाना । छोटीगरदनठाढेकाना ॥

अथ डुण्डाशृङ्गजोटूटिगाहोयताकेलक्षण ।
(देखोचित्रनं० २५)

दोहा–एकशृंगजोटूटिलखि, काहूविधितेजानु ।
डुण्डावृषभकहावई, कछुकअशुभफलमानु ॥

अथ डुण्डावृषभपैदायशी, (देखोचित्र नं०२६)

दोहा–यकडुण्डापैदायशी, एकशृंगकाहोय ।
एकशृंगजामैंनहीं, महाअशुभकहिसोय ॥

अथ मुण्डाशृंगलक्षण (देखोचित्र नं० २७)

दोहा–मुण्डावृषकेशृंगके, लक्षणसुनौसुजान ।
मूठीहाथनकीतरह, मुठियारेसोजान ॥

अथ मुण्डापैदायशीशृङ्गलक्षण (देखोचित्र नं २८)

दोहा–बाजेबाजे वृषभके, शृङ्गनमस्तकमाहि ।
असलीमुण्डासोकही, बधियाकेसमताहि ॥
आयुबढीसीधाबहुत, अरुदमकसमजबूत ।
अंगहीनयावृषअशुभ, गृहराखैभयभीत ॥

अथ म्वटशृङ्गावृषलक्षण, (देखोचित्र नं०२९)

दोहा–मोटेमोटे शृंग लखु, जाहिवृषभको होय ।
म्वटशृंगातेहिनामहै, खादरजानौसोय ॥
म्वटशृंगाकोचातुरे, कहैंनलीजैकोय ।
मोहनभोगखवाइये, थूथूखादरहोय ॥

अथ चिरशृङ्गावृषलक्षण (देखोचित्र नं० ३०)

दोहा—वृषभशृंगकोदेखिये, उपरफौलिबहुजाय ।
चिरशृंगाताकोकहैं, फूहरबहुतदेखाय ॥

अथ वेदियाशृंगलक्षण (देखोचित्रनं० ३१)

दोहा—वृषभशृंगफैलेलखौ, जो जरते अधिकाय ।
दोनोंदिशिसूधेहुवैं, वेदियानामकहाय ॥

अथ खुरकपलीना शृंगलक्षण (देखोचित्रनं० ३२)

दोहा—खुरकपलीनानामवृष, लक्षणसुनोसुजान ।
शृंगउपरपानीबहै, तौनश्रवणवहिआन ॥
ताहिपरेदुखऊगजे, दरदकरैअधिकार ।
ऐसेवृषनहिंलीजिये, हैबहुदोषअपार ॥

अथ गरेला शृंगलक्षण (देखोचित्रनं० ३३)

दोहा शृंगफटेजेहि वृषभके, सदारहैजोफाट ।
ताहिगिरेलाकहतहैं, मतिलीजोतेहिहाट ॥

चौ०—भारीरोगअशुभतेहिजानौ । नीकिनकबहूँसोपहि-चानौ ॥ बाजेनरबहुकैरैंउपाई । शृंगछिलायदवाचुपराई ॥

दवा—मीठातेलमोमअरुकाजर । शृंगचुपरिकैकरैंउजागर ॥
कछुकदिनानाँकोदेखरावैं । फिरफाटैंवैसैह्वैजावैं ॥

दोहा—शृंगगरेलावृषभको, अरुमानुषतनुकोढ ।
यहनीकेनहिंहोतिहैं, चहौवदौतुम होढ ॥

अथ खुटखुटा शृंगलक्षण (देखोचित्र नं० ३४)

दोहा—वृषभखुटखुटाजानियो, खुटकावैबहुशृंग ।
रातिदिनाआठौपहर, करैराजको भंग ॥

दोहा–खूँटालकरीचरनिमें, औरदेवालनिहार।
देदैमारे शृंगको, भितरीकमेंडदार॥
पक्षीपशुसबरैनिको, नित्तकरैंविश्राम।
हायखुटखुटामहिषवृष, खुटखुटहीसेकाम॥

अथ कौडिहा शृंगलक्षण (देखोचित्र नं० ३५)

दोहा–वृषभशृंगदोउनोकपर, श्वेतटीकरीहोय।
ताहिकौडियादोषवर, भूलिलेउमातिकोय॥

अथ वृषरंगशुभलक्षण।

अथ चौरारंगपूछकाशुभ।

दोहा–चौरारँगवृषपूछमें, जानोताहिप्रवीन।
आधेकचनीलेवरण, अर्द्धश्वेतकाहिदीन॥
सबशुभदायकजानियो, जाघरचोराहोय।
औरवृषभकेदोषको, सकलमिटावैसोय॥

अथ चौरारंगदेहकाशुभ॥ (देखोचित्र नं० ३६)

दोहा–चौरारँगवृषसोकहौं, श्वेतवर्णसबअंग।
सोशुभदायकजानियो, यहिकोकरौप्रसंग॥

अथ चौरासोनहिलारंगवृषलक्षण (देखोचित्र नं० ३७)

दोहा–चौरारंगसोनाहुला, श्वेतहोयसबगात।
कछुकपीतरोमाझलक, जोतसुस्तचलात॥

अथ कचेलियारंगलक्षण (देखोचित्र नं० ३८)

दोहा–रंगकचेलियाकोवृषभ, शुभदायकसोजान।
दुमनीचे अरुगुदातक, सियानिअण्डपरिमान॥

नीलवरणइनठौरहै, लिखौंनामपहिचान।
शुभदायकबलअधिकतनु, जानौंचतुरसुजान॥

अथकजरारंग॥ (देखो चित्र नं० ३९)

दोहा—नेत्रनकेचारौंतरफ, नीलरोमरंगहोय।
कजराकहियेनामतेहि, बहुबलिष्ठहै सोय॥
कजराऔरकचेलिया, दूनौंरँगजिहिमाह।
ताहीवृषकोबलअधिक, कहतकविनकेनाह॥

अथ श्यामकर्णरंग॥ (देखोचित्र नं० ४०)

दोहा—श्यामकर्णशुभबहुतहै, कर्णहोइँदोउश्याम।
अथवापलुईकछुकहै, तऊसुखनकोधाम॥

अथ चँदुवाटिकुवारंग॥ (देखोचित्र नं ४१)

दोहा—चँदुवाटिकुवावृषभको, नामकहतसबलोग।
माथेटीकासुभगलखि, रूपवानसुखभोग॥

अथ मुहधोवाश्वेतवदन॥ देखो चित्र नं० ४२)

दोहा—जाहिवृषभकोतनुसकल, नीलवर्ण जो होय।
श्वेतवदनताकोनिरखि, मुहधोवाकहिसोय॥
चौ—रूपअधिकतेहिजानोभाई। गुणअरुदोषनकछूलखाई

अथ पीलारंग॥ (देखो चित्र नं० ४३)

दोहा—रोमहोइँतनुकेजरद, कछुकसफेदीजान।
पीलारँगनाहिंसुस्तहै, नहींतेजपरमान॥

अथ रकसधुमैलारंग॥ (देखो चित्र नं० ४४)

दोहा-रकसधुमैलारँगवृषभ; लक्षणतेहिपहिचान ।
रोमअरुणअरुश्वेतहैं, कछुभूरापरमान ।

अथ भूरारंग (देखो चित्र नं० ४५)

दोहा-वृषभअंगकीत्वचाजो, अण्डकोशअरुरोम ।
सुरखीतेजनिहारिये, भूराँरगशुभकोम ॥
कोयानेत्रनकेलखौ, दुमनीचेसोजान ॥
चमकदारसुरखीहवै, सोभूरापहिचान ॥
अरुणश्वेतामिलिचमकबहु, शृंगवृषभकेहोय ।
सोभूरापहिचानियो, कहैंचतुरनरसोय ॥

अथ सकीलरंग (देखोचित्र नं० ४६)

दोहा-कहिसकीलरँगवृषभको, भलाबुरानाहिंकोय ।
माथेतेनथुनातलक, एकलकीरसोहोय ।

अथ करदुम्मारंग (देखोचित्र नं० ४७)

दोहा-जाकोतनसबश्वेतहै, पूँछउपरतकश्याम ।
सोवृषमेहनतिमेंअधिक, करदुम्मातेहिनाम ॥

अथ ललदुम्मारंग (देखोचित्र नं ४८)

दोहा-जौनवृषभकोदेखिये, कोईरँगतनुमाहिं ।
अरुण पूँछवाकीलखौ, ललदुम्माकहिताहि ॥

अथ कबरारंग अरुण ॥ (देखोचित्र नं० ४९)

दोहा-अर्द्धअर्द्धदुइरंगहैं, सोकबरापहिचान ।
भिन्नाभिन्नवर्णनकरौं, जानौपरमसुजान ॥

कबरावृषभबखानिये, अरुणश्वेतरँगएक ।
नीलश्वेतकेबरणइक, दूनौएकहिएक ॥

अथ चितलारँगदुइतरहकाहै ॥ (देखोचित्रनं० ५०)

दोहा—श्वेतकहूँकहुँनीलकहुँ, जगहजगहतनुहोय ।
दूजोचितलाअरुणवृष, याहीविधिकीसोय ॥

अथ करुवातेलियारंग ॥ देखोचित्रनं० ५१)

दोहा—करुवातेलियारंगकहौं, वृषभरोमदुमनील ।
सकलअंगयहिबरणहैं, दूजोनहींसमील ॥
रूपअधिकबलदेहमें, तावेदारहमेश ।
याकोघरमेंराखिये, कहैंसकलबुधवेश ॥

अथ करुवावृषभरंग (देखोचित्रनं० ५२)

दोहा—करुवारँगमजबूतबहु, रूपवान अधिकार ।
चलैबहुतमगथकैनहिं, याकोयहीविचार ॥
डहुवापुट्ठादुहुनमें, गर्दनलगुवृषजान ।
औरपूछनीलेबरण, चमकैबहुतसुजान ॥

अथ नीलवृषरंग (देखोचित्रनं० ५३)

दोहा—नीलरंगवृषकहतहौं. श्वेतनीलकचहोय ।
मिलेएकमेंदेखिये, मध्यमकहियेसोय ॥

अथ गोरवारँग (देखो चित्रनं० ५४)

दोहा—गोरवारँगवृषकोकहौं, मध्यभागतेहिजान ।
अरुणवरणसबअंगहैं, जिमिगुञ्जापरमान ।

अथ गोरखिरवा (देखोचित्रनं० ५५)

दोहा–जाहिवृषभकोदेखिये, बहुतदाालनहिंहोय ।
बहुतसफेदीनालखौ, ग्वरखिरवाकहिसोय ॥
सुस्तचुस्तहैदेहको, काचरबहुतसुभाय ।
याकोघरतेपरिहरौ, सेंतिनराखोलाय ॥

अथ मुसरिहारंगदोष (देखो चित्र नं० ५६)

सोरठा–मूसरिदोषकहाय, पुच्छावालरँगयुगल ।
गंडासमदरशाय, ताहिवृषभकोत्यागिये ॥

अथ फुलहारंगकुष्टीदोष (देखो चित्र नं० ५७)

दोहा–फुलहावृषकुष्टीलखे, महादोषगम्भीर ।
श्वेतवर्णकेदेखिये, फुल्लासकलशरीर ॥
मानुषकेतनकुष्ठहै, गोवृषफूललखाय ।
इनकीछाहींत्यागिये, घरतेदेउबहाय ॥

अथ तिलहारंग (देखोचित्र नं० ५८)

दोहा–सकलअंगमेंतिलनिरखि, भलाबुरानहिंकोय ।
कोईकोईकहतहैं, कठिनदोषकहिसोय ॥

अथ माखियारारंग (देखोचित्र नं० ५९)

दोहा–जाहिवृषभको देखिये, सकल शरीरबखान ।
माछीऐसीबैठिलखि, महादोषतेहिजान ॥
वृद्धापनमेंजानिये, यहरुजवृषतनुहोय ॥
बाजेबाजेनरकहैं, समुझदेखुयहसोय ॥

अथ भोडावृषभरंग (देखो चित्रनं० ६०)

दोहा-भोडाबदसूरतवृषभ, नीलवर्णतनुहोय ।
आननश्वेतबखानिये, अशुभजानियोसोय ॥
याकेमुखरूपरकहौं, कचलम्बेघनहोय ।
ताकोभोडानामहै, याहिलेउमतिकोय ॥

अथ कागवदनरंग (देखो चित्रनं० ६१)

दोहा-सकलशरीरसफेदहै, मुखकारोपहिचानु ।
ताकोमालिकरोगवश, सदारहैयहजानु ॥

अथ चौदहरंगकेलक्षण (देखो चित्रनं० ६२)

छंद-भोडियावृषभभडहाकेरंग । सोअशुभकारनहिंकरुप्रसंग ॥ कागियाहोयकौवासमान । ताकोनहिंलीजोबुधिनिधान । रँगव्याघ्रहोयकेहरीनाम । वृषभमध्यहैराखौसुधाम ॥ चीनियाँहोयचीनीकेरंग । वृषफुलवाईकहिफूलअंग ॥ संदलीश्वेतचंदनसुमार । किसमिसीरंगनहिंअशुभकार । चम्पईफूलचम्पासमान । काँसियारंगकाँसेप्रमान ॥ वृषखैराअरुफलसईसोय । सोघरमेंराखोनीकहोय ॥ कहिरंगसोनाहिंलाशुभनिदान । पैढकुलियासोपैंढकुलसमान ॥ जोबाँदरकेरँगवृषभहोय । तेहिमध्यमकहियेकछुकसोय ॥

अथ गरियारखादरवृषलक्षण ।

दोहा-वृषलक्षणगरियारके, सुनोसकलदैकान ।
भिन्नभिन्नवर्णनकरौं, संतिनलेउसुजान ॥

अथ बैठुवाखादरलक्षण ।

दोहा—गाडीहलकोदेखिकै, जुवाँधरोगिरिजाय ।
मारेकूटेउठैंनाहिं, चरणदइफलाय ॥

अथ मनखादरलक्षण ।

दोहा—मनखादरवृषजानियो, ताकेलक्षणजौन ।
अतिधीरामारगचलै, मतिलीजोवृषतौन ॥
पीठिलचावैमारुते, बहुतैधीराहोय ।
ठढगरियाराकोउकहैं, सकलअलक्षणसोय ॥

अथ चमकुलखादरलक्षण ।

दोहा—चमकुलखादरएकहै, ढिगकेगयेचमंक ।
जुवाँधरेदेहीकँपै, धरांकिगिरैनिहशंक ॥

अथ मध्यधीराचलैकेलक्षण ।

दोहा—जाकेकचमोटेलखौ, धीरावृषभसोजान ।
औरपूँछस्थूलहै. ताहिनलेउसुजान ॥

अथ महिषदोषधूसरिवर्णन ।

दोहा—पूँछमूलतरमाहिषके, गुदाकेऊपरजान ।
गिलटीगोलनिहारिये, धूसरिताहिबखान ॥
सोरठा--देखतदूरिकराय, महादोषयाकोकहैं ।
सकलसुःखहरिजाय, जोघरराखैअसमाहिष ॥
जोधूसरिदरशाय, भगअरुगुदकेबीचमें ।
मध्यमताहिकहाय, जेहिगोबरऊपरगिरै ॥

अथ छंजनदोष ।

सोरठा--देखतहूरिकराय; महाअशुभतेहिजानियो ।
छंजनदोषबताय, महिषिएनथनकाबरे ॥

अथखँधयलदोष ।

दोहा—काँधेऊपरअस्थिकहि, जहाँठाहिकोठाँउ ।
तौनठौरखालीलखौ, गडहासमसुनुभाउ ॥
खँधयलनामकहावई, दोषकाठिनतेहिजानु ।
धनअरुधामकोनाशकारि, ग्रंथकहैपरमानु ॥

अथ मूसरि महिषको ।

सोरठा—अधिकनोकीलोहोय, काँधेठाठिकोअस्थिजो
महादोषकहिसोय, मूसरितहिबखानिये ॥

अथ महिषकेअशुभभौरीवर्णन ॥

दोहा—साँपिनभौंरीमाहिषवृष, ताहिलेउपहिचानि ।
ठाठितीरतेप्रगटहैं, पूछलगेसोजानि ॥
भृङ्गएककैहैकेहुवृषभ, केहूकेदुइजान ।
काहूकोमुखअग्रलखि, केहुकेपीछेमान ॥
लक्षणसाँपिनिकेअशुभ, जोयहिवृषकोलेत ।
डासिकिसानकोखातहै, भक्षै कुरुमा गोत ॥

अथ रिरिहाभौंरवृषअशुभ ।

दोहा—रिरिहाभौंरीरीरढिग अरुपुट्टनकेतीर
ऐसावृषत्यागनकरौ, महादोषगंभीर ॥

अथ पुट्टियाभौंरीदूनौपुट्टनपरदुइ ।

दोहा—दूनोपुट्ठनपरलखो, वृषकेभौंरीहोय ।
महाअशुभफलदेतिहै, सबधनडारेखोय ॥

अन्य ।

एकैजोपुट्ठाउपर,होयभ्रमरकोवास ।
जोलक्षणऊपरलिखे, कारहावित्ताविनाश ।

अथ मुडुलुइयाभौंरीशुभलक्षण ॥

दोहा—शृङ्गजरनकेतीरहै, मुडुलुइयाकोधाम ।
ऐसोवृषत्यागनकरो, नाहिराखौयकयाम ॥
केहूवृषकेएकलखि, काहूकेदुइजानु ।
शृंगमूलकोउनामकहि, ताकोकरेबखानु ॥

अथ महिषीमातनगर्भाधारणविधि ।

दोहा—जोमहिषीमातनचहौ; कीज्योयहीविधान ।
गर्भाधारणहोतिहै, जानौसकलसुजान ॥
चौपाई—गेहूँचारसेरमँगवावै; मेथीडेढसेरमिलवावै ॥
महिषीतक्रलेउदशसेरा । तीनौयकबर्तनमेंघोरा ॥
मोहरातायगाडुधूरेमें । बीसरोजराखौताहीमै ॥
फेरिनिकासिमहिषिकोदीजै । पाँचसातदिनयतनकरीजै ।

अन्य ।

रंभासुमनतीनिमँगवावै । तीनिरोजलगमहिषिखवावै ॥

अन्य ।

लेउकबूतरबीटमँगाई । जोजंगलमेंरहैसदाई ॥
एकछटाकप्रातिनितदीजै । तीनिरोजमेंमाहिषिमतीजै ॥

अन्य ।

दोहा-बबुरकांटकोकाटिकै,ग्रहकोलेयबनाय ।
ताकेभीतरकिर्मजो, ताकोलेउमँगाय ॥
चौ०-सौतकिर्मनितप्रातखवावे । पांचरोजयाहीविधिपावै ॥

अन्य ।

मेथीकोभुसुलेउमँगाई । आठरोजलगुदेउखवाई ॥

अन्य ।

मेथीडढपावडखवावै । तीनिचारिदिनप्रातखवावै ॥

अन्य ।

माँचडकीजरखोदिमँगावै । प्रातैएकछटाँकखवावै ॥
पहिलामहिषीकोयहदीजै । सतयेंदिनतेहिमातीलीजै ॥

अन्य ।

पीतवर्णजोवर्रदिखावे । ताकोछत्तरानोचिमँगावे ॥
जेहिछत्तरामोंअंडनहोई । एकछटाकपिसावोसोई ॥
जासुनिवृक्षत्वचाकोजारा । ताहिबराबरिपीसिविचारा ॥
महिषीकोदिनसातखवावै । एकखुराकप्रमाणबतावै ॥
महिषमातनदवाबखानौ । यामेंकछुसन्देहनमानौ ॥
अथ जोमहिषीनाँघेपरठहरतीनहोयउसकाउपाय ॥
दोहा-जबमहिषीमातीलखे, गोहूँदेउभिजाय ।
चारिसेरपक्केतवलि, घरमेंराखुधराय ॥
चा०-मैथुनकर्महोयजबभाई । तेहिपाछेसबगोहुँखवाई ॥

अन्य ।

लेउलसोहरपातमँगाई । दुइसेरपक्केदेउखवाई ॥

अथ गोमहिषीकेवियायकेमहीनाकाप्रमाण ।

नौदिननौमहिनाचालिजाई । कहैंसुजनतबगायबियाई ॥
दशदिनदशमीहनाह्वैजावै । तबमहिषीबच्चाकोव्यावै ॥

अथ गोमहिषीबियायकेमहीनाअशुभ ।

दोहा–ऋतुवर्षाभादौंजबै, सिंहकेरविहोय ।
गायबियानीजानियो, महाअशुभफलसोय ॥
चौ० माघमासमेंमहिषीव्यावै । जोसंक्रांतिमकरकहिगावै ॥
कठिनदोषहैशुभसोनाहीं । तुरतब्राह्मणैदीजैताहीं ॥ गोमहि
इनमासमेंव्यावै । की जियजायकिसानैखावै ॥

अथ यंत्रसर्वपशुओंकीबियातीबेरक्लेशहोइसोनिवारण ।

५५	६२	१५	७
६	७	५१	५८
६१	५६	८	१
४	५	७६	६५

दोहा––सकलपशुनकोदेखिये, व्याति
इतेहिबेर । दुखपीडाबहुतैहुवै, ताको
निवेर ॥ केसरिगोरोचन मिलै, भो
पत्रपरलाखि ।
कण्ठाविषेबंधनकरे, मेटैदुः खविशेखि ॥

अथ जोमहिषियोंकेबियानेपरभेलीनिकलतीहै–
उसके लक्षण और दवा ।

दोहा–बाजीमहिषिनकोसुनौ, व्यानेपरपहिचान ।

भगमाभेलीनींकरै, दवाकरौबुधवान ॥

चौ० पहिलेथोरीनिकारिदेखावे। धीराधीराबहुबाढिजावे॥
कोइकोइकीआँतैंसबानिकरैं। सोमहिषीयमपुरकोसिधरैं।
दवा मींसिदुइतोलमँगावे। ताहिचुपीरेभलीबैठावे।
महिषीकोबैठननाहिंदीजै। एकरोजतकठाढिरहीजै ॥

अथ दवा खानेकी।

आगियानामघासइकजाना। तालमखानकिसकलबखा-
नो ॥ शरदजगहमेंजामतसोई। गिरहगिरहचौपातियाहोई।
लंबेपतरेपातसोजानो। बिनकाँटनकोतेहिपहिचानो॥ ताकीजर
पैसाभारिलीजे। यवकेआटामिलैसुदीजे ॥ तीनिदिवसलगु-
प्रातखवावे। भेलीनाहिंकबहूँदरशावे ॥

अथ सुखरनारोग ॥ गोमहिषीकादूध सूखिजातिहैतेहिकी दवा।

दोहा—रोगसुखरनाजानियो, गोमहिषीतनुसोय।
जबहींबच्चाकोजनै, दूधअधिककरिलोय ॥

चौपाई—कछुदिनपीछेजायसुखाई। उतरैदूधनआवैभाई।
याकीदवासुनोमनलाई। तनकोदूधजोकरोउपाई॥
दवा—पथरचटाकीजरमँगवावै। गोलपातकेजौनदेखावे॥
छोटोबिरवाकोपहिचानौ। एकछटाँकप्रमानबखानौ॥
लेउकरेलापातमँगाई। आधपाव ताको तौलाई॥
दूनोदवामहीनपिसावै। साँझभोरदिनसातपियावै

दोहा–सोंठिमिठाईपावयक, साँझभोरदिनसात ।
यवपिसानमेंदीजियो, बढैदूधअधिकात ॥

अथ गोमहिषीदूधबढावैकोमंत्र–
इन्द्रजालकोहै ।

" ॐ ह्रींकरालीपुरुषंमुखंहंश्रींठंठः "

मंत्रविधि ।

चौपाई–गाँडरकातृणदेतमँगाई । तेहिमेंचारोंथनाझवाई ।
पढैमंत्रमुखफूकतजावै । अष्टोत्तरशत १०८ बेरकरावै
सातदिनालौसाँझसकारे । बढै दूधतन अधिकापियारे ॥

अथ यंत्र गोमहिषीकेदूधबढानेकोगरेमेंबाँधैका
इन्द्रजालकोहै ।

दोहा–भोजपत्रपरयंत्रलिखि, अष्टगंधसोजानि ।
गोरोचनकेसरीकितौं, यामेंकहौंबखानि ॥

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

गूगुरकीताहिधूपदै, बाँधिकंठमें देय ।
बढैगोमहिषितन, सकलरोगहरिलेय ।

अथ गोमहिषितनकेदूधबैढवेकीदवा ॥

दोहा–दूधबढावाजोचहो, कीजो द
विधान । रोजदुहौनितनितबढै, जानौचतुरसुजान ॥

चौपाई–लेउसतावरिमूलखादाइ । आधपावनितपीसिपि
याई ॥ एकमासलगुयाविधकरै बाढैदूधदुःखतनुहरै ॥

अथ सर्वचौपयाकेरोगकीपहिचानऔरताकेलक्षण ।

दोहा—बहुतपशुनकोकहतहौं, लक्षणरोगप्रकीत ।
षटविधितेपहिचानिये, सुनौश्रवणदैमीत ॥
पित्तवात अरुशीतते, रोगहोइपशुअंग ।
लक्षणतेपहिचानियो, दवाकियेरुजभंग ॥

अथ पहिलीपहिचाननेत्रलक्षण ।

दोहा—प्रथमजबैअच्छाहतो, पशुकेनेत्रविलोकु ।
फेरिजबैरुजमेंग्रसो, देखुपपोटासोकु ॥
चौ०—अच्छेमेंकारंगतिहोती । रोगभयेतेहिकैसीगती ॥
अरुणवर्णजोकोयादेखै । तौगरमीकोखललविशेषै ॥
सकलशरीरहरारातिहोई । याकीदवाकरौ अबसोई ॥
श्वेतवर्णनेत्रनकेकोया । शरदीतेतेहिरोगदबोया ॥
पीतवर्णजोकोयादेखै । वाततेवादीतनुअवरेखै ॥

अथदूसरीपहिचानमूत्रपरीक्षा ।

चौ०—अरुणवर्णअरुथोरामूतै । तौगरमीहैपित्तकिबहुतै ॥
श्वेतवर्णमूतैअधिकारी । शरदीतनुमेंबहुतैभारी ॥
पीतरंगकामूत्रदेखावै । वाततेबादीरोगकहावै ॥

अथ तीसरीपहचान—गोबरकेलक्षण ।

चौ०—गीलापतरागर्मजोहोई । गरमीतअसगोबरहोई ॥
बहुतसूखजाहगैबनाई । याहूगरमीतेठहराई ॥
ढीलापतराशीतलहगै । शरदीकीबदहजमीलगै ॥

अथ चौथीपहिचान—नाडीपरीक्षा ।

चौ०—श्रवणननीचेमूलमेंजानौ । दुइरगदूनौओरबखानौ
घमकैचलतिहवैसोइनित । बहुतख्यालकीन्हेआवैचित ॥
अतिहिउतालतटिकाचलै । तोजानोगरमीतेहिखलै ॥
सुस्तनाटिकाचलैबनाई । वातधर्मशरदीतेआई ॥
इकलक्षणनारीलखिकहौ । वातपित्तकफतेरुजलहौ ॥

अथ पांचवींपहिचानकानछूनेकीपरीक्षा ।

चौ०—श्रवणपकरिकैदेखोभाई । गरमगरमसोजानौआई ॥
तौगरमीतेरोगबखानौ । दवाकियेतनुनीकोजानौ ॥
शीतलश्रवणदेखिकैकहिये । शरदीतेरुजयाकोलहिये

अथ छठइंपहिचान मिजाजपरखैकेलक्षण
पशुकोहेवादेखाचाहिये ।

दोहा—जोचाराकमखातहै, तौगरमीपहिचान ।
सुस्तबहुतबैठैउठै, दरदपेटमेंमान ॥

चौ०—चुपकेठाढरहैपशुजबहीं । शरदीतेरुजकहियेतबहीं ॥
जोघबरायछिनकअकुलाई । तौगरमीतेरुजअधिकाई ॥
जोनशास्त्रमेंलक्षणनरके । तौननहींकछुभाषैपशुके ॥
इतनेहीलक्षणअवरेखै । शरदीगरमीकफताहिलेखै ॥
हाथ पांयपशुसकलशरीरा । कवनजगहयहरोगगँभीरा ॥
इतनादेखिचिकित्साकरिये । रोगघटैमनधीरजधरिये ॥
अथमंजलिबहुकोशजैजाय । चलाजायाफिरिबंदहोजाय ॥
चलैनपावैबहुथकवाई । उसकीदवाहोइअजमाई ॥

दोहा—जायबंदभरिजायवृष, सोहोवैबेकाम ।
ताकेलक्षणपरखिके, दवाकियेआराम ॥
छंद—जेहिबारचलैवृषबहुतकोस । भरिजायतबाहिंपावेकलेस ॥
लँगरायचरणगरुएपरंत । मगफैलेपायनबहुचलंत ॥
रगमोटीचारौचरणहोंय । वृषथोराचालिफिरिरुकैसोय ॥
बहु सुस्तरहैठाढोअधीर । अतिमहनातिमेंयहरोगपीर ॥

दवा ।

चौ०—बाँधौवृषजहँपवननलागै । बदमकानउजियारो भागै ॥
कम्मरउपरकसौदुइचारी । गरमीतनलागेबहु भारी ॥
फिरिमदिरादुइबेरपियावै । साँझभोरयाहीविधिपावै ॥
निकसैअंगपसीनाजबहीं । खुलिजैहै यह जानौ तबहीं ॥

अन्य ।

चौ०—गूगुरसज्जीआँबाहरदी । टकाटकाभरिकीजैगरदी ॥
तोलाएकअफीममँगावै । थोरेपानीमेंघोरवावै ॥
यवआटाकोलेउमँगाई । वहिपानीमेंताहिसनाई ॥
ताकीएकटीकियाकरौ । वाकेबीचमेंओषधिधरौ ॥
लिविदिजानअफीमकीहोई । धरौमध्यमेंदवाके सोई ॥
फिरिगोलायकलेउबनाई । तापरमाटीदेउथोपाई ॥
आगीकीभुलिभुलिमेंधरै । जबपरिपक्कहोयतबनिकरै ॥
माटीफोरिफेंकितेहिदीजै । आटासहितपीसिकरिलीजै ॥
षटगोलीतेहिलेउबनाई । शामसुबायकएकखवाई ॥
तीनिरोजजोवृषवहपावै । चरणभरेखुजलदीलिजावै ॥

अन्य दवा । मालिसकी ।

गोलिनदारकटैयालावै । ताकेपातासबतोरखावै ॥
पीसिकूटिरसलेउनिकारी । दुइसेरपक्केवजनविचारी
गेरूएकछँटाकपिसावै । रेंडीतेलदुगुनमिलवावै ॥
आगीमेंकछुगरमकरीजे । गुनगुनवृषतनमरदनकीजै ।
जूडनीरदानामतिदीजे । अरुपरहेजबहुतविधिकीजै ॥
पानीकीबहुप्यासदेखावे । कछुकजवायनिमिलैचुरावै
याहीजलवृषपियनकपावे । अरुशरदीतेबहुतबचावै ॥

अन्य । सेंदुरफवटी ।

दोहा–सेंदुरफवटिखवाइए, जायबंदभरिजाय ।
मैजलिमेंथकिजायबहु, चलैनएकोपांय ॥

चौ०–याकीदवासुनौमनलाई । खायेतेजलदीखुलिजाई ।
सेंदुरऔरसोहागालीजे । जौनचौकियानामकहीजै ।
मालकाँगनी गोघृतलावे । गुडपुरानतोहिमध्यमिलावै
तोलाएकएकसमकरौ । पीसिछानिएकैमैंधरौ ॥
सकलदवाघृतमेंभुँजवावे । ताकीगोलीपाँचबनावे ॥
गोलीएकप्रातनितखाई । जायबदनकोखोजनशाई

अन्य । मैंनें अजमाईहै ।

दोहा–वृषभभैरपगनाचलै, जायबंदह्वैजाय ।
ताकोऔटिदीजिये, सतयेंदिनखुलिजाय ॥

चौ०–नरकचूरअरुआँबाहरदी । पक्कपावपावकरुगरदी
गूगुरएकछटाँकपिसावै । तीनौदवामिलायधरावै ॥

गोघृतलेउमिठाईभाई । पावपावदूनौतौलाई ॥
एकसेरमूदाघिगुवारी । पक्कौतौलेउअनुसारी ॥
घिगुवारीघृतऔरमिठाई । बटुईमेंतीनौधरवाई ॥
एकछटांकदवामिलवावै । अग्निपकाइवृषभमुखनावै ॥
साँझसमययहऔटीदीजै । सतयेंदिनतेहिनीकोलीजै ॥
एकपहरतेहिकैनाकीजै । जायनंदपगभरोहरीजै ॥

अन्य । औटी ।

चौ०–कुटकीकचरीघोढवचलावै । डेढपावतीनौपिसवावै
बीलनामयकदवाकहावै । ताकोतोलाएकमँगावै ॥
गूगुरताहिबराबरिडारौ । सकलपीसिबटुईमेंधारौ॥
एकसेरपानीभरिदीजै । अग्निचढायपकायसोलीजै ॥
दुइउबालवामेंजबआवै । तबउतारिसीराकरवावै ॥
पीछूबीलपीसिमिलवावै । नारिभरायसाँझमुखनावै ॥
पवनबचावनबहुतैकरै । भरोदुःखसतयेंदिनहरै ॥

अन्य । औटी । रास्ताचलेथकिगाहोयतेहिकी ।

दोहा–चूनाहरदीलीजिये आधपावपरमान ।
सेरमिठाईडारुतेहि, औटीकरौविधान ॥
साँझसमयवृषदीजिये, जोथकवाहीजातु ।
भोरभयेनीकेचलै, याहीतपहिचानु ॥

अथ भरेवृषभकेदागेकीविधि ।

दोहा–जौनवृषभभरिजातिहै, ताकोकरौंबखान ।
बहुतदवाकरिनीकनहिं, दागौताहिसुजान ॥

चौ०—नथुनापरदुइदागदेवावै । नीचेदुइकोहानकेलावै ॥
दूनोदुइकोखिनमेंदीजै । पीठीऊपरदुयेकरीजै ॥
दुमकीजरमेंदुयेदेवावै । कंधाऊपरदुइकोलावै ॥
दुवोजंघमेंदुयेकरावै । याविधिवृषकोदागदेवावै ॥

अथ भरेवृषभके बुझावको वफारोदेनेकी विधि ।

चौ०—बंदमकानवृषभलैबाँधो । फिरिरचनायाहीविधिसाधै
ईंटैचारितलकरवावै । एकचरणतरएकधरावै ॥
खट्टातकलेउमँगवाई । तेहिपरथोराथोरडराई ॥
निकसैवाफचरणमेंलागै । ताहीसेंदुखवृषकोभागै ॥
जवासिरायवहईटबनाई । दुहरेपदयाविधिकरवाई ॥
सातरोजलगकरौबिधाना । चारौचरणदवापरमाना ॥
बहुतनीकयहकैरजोकोई । नीकनहोयतोदागैसोई ॥
दागैसकलरूपहरिजाई । दागुबचायदवाकरवाई ॥

अथ महिषभरिजायरास्ताचलैमेंताकोउपाय ।

दोहा—महिषभरैपगनाचले, ताकोकरोउपाय ।
चारौंचरणकेजंघमें, अरुचुतरीमेंजाय ॥

चौ०—छूराभेमछनालगवावै । रक्तगिरैदुखदूरिकरावै ॥

अथ महिषावावृषभलादेतेपीठिवाछातीसू ।
जिजायताकोउपाय ।

दोहा—महिषाअरुवृषजोलदै, लादेपीठिसुजाय ।
कीछातीसूजेअधिक, वाकीदवाकराय ॥

चौ०-खैंचिलदानकसेतेसूजै । तापरकूपडाभिजैधरीजै ॥
जबलगसूजमिटैनहिंधरौ । ऊपरजलटपकावाकरौ ॥
यहितेजोअच्छानहिंहोइ । औरदवाकीजैपुनिसोइ॥

अन्य-दोहा-गाईकेदूधमें, थोरानिमकामिलाय ।
आगीमेंपकवायकै, कम्मरटूकाभिजाय ॥

चौ०-तीनिरोजबाँधौउठिप्राता । सोथमिटैतनुदुखामि-
टिजाता ॥

अन्य-सोवाबीजछटाँकपिसावै । पातसमाखूभस्मकरावै ।
ताकोदुइतोलामिलवाई । औरदवासुनिलीजोभाई ।
गरगौवाकीबीटमँगावै । तोलाएकताहिमिलवावै ॥
सकलपीसिपानीमेंधरौ । गरमकरायसूजमेंचुपरौ ॥

अन्य-लेउमुसब्बरकोमँगवाइ । जौनकमंगरिनामकहाइ
पीसिगरमपानीमेंकरिकै । लेपनकरौसूजपरधरिकै ॥

अथ रोगकोनाउँगरवा दूसरानाउँपट्टा ।

दोहा-महिषमाहिपिकेहोतिहै । गरवारुजमुखमाहि ।
दूसरपट्टानामकाहि, कोउकोउवरणैताहि ॥

लक्षण ।

दोहा-मोटीरगपारिजातिहै, जीभतरेरँगश्याम ।
तारुजकोपहचानियो, दवाकरौअभिराम ॥

चौ०-चाराखायतनुकुनहिजानौ । चिपिराचिपिरमुख करि-
सोमानौ ॥ जीभकाढिनथुनाकोचाटै । रसना-
नासा तकनहिं आँटै ॥

नितप्रातिदेहजायदुबराई । याकीदवाकराओभाई ॥
गिरातरेरगमोंटिदिखावै । नीलवरणतेहिफस्तखोलवै ॥
जौनझलारिहसारिकहीजै । कांटासहिततोरितेहिलीजै ॥
तेहिकांटाभेरगचिरवाई । निकरैरुधिरनीकहोयजाई ॥
तेहिपाछेहरदीपिसवावै । भुरजीछानिकरहुवाँलावै ॥
दूनौमिलैमलौरगऊपर । नीकहोयरुजमुखकोदुखहर ॥

अथ मसाला महिषीकेमन्दअग्निहोइजाय ताका ।

दोहा—मन्दअग्निहोजातिहै, महिषीकेतनआय ।
भूखघटैतनबहुलटै, चाराकोनाहिखाय ॥
चौ०—कुम्भीकोविरवामँगवावै । पावएकताकोपिसवावै ।
यवआटाअँगदेउखवाई । आठरोजपरमानबताई ॥

अथ घमहाँवृषलक्षण ।

दोहा—जौनवृषभकेदेहमें, घामअधिकदुखदेय ।
जलमेंपैठेशीघ्रही, घमहाँकाहियेसोय ॥
चौ०—जलमेठाँढरहैनाहिंडोलै । घामदेखिबहुतैदुखझेलै ॥

पहिचान ।

बडेबडेरोमफटेजेहिदेखौ । घमहाँवृषभताहिअवरेखौ ॥
जोकिसानलैहैयाहिकाहीं । सदाशोचकरिहैमनमाहीं ॥
कामलियेपरजीवचोरावै । दवाकियेकोइनीकदेखावै ॥

दवा ।

सर्षपतेलआधसेरलीजै । प्रातनारिभरिपियनकोदीजै ॥
पक्कीतौलाकैहैपरमाना । चालिसदिनलगिकरौबिधाना ।

फिरिछाहीतेधामेबैठे। कबहूँनाहींजलमांपैठे॥

अथ वृषभतखाँसेके लक्षण।

दोहा-वृषभचलैमारगबहुत, काठिनभूमिजोहोय।
ताकेपगतखाँसिहैं, तखारगरैसोय॥

चौ०-मगकोचलनात्यागनकीजै। पशुकोअच्छाजलदीलीजै॥
कीकछुवस्तरटाटाभिजावै। चारोंचरणनमेंबँधवावै॥
ऊपरतेजलतेभिजवाई। नीकनहोयतौऔरउपाई॥
अन्य-मोमगरमगुनगुनटपकावै। तखापुष्टह्वैबलपावै॥
अन्य-वृषभहोयतखाँसाजोई। चारोंचरणलंगकारि सोई
भरोचरणदुइलंगकरावै। यहिलक्षणतेअलगबतावै॥
औरोयतनभरेकीकरिये। वासोंनीकहोयसुख रहिये॥

अथ कूलउतरेकी दवा।

दोहा-पिछलेपदकोजोरजो, खिसिकिजायलँगराय।
चलैनपावैदुखितबहु, ताकोकरोउपाय॥
उतरैकूलजोवृषभको, गुखुरूडोलैजानु।
एकैविधिदोनोंहुवै, कछुकफरकपहिचानु॥
अगिलेपदकीगूखरू, पिछिलेपदकहिकूल।
एकैदवाउपाययक, दुनहुनमें है शूल॥
चौ० हाथेमेंवृषकूलचढ़ावै। शूकरवसबहुदिनमलवावै॥
यासोपुष्टबहुतविधिहोइ। औरउपायकरोमंतिकोई॥

दवा-झिटका चोटमोच गुखुरूडोलै कूलउतरैकी ।

चौ०-झिटकाचोटमोचजेहिलागै । वाकीदवाकरौदुखभागै ॥
षोडशमुरगीअंडमगावै । तोलाएकअफीममिलावै ॥
आधसेरशूकरबसलीजै । सर्षपतैलपावइकदीजै ॥
आधपावलेआँबाहरदी । पीसिमहीनकरौबहुगरदी ॥
गेहूएकछटांकपिसावै । सकलमिलायघेपिधरवावै ॥
मालिसखूबकरैबहुरगरै । कंडाभेडसेकाफिरिकरै ॥
साँझभोरदुहुबेरलगावै । सूजैचोटनीकहतेहिभावै ॥
पंद्रहदिनयाहींविधिकरै । तनुकीचोटसकलविधिहरै ॥

अथगुखुरूअगिलेपैरकेडोलैकोउपाय ।

दोहा-गुखुरूतबहींटरतिहै, जबकरिहैबहुजोर ।
गुखुरूवाकोकहतिहैं, जौंनजोरकोठौर ॥
गफलतमतिवाकीकरै, ताछनदवाकराउ ।
मूँजकआँडरकाथलै, दूसरपगबँधवाउ ॥
गंठाघुटुनापरकसो, जासोंबहुलँगराय ।
यहउपावजोकीजिये, तासोंनीकदिखाय ॥

चौ०-अधिकबूततेहिपगपरकरै । गुखुरूवालासोभुइधरै ॥
तीनिचारदिनजोबँधवावै । नीकनहोयतोदवाकरावै ॥

अन्य ।

पैरहाथधरिखैंचोभाई । गुखरूटरीबैठिजबजाई ॥
पट्टीबाँधदेउदिनराती । अरसीतेलुनाउबहुभांती ॥

अन्य ।

याहुतेनहिंनीकदेखावै । सुवरकिचरवीवसमलवावे ॥
औरकछुकादिनदेउखवाई । गुखुरूनीकिबैठितबजाई ॥
दूनौंदवाबहुतअजमाई । पट्टीखुलिबसकोमलवाई ॥

अन्य ।

सुवरकिविष्टागरमकरावै । गुखुरूऊपरताहिमलावे ॥

अथ गुखुरूदागैकीविधि ।

दोहा-चारौंतरफगरेरिकै, गुखुरूदेउदगाय ।
नीकहोयलँगरामिटै, करौयतनयहजाय ॥

अथ-कोईअंगमेंचोटलागेतेसूजिआवेताकीदवा ।

दोहा- जौनपशूकेअंगमें, चोटचपेटलगाय ।
तासोंसूजनिदेखिये, दवाकियेदुखजाय ॥

चौ०-आंबाहरदीचँदसुरलीजै । इयामातिलतीनोसमकीजै ॥
बहुतमहीनपीसुपानीमें । अग्निपकायलेपुसूजनिमें ॥
सामसुबहदुहुँबेरलगाई । नीकनहोयतोऔरउपाई ॥

अन्य ।

रेंडीबेनवरगूदीलीजै । अरसीइयामातिलसमकीजै ॥
चारौदवापीसिपकवावे । पशुकीसूजनिपरचुपरावे ॥

अन्य ।

हरदीतोलेदुइपिसवाई । साबुनतोलाएकमिलाई ॥
अग्निमध्यचुरवौपानीमें । लेपकरौपशुकीसूजनिमें ॥

अन्य ।

अँविलीऔरसँभाह्लीजै । रनिमकांयसबपातभनीजै ॥
छालीलेउसहोरांचिटिकुवां । औटिपात्रतेहिदीज्योधुवां ॥
जबैनीरिकछुजायसेराई । देउ तरेरा मालि मालि भाई ॥

अन्य ।

दोहा-माटीलोनाळीजिये, जोह्यवालमेंहोय ।
पानीमेंऔटायकै, मलुसू जनिपरसोय ॥

अन्य ।

चौ०-जोनदवामेंनीकदिखावै । तौसूजनिपोटीशसिकवावै ।

दवा ।

दुइगांठी लेप्याजमँगाई । तोलादुइहरदीतेहिलाई ॥
चँदसुरजाकोहाळिमकाहिये । दुइतोलाताहीमेंलहिये ॥
आधपावगोहूँकीमैदा । घृतमें सानिकरीबहुफैदा ॥
सकलपीसिपाटरीदुइकरै । सहतिसहातिसेंकेदुखहरै ॥

अन्य ।

जोनहिंअच्छीदेइदेखाई । बारमुडायजोंकलगवाई ॥
अथ सूजनिकोईअंगमेंशरदीतेहोयताकीदवा ।
दोहा-गेरूअजवायनिपिसै, पानीमिलैपकाय ।
सूजनिशरदीकीजहां, लेपकियेबहिजाय ।

अन्य ।

गेरूकारीजीरलै, पीसिगरमकरवाय ।
गुनगुनकारिलेपनकरो, सूजनीकहोइजाय ॥

अन्य ।

अंबरबेलिमकोयले, औरसँभारूपात ।
तीनौपीसौगरमकरि, लेपकरोउठिप्रात ॥

अन्य ।

रेंडीमेनबरकीमिंगी, तोलेचारिमँगाव ।
तोलाएकमुसब्बरै, पानीमेंपिसवाव ।
आगीमेंतेहिचुरैकै, शरदसूजमेंजान ।
लेपनकरुदिनतीनिलग, प्रातसाँझपरमान ॥

अन्य ।

गूदलेउविगुवारिको, एकछटाँकनवीन ।
तोलाएकमुसब्बरै, पीसिमिलैतेहिदीन ॥
आगीमेंगुनगुनकरौ, मलुसूजनपरसोय ।
पाँचसातदिनकोकिये, वृषभअरामीहोय ॥

अन्य सेंक ।

पथराएकमँगायकै, कितौईटकरुतात ।
धीराधीरासेंकवृष, शरदसूजमिटिजाति ।

अथ कोईअंगमेंगरमीतेसूजनिहोय ताकी दवा ।

चौ०–जोगरमीतेवरमदेखावै । ठंढोदवालेपचुपरावै ॥ गेरूघनियांईसरगोला । यवकोआटाताहिसमूला ॥ सकलदवासमलेउपिसाई । छिरकामिलैपकायलगाई ॥

अथ कोईअंगकेगाँठि गिरहजोरमेंजोकठोरबहुत हैजाय गुम्मरानिकरिआवै ताकीदवा ।

दोहा-गाँठिगिरहपशुकीलखै, जोकठोरहोयजाय ।
शरदीगरमीदुहुनते, ताकीदवाकराय ॥
चौ०-अतिकठोरगुम्मजहँह्वैजावै । सुस्तरहैमगचलैनपावै ॥
सोंठिपीसिछिरकामेंलीजै । गरमकरायलेपकरिदीजै ॥

अन्य ।

कोचिलागनिकैसातमँगावै । अंबरबेलिरूसकीलावै ॥
घोडवचलहसुनसमपिसवाई । सर्षपतेलमध्यपकवाई ॥
शरदसूजपरमालिसिकरै । अठयेंदिनगुम्मजसबहरै ॥
जो गरमीते सूजनिजानौ । ठंढीदवाउपरतेआनौ ॥
वाहीविधितेलेपकरावै । नीकहोयतबसुखउपजावै ॥
अथ कुम्हेडीरोगलक्षण ॥ शृंगनकेनीचेकाहाडग-
लिजाताहै

दोहा-नामकुम्हेडीरोगहै, वृषभशृङ्गमेंहोय ।
ताकेलक्षणकहतहौं, जानिलेउसबकोय ॥
चौ०-नथुनातेपानीबहिआवै । प्रथमकछुकदिनकमदेखरावै ॥
धीराधीराबहुतबढतिहै । शृङ्गमूलकोअस्थिगलति
है ॥ थोराथोराटेढदेखावै । फेरिलटकि माथेपरआवै ॥
शीशकेरिजोअस्थिकहावै । तौनसरैकछुगूदगलावै ॥
शोणितमिलानीरबहुबहै । कछुकलबाबदारतेहिकहै ॥
खालसरैमाथागलिजाई । शृङ्गगिरैंनहिंकछूविसाई ॥
महाकठिनयहरोगबखानौ । जानौकालआयनियरानौ ॥
हम देखा यहरोग कलेशा । तातेलक्षणलिखेसुदेशा ॥

महीनादुइचारिकरुजरहै । पीछूवृषभमृत्युकोगहै ॥
पशुकोदुइमनअंधाकैडारतैंहैंभेलाँवालगाइके ।
दोहा—जोकोउपशुकेनेत्रमें, देयभेलावँलगाय ।
सोआँधरहोयजातहै, सूजनिअधिकदेखाय ॥
चौ०—कुटकीबहुतमहीनपिसाई । वृषकेनेत्रनदेउभराई ॥
अथ वृषभवामहिषकेकाँधेमेंझिटकालागेकीदवा ।
दोहा—झिटकालागेकांधमें, वृषकोदरदकराय ।
वाकीदवाकराइये, मालिसतेसुखपाय ॥
चौपाई—मुरगीकेअंडामँगवावै । साँभरिनमकपीसिमिलवावै ॥
चारिपाँचदिनमालिसकरै । पीरजायाझिटकासबहरै ॥
अथ कांध वृषभ वा महिषकासूजै वाके
फूटे पीबआवै, ताके लक्षण व दवा ।
दोहा—जौनवृषभहलशकटरथ, कबहूँचलानहोय ।
एकाएकीजोतिये, सूजकाँधलगिसोय ॥
चौपाई—भैंसाकोगोबरमँगवावै । जलसोंमिलैपकायलगावै ॥
अन्य—लेंडीऊँटकेरिपिसवाई । खारीनमकामिलाय पकाई ॥
सूजनिकाँधपरथोपवावै । नीकहोयबहुतैसुखपावै ॥
अन्य—सूखीहरदीपीसिमिलावै । याहूतेसूजनिमिटिजावै
अन्य—शूकरकीचरबीबसचुपरै । सूजजायमजबूतीपकरै ।
अन्य—लेउगोहकीवसमँगवाई । काँधमलायपुष्टकरवाई ॥
अन्य—मैंजलिचलैकाँधजेहिसूजै । तापरदवालेपयहकीजै ॥
आटाचनाकेरमँगवावै । आँबाहरदीपीसिमिलावै ॥

गोहूँकीमैदासमतीनौ । दूधघोरायपकावनकीनौ ॥
काँधेपरजोलेपनकरै । सूजनिमिटैकाँधदुखहरै ॥
अन्य—हरदीदुइतोलापिसवाई । मासेतीनिअफीममिलाई ॥
सर्षपतैलैएकछटाका । एकैमेंकरुगरमसुपाका ॥
वृषभकाँधमेंमालिसकरै । सूजनिजायदुःखकोहरै ॥
अन्य—अरसीकोजोतेलमलावै । जबतबसोमजबूतीलावै

अथ काँधफूटिबहै वा पानी आवैताकोमल्हम ।

चौपाई—संगजरातमोमकोलीजै । डारिसफेदातामेंदीजै
टकाटकाभरिलेउसुजाना । ताकेपीछेऔरविधाना ॥
फूंकिबनातपुरानीलीजै । जूतीचर्मकिभस्मकरीजै ॥
गोगोबरकाविनुवाँकंडा । लेडीगोलहोइसबखंडा ॥
अग्निमध्ययाकोफुँकवावै । तीनौंएकछटांकमिलावै ॥
डेढपावअरसीकोतेला । अग्निपकायदेइसबघेला ॥
दोहा—चुपरोकाँधेमेंसुघर, यहमलहममनलाय ।
जबलगघावनपूरिहै, मेहनातिबंदकराय ॥

अथ काँधेमेंजोबारनजामैंसोबारजामैंकातेल ।

दोहा—जाहिवृषभकेकाँधमें, बारजमेंनहिंहोय ।
ताकोतेलबनायकै, एकमासमलुसोय ॥
चौ०—सेंहुढापलईनरमजोहोई । एकहाथभरिकाटिसोलेई ॥
कांटाबकलासबछिलवावै । गटियाटुकडामिहींकरावै ॥
सर्षपतेलमध्यपकवावै । भस्महोइतबघोटकरावै ॥
यहमलहमकीमालिसकरै । जामैंबारकाँधरुजहरै ॥

अन्य ।

घोंघालेउसजीवमँगाई । सर्षपतेलमेंभस्मकराई ॥
यहमलहमकाँघेमेंचुपरौ । जामेंकचघीरजमनधरौ ॥

अथ जखमलागेपरजोयहदवालगावैतो
न पाकै न पीबआवै जल्दीसूखै ।

दोहा–मिरचाअरुणापिसाइकै, साँभरिनमकमिलाय ॥
सर्षपतेल मिलाइकै, आगीमें पकवाय ॥

चौ०–जखमकेऊपरदेउबँधाई । नीकहोयजल्दीसुखपाई ॥
पाकैनहींपीबनहिंआवै । दवाकरोजोमनमेंभावै ॥

अन्य ।

इलुको घाउ गहिरनहिं कोई । ताकी दवाकरौ सब कोई
अँबिलीकीपपरीलेआवै । जाहिपेडमेंसूखिदिखावै ॥
ताहिजरायकैकोइलाकरो । पीसिजखमकेऊपरधरो ॥
जल्दीरक्तबंदह्वैजावै । नीकहोयपशुबहुसुखपावै ॥

अन्य ।

कपराकीगद्दीभिजवाई । घाउकेऊपरकसिबँधवाई ॥
पानीउपरचुवावाकरै । पहरतीनिचारिकमनधरै ॥

अन्य ।

खीलसोहागापीसिभरावै । याहूरक्तबंदकरवावै ।

अन्य ।

कच्चीरारसफेदापिसाई । वस्तरफूंकिभस्मकरवाई ॥
जखमकेभीतरजोभरिदीजै । रक्तबंदकरदुखहरलीजै ॥

पहलेजखमकोदेउसियाई । तेहिपाछेकरुदवाउपाई ॥

अथ जखमधोवैकापानीफुरियावगैरहमें ।

दोहा—फुरियाजखमधोवावजो, तौपानीबनवाय ।
याहीतेनीकोरहै, पीछू दवा लगाय ॥

चौ०-नींबपातपानीउसनावे । कितौफटकरीडारिपकावे ॥
यासों फुरियाघाउधोवाई । जल्दीनीकहोयसुनुभाई ॥

अथ जखमसाफकरैकामलहम ।

चौ०—जौनजखममेंपपरीपरै । भीतरदवाअसरनाहिंकरै ॥
ताकोमलहमकरिछुपरावै । पपरीनरमहोयगिरिजावै ।
गोघृतसाँभरिनमकामिलाई । बहुतमहीनापिसाइलगाई ॥

अथजखमलागेतेजोखूननंबदहोयताके बन्दकरैकी दवा ।

दोहा—रक्तचलैपशुकेजखम, बंदनहींदेखराय ।
शृंगवगैरहटूटमें, ताको जतन कराय ॥

चौ०—कम्मरलेउपुरानेमँगाई । भेडरोमजामें लगवाई ॥
कीतोपटेरझमीमँगावै । अथवारुईपुरानीलावै ॥
इनतीनौंमेंएकजरावै । भस्मकरायकेजखमभरावै ॥
भरतैरक्तबन्दह्वैजाई । जोकोइयाविधिकरैउपाई ॥

अन्य ।

जारामकरीकोचपकावै । याहूरुधिरबन्दकरवावै ॥

अन्य ।

माटीकायकठिकरालैके । बाँधिदेउछतऊपरधरिकै ॥

रंडककोरवसूखमँगावै । ताहिजरायधुवांसेंकवावै ॥
पहरएकदुइलेंजोकरै । रुधिरबन्दकरिदुखकोहरै ॥

अथजखमसाफकरैकोमलहम ।

चौ०-सीपीचूनकरहुवांलावै।समकीरअरसींतेलमिलावै
यहमलहमजोकोई चुपरै । साफकरैअरुजलदीपूरै ॥

अन्य ।

हीलिमहरदीसमपिसवावै । पानीमिलैघपिचुपरावै ॥
कपरापरफीहाकरिधरिहै । जखमसाफताहीक्षणकरिहै ॥

अथ मलहमजखममेंपीबआयेपरलगावै ।

दोहा-मलहमभाषौंपशुजखम, पीबपरेचुपराय ।
जलदीनीकोकरतिहै, कीजोयहीउपाय ॥

चौ०-नरियरकेरतेलमँगवाइ । थोराथोराछतचुपराई ॥

अथ मलहमजोजखमकोजलदीअच्छाकरै ।

चौपाई-मुरदाशंखतूतियारारै । पैसापैसाभरितेहिडारै ॥
नींबकीपातकोमललावै । तोलातीनिमहीनपिसावै ॥
गोघृतआधपावामिलवाई । अग्निचढायदवापकवाई ॥
जारिकैभसमहोइंजबजानौ । पथराभेतवरगरिबखानौं ॥
कपराचुपरिगायपर धरे । जलदीनीकहोइदुखहरे ॥

अथजौनजखमअच्छाहोइजाय । सूखै न आवै ।

चौ०-जौनजखमअच्छाहोइजावै । आमिषबराबरिसोदेखरावैं ॥
सूखैनहींपिचपिचाछालै । वाकीदवाकरोततकालै ॥

चूना!गचपुरानापिसवाई । जखमकेऊपरसोबुरकाई ॥
अन्य-गदहालेंडीसूखिपिसावै । घावपिचापिचापरनिथरावै ॥
अन्य-ऊंटाकिपसुरीफूंकिपिसाइ । जखमकेऊपर सोछिटकाई ॥
अथ जखमअच्छोह्वगाहोइ । बारनजामैं वाकीदवा ।
दोहा-जौनजखमनीकोहवे, त्वचामांसभरिपूर ।
जोकचवामेंनहिजमैं, कीज्योदवाजरूर ॥
चौ०-जामेंबारदवाजोकरिये । यहविचारिकेमनमेंधरिये ।
लीलक्तिबत्तीलयउमगवाइ । मानुषथूंकडारिपिसवाई ॥
एकमासभरियाविधिचुपरौ । जामेंबारधीरमनकरौ ॥
अन्य-श्यामातिलकोभस्मकरावै । पानीमिलैपिसायलगावै ॥
अन्य-साबुनअरुलिलबरीमिलाई । पानीपीसि देउलगवाई ॥
अन्य-मुरगीकेअण्डामँगवावै । तेसबपानीमेंपकवावै ॥
ताहिफारिजरदीलेलीजै । वाहिकराहीमेंधरिदीजै ॥
ततकराहीजबहींजानै । जरदीतेलछांडिहैमानौ ॥
सोयहतेलपोंछिकैधरिये । चुपरौबारजमैंजोकरिये ॥
अथ वृषभकीपूछकीबालरिबारसुधाडंडीकटिगिरिजाय तामेंबारजामैंकोतेल ।
दोहा--वृषभपूँछकीबालरी, कौनेउविधिकटिजाय ॥
ताकोतेलबनाइकै, चपरौकचजामिजाय ॥
चौ०-मछरीएकचरगवाकहिये । सर्षपतेलमध्यजरैये ॥
पथराभेतांहिदेउघोटाई । एकमालबालरिचुपराई ॥

अथ पशुकापेटफाटैआँतैंनिकासिआवैंवाकीदवाविधि।

दोहा-वृषमहिषीपशुऔरजे, पेटफाटिजोजाय ।
आँतैंबाहरनीकरैं,ताकोकरौउपाय ॥

चौ०-पक्षीबयाकिझोंझमँगावै।घृतमेंभिजेअग्निफुकवावै
ताकीआँतआचसिकवाई । आपैआपबैठिसबजाई ॥

अन्य-दोहा--माछीकछुकांपिसायकै, आँतनमेचुपराउ।
याहूते धसिजाति है, तुरतै करै उपाउ ॥

चौ० जौपैआँतफाटिकछुजाई । रेशमफूंकिदेउचपकाई ॥
तापीछूयहजतनकरावै । जखममूँजभेतुर्तसिवावै ॥

अथवृषभकेनासूरकोमलहम ।

दोहा-रहैबहुतदिनजखमजो, तौनसूरह्वैजाय ।
पीबबहैपानीचलै, दवाकरौमनलाय ॥

छन्दपज्झटिका ।

सरसोंकतेललेएकपाव । तेहिमोमतीनितोलामिलाव ॥
सोअग्निमध्यलीजोपकाय । फिरदवापीसिपीछेमिलाय ॥
मुरदारशंखहरदीबखान । ले गुलेनारसूखे सुजान ॥
सुरमाकीबटीतामेंमिलाय । फटकरीलउलावाबनाय ॥
अरुबारहसिंगाकोमँगाय । नाखूनअश्वतामेंमिलाय ॥
द्वौअग्निमध्यधरियोसँभारि । जबभस्महोयतबलेनिकारि ।
सबतोलातोलासमप्रमान । फिरितेलमोममें देउसान ॥
अरुआगीमेंथोरापकाय । धरिराखोअपनेधामलाय ॥
करुबातीकपराकीसुवेश । तेहिचुपरिनसूरैकरुप्रवेश ॥

जोबहुतमहीनोछेदयुक्त । सोबातीवैसयकरौ उक्त ॥
सोविवर नसूरैमेंदवाय । दुहुँबेरमासभारिकरुउपाय ॥

अन्य मलहम ।

गोघृतैआधुपावैमँगाउ । अरुमोमटकाभरिजर्दलाउ ॥
पिघिलायतािहदिजोमिलाय । सिंदूररारतूतियाजाय ॥
मुरदारशंखसमलेप्रवीन । इकतोलातोलाकरुमहीन ॥
घृतमोममिलैपिसवाउनान्ह । पूर्वोक्तकरौबातीविधान्ह ॥

अथ मलहमदागेजखमपरलगावैका ।

दोहा—मलहमदागेजखमको, बहुतनीकसोजानु ।
जोवृषकेलेपनकरौ, नीकहोयपहिचानु ॥

छंदतोमर ।

कहिश्वेततिलकोतेल । एकपावभरितेहिमेल
अरुफलभेलावांजानु । गनिकैसोपंद्रहआनु ॥
तेहिकाटिदुइदुइलेउ । सबतेलमें भरिदेउ ॥
अरुआग्निमध्यपकाय । जबजरिभेलावांजाय ॥
फिरिफलनिकासिफकाउ । तबऔरदवामिलाउ ॥
एकटकाभरिलेलार । गंधकनयानियांडार ॥
तूतियाटुवोपरमान । तेहिएकतोलाजान ॥
सबपीसितेलमिलाउ । कछुअग्निमध्यपकाउ ॥
एकदिवसमेंबहुवार । छत लेप करु संभार ॥

अन्य ।

यकपावतिाल्हिकतेल, तेहिमेंसोहागामेल ॥

नवसादरै परमान । दूनौ अधपई जान ॥
तेहिआगिनिमध्यपकाउ । मलहमसोताहिबनाउ ॥

अथ फुरियासबतरहकीनिकसैंताकोउपाय ।

दोहा–फुरियनकेरीदवायह, जोसूजनिपटकाय ।
हजमकरेसबबरमको, पहिलेकरोउपाय ॥

चौ०–सेंबरछालीऔकचनारा । जलमेंपीसिपकावोथारा ॥
फुरियाऊपरदेहुबँधाई । सूजनिहजमकरैसुनुभाई ॥

अन्य ।

गेरूजमुनीछालपिसावै । नींबमकोइयापातमिलावै ॥
पानीमिलैगरमकरवाई । गुनगुनलेपबँधावोजाई ॥

अन्य ।

नींबछालअजवायानिलीजे । रूसपातसमपीसिकरीजे ॥
गुनगुनफारियाहूकोबाँधो । नीकनहोयऔरविधिनाधो ॥

अन्य ।

सोवासागुकेबीजमँगावे । हरदीधनियाँताहिमिलावे ॥
पातबबूनासबसमकीजे । पानीमिलयपीसितोहिलीजे ॥
गरमकरायबँधावैकोई । नीकहोयसूजनिसबखोई ॥

अथ फुरियापकावैकीदवा ॥

दोहा–दवावरमकीजोउपर, बहुबिधिलिखीबनाय ।
जो वासोंपटकै नहीं, कीजै और उपाय ॥

चौ०–फिरिपाकैकीदवाधरावै । जामेंफूटिबहैसुखपावै ॥
चाउरतक्रामिलैपिसवाई । नमकमिलायअग्निपकवाई ॥

यहपुलटिसिफुरियापरधरौ । पाकिबहैविधिवत्जोकरौ ॥
अन्य-मोरेठीअरुपातसँभारू । लेउमयनफलसमसबडारू ।
पांसिनीरमेंगुनगुनकीजै । फुरियाऊपरसोधारिदीजै ॥
याहूपकवै पीवबहावे । औरदवासुनुजोमनभावे ॥
अन्य-गोहूँदरियादहीमिलाई बहुतमहीनताहिपिसवाई ॥
आगिनिपकायदेहुबँधवाई । फूटिबहैजोकरौउपाई ॥
अन्य-दोहा-जोइनतेपाकिफूटिबहि, तौहैनीकविधान ।
नाहींतौथइदवाकरु, जौंनालिखौंपरमान ॥
चौ०-गूगुरसहताभिलायपिसावे । गुनगुनकारिलेपनकर वावै॥
अन्य-अजबायनिगुडमेंपिसवाई । नीरामिलाय अग्निपकवाई॥
गुनगुनलेपकरौपशुकेरे । फुरिया फूटिकहौंमैंटेरे ॥
अथ-विष्टालेउकबूतरकेरी । मुरगीअण्डामिलैबहोरी ॥
देसीराईजलपिसवावै । तीनौमिलैअगिनिपकवावै ॥
फुरियापरतेहिदेउबँधायी । फूटिबहैनाहिंऔरउपायी ॥
तौनरुतरभेताहिचिरावे । बहैमवादनीकह्वैजावे ॥
दोहा-फिरिनीबीकेपात्तलै, थोरानमकमिलाय ।
पानीमेंतेहिपीसिकै, टिकियारचोबनाय ॥
फुरियाचीरीपरधरौ, तीनिरोजदुहुंवेर ।
साफभयेमलहमकरै, नीकहोयनहिंदेर ॥
कीतौटीकियापरचुपरु, थोरासहतलगाय ।
याहूकरिहैसाफबहु, तबमलहमलगवाय ॥

चौ०-जेमलहमऊपर लिखिआए । तेहिलगवाएतेसुखपाए ॥

अथ फ़ुरियामेंमांसनबाढैतोहिकीदवा ।

चौ०-जोनाहिंमाँसबढैफुरियामें । तौयहयतनविचारोमनमें ॥
गिरिगिटएकमारिलैआवै । चरणपूँछसबकाटिफेंकावे ॥
पेटचीरिआँतैनिकराई । तिल्लीतेलमिलायपकाई ॥
आधपावपरमानकरावै । बहुतभस्महोनेनहिंपावे ॥
यहैतैलफरियामेंचुपरौ । जलदीमांसबढैजोकरौ ॥

अथ मलहम ।

बिनुवाँकंडाभस्मकरावै । सीपचूनतेहिमेंमिलवावै ॥
टकाटकाभीरदूनौलीजै । अरसीतेलपावभरिकीजै ॥
यहमलहमजोनित्तलगावै । नीकघाउह्वैहैसुखपावै ॥

अथ जेहिवृषभकेखुरफाटाकरैं पीब वा पानीबहै
ताको मलहम ।

दोहा-खुरफाटैजेहिवृषभके, सदारहैं तेहिफ.. ।
ताकेमलहमचुपारक, पशुहिबचावोचाट ॥
कामीलाअरुमस्तगी, दुवोबराबरिलेउ ॥
बकराकाचर्बीमिलै, पीसिमिहीकरिदेउ ॥

चौ०-यहमलहमजोदेउलगाइ । जलदीनीकहोयसुखपाई ॥

अन्य ।

कुरुकुटअंडाकिबकलीलावै । बकरीशीशकोअस्थिमँगावै
दूनोअग्निमेंदेउजराइ । दुइदुइतालाभस्मीमिलाई ॥

रोगककुस्तावंगकहावै । तोलाएकताहिमिलवावै ॥
श्वेतातिलनकोतेलमिलाई । खुरनकेऊपरचुपरोभाई ॥
तेहिपीछेविधिऔरकरावै । जलदीनीकहोयसुखपावै ॥
तातेजलकरिखुरतहिबोरै । कितौउपरटपकावाकरै ॥
एकपहरानितहैपरमाना । जबलगनीकनहोयसुजाना ॥

अन्य ।

सोनमखीअरुलेउकसीसा । पत्थरचूनतूतियापीसा ॥
निंबुकागदीरसमेंभीजै । मिहींपीसिखुरजखमभरीजै ॥
ताकेऊपरपटकसवाई । बहुमजबूत देउ बँधवाई ॥

अन्य ।

सेंदुरुफदुइमाशेपिसवावे । माशेचारिलौंगामिलवावे ॥
बकराचरबीमोममँगाई । टकाटकाभारिदुवोमिलाई
पावएकगोघृतकोल॰॰ । अग्निचढायपकावनकीजे ॥
सोमलहमखुरऊपरचुपरो । एकमासलगयाहिविधि करो ॥

अन्य ।

अजयपुत्रशिरगूदमँगावे । श्वेतातिलनकोतेलमिलावे ॥
बहुतघेपिकेदेउलगाई । रोगखुरनकोजायनशाई ॥
श्यामातिलनकोमिहींपिसावे । औरसफेदाताहिमिलवै ॥
पावएकढौलेउतुलाइ । केसरि माशे सात मिलाई ॥
तीनौंदवापीसिधीरदीजे । फारयतन औरोविधिकीजै ॥
मुरगीअंडाकिजरदीलीजै । कछुकदवावहताहिघेपिजै ॥
चारोखुरमेंनितप्रीतचुपरै । रोगजायरुवहदुखकोहरै ॥

अथ बदखुरिनकीइलाज ।

दोहा–बैंगनपानीमेंपकै, बदखुरिदेउमलाय ।
श्यामातिलकीभस्मुकरि, पानीपीसिलगाय ॥
झिकवामछरीलायकै, नीरसंगपिसवाय ।
बदखुरिऊपरलेपकरि, रोगदूरिह्वैजाय ॥

अथ प्रथमकीराशाईनाशन ।

दोहा–जखमफूरियापीबमें, माछीलगैबनाय ।
तौनहगेसोंईकहै, फिरिकीरा ह्वैजाय ।
चौ०–दिनभरिकीकछुरुयालनकीजै । सांझभयेसाईल-खिलीजे ॥ ताहिगिरायदेउलकरीते । घाउधोवाउनीरछु-क्राते ॥ फिरिकीरानहिंएकदेखावै । मलहमलैतामेंचुपरावै

अन्य ।

जोकीराबहुदेयदेखाई । बडेबडेबहुदिनकेआई ॥
घोडवचपीसिजखममेंभरैं । कीरामरैंसकलझरिपरैं ॥

अन्य ।

कितोसरीफापातपिसाई । भरौघाउमेंबहुपिसवाई ॥

अन्य ।

पाततमाकूऔरफिटकरी । पीसिघावकीरनमेंभरी ॥

अन्य ।

लकरीएकमुलीमकहावै । ताहिमँगायपीसिभरवावै ॥

अन्य–दवाबुझावाकी ।

कण्डाकीआगीबनवावै । सर्षपतेलहिताहिबुझावै ॥

भरैजखमकीराजरिजावै । नीकहोयजल्दीसुखपावै ॥

अन्य ।

कल्लाबाँसतेलसर्षपमें । ताहिपीसिभरिदेउजखममें ॥

अन्य–टटका ।

मोरपंखकीटिकुलीलीजै । शनिकैसातभौमदिनदीजै ॥
आटामेंतेहिसानिखवाई । कीरामरैंसकलझरिजाई ॥
इनमेंदवाजोएकौकरिहैं । कीरामरैंगिरैंदुखहरिहैं ॥
अथ मन्त्रकीरानिवारण । इन्द्रजालग्रन्थकोमतहै ॥
महतेपटवारीअरुजगाती । वथाजिनाकेपायोकीरागया

मन्त्रविधि ।

दोहा–कीरागोवृषमहिषकै, जोतनुमेंपरिजायँ ।
ताकोमन्त्रविधानकरु, रविवासरदुखजायँ ।
चौ०–जहँचौरहाहोयसुनुभाई । तहँकीटिकरीसातमँगाई ॥
लैलैनामवहीपशुकेरा । जौनाकिमंदुखभयाघनेरा ॥
पढिकमन्त्रवेरकरुतीनी । पशुकेमालिककोंदैदीनी ॥
औरवचनवाहीसोंभाखै । कीरागयेधीरमनराखै ॥
सोमालिकवहिठिकरीलैके । पशुकेमारैअरुयहकहिकै ॥
कीरागयेवचनयहभाखै । चौथेदिवसछतैकोदेखै ॥

अथ मन्त्रइन्द्रजालको ।

ॐनमोकीरारेतूकुंडकुडीला । लालपूँछतेरामुखकीला ॥
मैंतोहिपूछौंकहांतेआये । तोरिमाँसतैंसबकोखाये ॥
अबसबजायभस्महोजाय । गुरुगोरखनाथतोलागहुंपाय ॥

शब्दसाँचापिंडकांचा । मंत्रविधि ।

दोहा-नीबीकीइकडारले, सातबेरपढिमंत्र -
कीराझारैपशुनके, नीकहोययहतंत्र ॥

अथ मलहमकीरानिवारण । माछीनबैठे ।

दोहा-पशुकेतनमेंजोकहूँ, जखमकिमैंह्वैजायँ ।
ताकोतेलबनाउयह, लागेसकलनशायँ ॥

चौ०-सर्षपतेललेउसेरएका । नींबतेलइकपावसोनीका ॥
कनयरकीपातीमँगवावै । औरपियाजकुचिलिमिलवावै ॥
पावपावदूनापिसवाई । एकछटांकमिलायपिलाई ॥
तोलादुइकतूतियालीजै । ताहिपिसायमहीनकरीजै ॥
तेलअग्निमेंदेउचढाई । सकलदवातामें जरवाई ॥
भस्महोयतबरगारिमिलावै । याहीमलहमजखमलगावै ॥
कीरामरैंऔरनहिंपरिहैं । माछीताकेनिकटनजैहैं ॥

अन्य-दोहा ।

जखमकेऊपरलावई यहमलहमजोकोय ।
माछीनहिंसंग्रहकरैं, जलदीनीकसोहोय ॥

चौ०-कुचिलिभेलावमूदनिंबकोरी । आधपावदूनोसमधरी ॥
आधसेरसर्षपकोतेला । अग्निचढायदवातेहिमेला ।
भस्महोयतबलेउउतारी । शीतलभयेरगरुबहुभारी ॥
काचीरारछटाँकमँगावै । श्यामामिर्चदुइतोलालावै ॥
दूनोपीसिमहीनमिलाई । तबयाकोक्षतपरचुपराई ॥

अथ मलहमकंठमालाकोदूसरानामगंडमाला।

दोहा—घींचनरीगरदनसकल, गिलटीबहुपरिजायँ।
पाकेफूटैपीबबहि, कंठमालरुजआय॥
गंडमालकोऊकहै, महाकठिनतेहिजानु।
मेहनतिदवाकराउबहु, तबनीकोपहिचानु॥

चौ०—दंडीचरखीकीमँगवावै। सोपावकमेंततकरावै॥
जेहिदिशिघुंडीगोलदेखावै। तेहिदिशिमेंगूथीदगवावै॥
जितनीगूथीदेयँदेखाई। तिनपर बुँदा देतेजाई॥
सबगिलटीगूथीदगवावै। एकौबाकीनाहिंराहिजावै॥
तापाछेविधिऔरकरीजे। गंडमालरुजतासोंछीजे॥
दुमुहाँसर्पमारिइकलावै। माटीकेबरतनधरवावै॥
खोदिजमीनगाडितेहिदीजे। चालिसदिनपीछूतेहिलीजे॥
धोयसाफकरिअस्थिनिकारै। ताकोमालाकरिउरधारै॥

अन्य।

कीकूकुरकीखोपारिलीजे। वृषकेगरबाँधितेहिदीजे॥

अथ येदूनौमलहमआदमियोंकेवास्तेबहुतअच्छेहैं।

चौ०—दवादारसाबुनमँगवावै। आधपावकीतोलकरावै
तीनिपावसर्षपकोतेला। एकछटाँकमनुषकचमेला॥
अगिनिचढायतेलकोदीजै। तामेंबारडारिसबदीजे॥
जबकचभस्महोयँसुनुभाई। तबसाबुनतेलैमिलवाई॥
यहमलहमहैनीकबखानौ। कंठमालदुखहरनविधानौ॥
जोमानुषकेयहरुजहोई। ताकोमलहमकरुयहसोई॥

अर्थ-रविदिनमारिछछूंदरिलीजै। सर्षपतेलजारितोहिदीजै ॥
सोमलहमरुजपरचुपरावै। नीकहोयबहुसुखउपजावै ॥

अथ पनियारीरोगलक्षण।

दोहा-मुखचौहैंनीचनकी, खालीजहँदर्शाय।
ताहिमध्यसूजैअधिक, पनियारीसोआय ॥
दाढीतेथीवालगे, सूजिअधिकमुखजाय।
चारापानीनहिंकरै, ताकोकरोउपाय ॥
चौ०-अजयाशीशकगूदमँगावै। पत्थरकाचूनामिलवावै ॥
दूनौघेपिचुपरिनितदीजै। फूटिबहैकीबैठिकहीजै ॥
तेहिपाछेमलहमचुपरावै। नीकहोयतनुसुखउपजावै ॥

अन्य।

कीतोलोहतप्तकरिदागै। याहूतेरुजजलदीभागै ॥

अथ वेलियारोगहलककेनीचघूटीमेंगें-
दप्रमाणगोलनिकरतहै।

चौ०-घूंटीहलककेनीचेजानो। घींचकेऊपरगोलबखानो ॥
गेंदसमानरोगतेहिनिकरै। एकैतरफकिदूनौवोरै ॥
याकोवेलियानामकहावै। दवाकियेतेसबमिटिजावै ॥

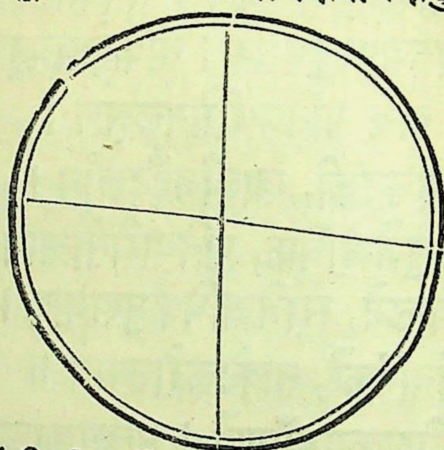
दवा।

नींबकीपातीलैउखवावै। देउबफाराधारछोडावै ॥
फिरिपातीवहदेउबँधाई। नीकनहोयतौओरउपाई ॥

दागकैविधि।

ताहिगरेरिगोलदगवावै। सीधींबेंडीलीककरावै ॥

लिखौं दागजेहिसूरतिकेरौ । वाविधिकरौनकछुअरुझेरौ ॥



जोदागेनहिंनीकदेखावै । तौफिरियाकीदवाकरावै ॥
वासापकैफोरितेहिदीजै । पहिलेहीयालेपकरीजै ॥
काराजीरमेंथिअरुसोवा । तीनौबीजपीसिकैपकवा ॥
गुनगुनकरिलैपैरुजऊपर । बेल्थियाफूटिबहैयहदुखहर ॥

अथ हाउनामरोग ॥ दूसरानामघेघा ।

दोहा—हाऊरुजकोकहतहैं, दूसर घेघा नाम ।
ताकेलक्षणपरखिकै, दवाकरौअभिराम ॥
चौ०—मुशकिलतेयहनीकोहोई । महाकठिनतेहिजानोसोई ॥
जौनतराईमेंपशुरहैं । तिनकोहाउहोय सबकहैं ॥
नदीकिनारेघासमटीली । तेहिकेचरेरोगयहखीली ॥
थैलीऐसीलटकिजोआवै । हलककेनीचेसोदेखरावै ॥
तबहिंदस्तबहुपशुकोआवै । दिनादिनदूबरहोतेजावै ॥
दवा—श्यामधतूराकिपातीलावै । औरमकोयसमूलमिलावै ॥
काराजीरीमयदालकरी । जलमेंपीसिनान्हिकैधरी ॥
सकलदवासमततकरावै । घाउकेऊपरसोलिपवावैं ॥

अन्य । बफारा ॥

नींब बकैन। और सँभारू । तीनौंपातबराबरिडारू ॥
बरतनभैरअग्निउसवावै । ताहिबफाराकोकरवावै ॥
जबसेरायतबयहैबँघाई । पाँचसातदिनकरौउपाई ॥

अन्य-लेप ।

अजवायनाछिरकामेंपीसै । गरमकरायहाउपरपरसै ॥
शामसुबहकोयहैखवावै । एकछटाँकप्रमाणबतावै ॥

अन्य-गोली ।

कुटकीइयाहमिर्चकोलीजै ॥ आधपावदोनोंकरिदीजै ॥
हींगअफीमदेउमिलवाई । दशदशमासेसोमँगवाई ॥
बच्छनागदशमाशेलीजै । अरुवंडारसेरदुइकीजै ॥
करुईतोंबीमदिरालीजे ॥ आधआधपावीहकरिदीजै ॥
सकलदवाबहुनान्हिापिसावै । मदिरामेंगोलीबनवावै ॥
छायासेपरमानकरीजै । नितप्रतिएकखानकोदीजै ॥

अन्य-लेपन ।

सूरीबीजकलामयासोरा । जलसोंपीसिगरमकरधोरा ॥

अन्य ।

सज्जीजवाखारमँगवाई । सेंधोनमकताहिमिलवाई ॥
आंबाहरदीपिपरीसरसौं ॥ बहुतमहीनपीसियोकरसौं ॥
सकलदवासमभागकरीजै । गरमकरायलेपकरिदीजै ॥
अन्य-ऊँखकेररसकोचुपरावै । तासोंमाछीबहुलपटावै ॥
सूजनिसकलचाटिसोलेहै । नीकहोयपशुबहुसुखदेहै ॥

अन्य-दवा खानेकी ।

कुटकीकाराजीरीसौंचरु : टकाटकाभरतीनोसमकरु ॥

आठदिनालौंदेउखवाई । मृत्युनहोयतौनीकदेखाई ॥

अथ मसालासूजनिमिटवैको ।

घोड़वचंचपाचीतजवायनि । हर्रनमकसँधौसमलाइनि ॥
एकछटांकवजनतेहिकीजे । सर्षपतेलसानिकैदीजै ॥

अन्य-दागैकीविधि ।

हुक्काकेरीचिलममँगावै । पावकतप्तलालकरवावै ॥
कूलेढिगचुतरिनपरकीजै । यकयकदागताहिकेदीजै ॥
अन्य-सकलअंगजासोथदेखावै । श्याममिर्चबहुताहिखवावै॥
मुण्डीकेरबफारादीजै । सूजनिनीकहोयदुखछीजै ॥

अथ हैलुवानामरोगको ।

दोहा-हैलुवारुजकोनामहै, देयमहिषवृषसोग ।
ताकेलक्षणकहतहौं, जोसमुझैंसबलोग ॥
चौ०-हलकतेसूजनिउतरैभाई । छातीलगबढतिसोजाई ॥
अरुदुमतकयाहीविधिजानौ । ताकीदवाकरौबुधवानौ ॥
जेहिकममतिकीरीतिबखानैं । तेयहिजहरबातकरिमानैं ॥
दवा-सोसनकीजरअदरखलीजै । श्याममिर्चताहीमेंदीजै ॥
तीनौदवापीसिसमलावै । साँझभोरवृषखानकोपावै ॥

अन्य-लेपन ।

काराजीरजवाइनगेरू । पीसिनीरकछुछिरकाडारू ॥
गरमकरायलेपकारिदीजै । रामकृपातेहिनीकोलीजै ॥

अन्य-बफारा ।

पथरातप्तबहुतकरवावै । तेहिपरबकरीदूधडरावै ॥

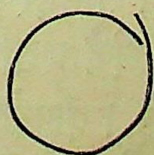
कीवाहीकोमूत्रडराई । निकरैबाफताहिसेकवाई ॥

अन्य । मसाला ।

सोंठिपीपरीमिर्चमँगावै । वायविरंग चिरैतालावै ॥
जीराश्वेतशतावारगेरू । सोवाबीजसोंकाराजीरू ॥
कुटकीककराशृंगीलावै । लहसुनअरुवंडारमिलावै ॥
सकलदवासमभागपिसाई । चनाकेआटासानिखवाई ॥
आधपावकीवजनकरीजै । प्रातैवृषकेमुखभरिदीजै ॥
जीराश्यामलीजियोहरदी । पावपावदूनोकरुगरदी ॥
श्याममिर्चसेरआधुकलीजै । सकलछानिएकैमेंकीजै ॥
एकछटाँकखवावैप्राता । नीकहोयदीज्योदिनसाता ॥

अथ आरजाकंठदुःख ।

दोहा-कंठदुःखयहिरोगको, नामकहैंसबलोग ।
ताकेलक्षणपरखिकै, दवाकरौयहियोग ॥
चौ०-कांनकिजरतेसूजनिजानौ । हलकगेरसोंइपीहचानौ ॥
चाराखायनजलसोंनेहा । दिनदिनदूबरिहोवेदेहा ॥
पक्कीईटगरमकरवावै । तासोंकईबेरसेकवावै ॥
जहँसूजनिहोवैसुनुभाइ । लोहतप्तकरिगोलदगाई ॥



यहीसकलकोदागदेवावै । तासोंनीकहोयसुखपावै ॥

अन्य।

इन्द्रायनिकोफलयकलावै। मुलामुलाइकैताहिपकावै॥
यवआटासँगपिंडबनाई। मुखपसारिगलियायखवाई॥

अन्य।

सोंठिमिरचअरुकाराजीरी। तोलेडेढडेढकरुफेरी॥
लहसुनआधपावपिसवाई। आटामेंकारिपिंडखवाई॥

अन्य। लेप।

गूदाआँविलतासको लीजै। पात मकोयताहिमेंदीजै॥
नीबछालिमोलमेहीपिसावै। गर्मकरायकैलेपकरावै॥

अन्य।

कपराकीगादीबनवावै। ततनीरसेभिजैबँधावै॥
बहुतदफायकरोजकरीजै। कंठदुःखरुजकोहरिलीजै॥

अथ हलकमेंसूजनिकिस्मजहरवातकेहोती है।

दोहा–वृषभमहिषकेहलकमें, सोथहोय अधिकान।
चारापानीपरिहरै, दुखितरहैतेहिप्रान॥

चौ०–जहरवातकीदवाकरीजे। तासोंनीकहोयसुखलीजै॥
इंद्रायनजरकुटकीलावै। जीराश्वेतअश्वेतमगावै॥
इंद्रयवमीठेमँगवाई। तामेंहरदीदेउमिलाई॥
तोलातीनितीनियहिलीजै। तापाछेविधिऔरकरीजै॥
लेउमस्तमीहुगीभाई। वंशलोचनै ताहिमिलाई॥
टकाटकाभरिदूनौलावै। सोंठिमिर्चयकपावमिलावै॥
पीसिकूटिकपराछनवाई। थोराथोराप्रातखवाई॥

अथ दवाखारिष्टखुजलीकीखुजली दुइतरहकीहोतीहै ।
एक तर । दूसरी खुश्क । सवैया ।

वृषजौनदेवालऔवृक्षनमेंरगराकरैदेहसोईदुबराई ॥ रस
कोछिरकामादिराक्षममेलिलगैतोहिअंगमहासुखपाई ॥
दिनपांचऔसातलौंयाहीविधानसोंदेवदवाइयहीमनभाई ।
मतिवानकहैखुसकीखुजलीनहिंनेकोरहैजरमूलतेजाई ॥

अन्य ।

नैनियगंधकलैदुइभागऔपाराछौंएकहीभागमिलाई ॥
कटुकैसोंबदामकीगूदीत्रिभागसों औषधडारुमहीनपि-
साई ॥ गोघृतमाँहिमिलैसबकोवृषकेसगरेसोइदेहमलाई ॥
हैनिहचैनरहैखजुलीतनकोकरुवेगदवासुखपाई ॥

अन्य ।

सोरठा–सुभगलेउहरतार, साँभरिलोनैसमतहां ।
पीसिसोघृतमेंडार, देहीमेंमरदनकरौ ॥
दिनातीनिअरुचारि, मालिसकरिघामेबँधौ ।
यहनिश्चयचितधारि, खुश्कजायखुजलीसकल ॥

अथ तरखुजलीके लक्षण वा दवा ।

सोरठा–खालफाटितनुजाय, जगहजगहपानीबहै ।
यहलक्षणचितलाय, जानौतरखुजलीहवै ॥ १ ॥
साबुनदेशीराय, सेंदुरतीनौभागसम ।
रसछिरकामेंपिसाय, वृषभदेहमेंसोमलै ॥ २ ॥

अन्य ।

पाराएकैभाग, औरफटकरीभागद्वै ।
अर्ककष्टधरिआगि, भस्मतीनिभागैमिलै ॥ ३ ॥
रसछिरकामेंपिसाय, गोघृतइकइसबेरध्वै ॥
वाहीदवामिलाय, वृषदेहीमालिसकरौ ॥ ४ ॥

अन्य ।

साबुननमकपिसाय, वाहीविधिधोवैघृतै ।
वृषकेतनुमलवाय, तरखुजलीजातीरहै ॥ ५ ॥

अथ दूनौकिस्मकीखुजलीकीदवा ।

सोरठा–हरितजोपीपरपात, जलमिलायकैपीसिये ।
कटुकतेलमिलवाय, वृषकेतनुमरदनकरौ ॥ १ ॥
कीतौअग्निजराय, वहैंभस्मकटुतेलसँग ।
सकलशरीरमलाय, युगखुजलीजातीरहै ॥ २ ॥
चारिघरीकेबाद, अन्हवावैमालिमालिसकल ।
आठरोजपरमान, नीकनहोयतौऔरविधि ॥ ३ ॥

अन्य ।

साँभरिनमकछटांक, साबुनदूनौतासुको ।
पानीमेंपिसवाय, वृषतनुमेंमालिशकरै ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–दधिबारूदामिलायकै, वृषकेतनुमलवाय ।
तरखुसकीखजुलीदुवौ, सातरोज़मेंजाय ॥ १ ॥

अन्य ।

उर्ददालिलैपावयक, पानीसाँझभिजाय ।
मिर्चाअरुणछटांकभरि, बहुतमहीनपिसाय ॥ २ ॥
प्रातसमयमालिसकरौ, वृषभअङ्गमेंजाय ॥
खुसकीतरखजुलीदुवो, गेरहोदिवसनशाय ॥

अन्य ।

हुक्कनकोपानीमलौ, पंद्रहदिननितप्रात ॥
कितौंतमाखूभिजैकै, मालिसकरुतनुतात ॥ ४ ॥

अथ गजचर्मदूसरानामचर्मदलकुष्ठरोगहै ।

दोहा–रोगकठिनगजचर्महै, जावृषकेतनुमाहिं ।
गजकीऐसीखालहै, अतिखादरकहिताहिं ॥
पहिलेथोरीदेहमें, फैलिसकलतनुजाय ।
मछरीकोसिफुनानसम, खजहरलखौबनाय ॥

चौ०–नेकपसीनातननहिंआवै । कुष्ठरोगयहदोषकहावै ।
याकीदवाकरौमनलाई । रोगदूरहोवैसुखपाई ॥
कच्चूराक्षसतेललगावै । तासोंरुजयहनीकदेखावै ॥
अरुमिरचादिनामयकतेला । तेहिकेमलेरोगपरहेला ॥

अन्य लेपन ।

आँबाकिफाँकीसूखिपिसावै । थोरासेंधौनमकमिलावै ॥
तांबेकेबरतनमेंधरिकै । रगरोताहिदेरबहुकरिकै ॥
पानी डारिडारिपिसवाई । सकलअङ्गमेंदेउमलाई ॥
एकमासयाविधिकरवावै । त्वचारोगयहखोयबहावै ॥

अन्य ।

चौ०–अवँरासूखलेउमँगवाई । जलमेंपीसिदेउचुपराई ॥
बहुतरोजलगयाविधिकीजै । रोगजायतनुकोसुखदीजै॥

अन्य ।

जरकैथाअरुनींबिबकैना । छालीछीलितिहूँकीलैना ॥
गदहपुरनवाकीजरलीजे । बीजपवारताहिमेंदीजै ॥
हरदीदारुहरदपहुमाषा । करुवाकूटकहौतेहिभाषा ॥
जटामासिअरुवायभिरंगा । सेंदुरचन्दनअरुणजोअंगा ॥
सकलदवासमभागपिसाई । सर्षपतैललेछगुणमँगाई ॥
दवापीसिपानीघोरवावै । तेलमिलायअगिनिचुरवावै ॥
जबजलजरैदवापकिजाई । पथराभेतेहिरगारीमिलाई ॥
तैलचरमदलपरमलवावै । एकमासपरमानबतावै ॥

अन्य ।

चौ०–श्यामामिरचमैनाशिललीजे । हरदीदारुहरदकाहिदीजै॥
कनयरश्वेतअर्कजरलीजै । छालिछीलिवाकीघरिदीजै॥
अरुहरतारताबकीलावै । करुवाकूटैताहिमिलावै ॥
जरइन्द्रायनचन्दनअरुना॥ सकललेउसममिहीपिसौना॥
गायकलोरिहोयअनव्यानी । वाकेमूत्रमेंदवाकोसानी ॥
गोगोबररसलेउनिचोई । चौथाईसबदवाकोहोई ॥
दवाकेषटगुणसर्षपतेला । ताहिमध्यपचवैसबमेला ॥
बरतनमेंतेहिछानिधरावो । रुजकेऊपरानित्यलगावो ॥

अथ खौरारोगलक्षण ।

दोहा–खौरारुजवृषकेप्रगट, चट्टासकलशरीर ।
सकलबतासाकीहुवें, कछुखजुलीह्वैपीर ॥
चौ०-खालबहुतफूहरह्वैजाई । श्यामवृषभकोबहुदुखदाई
केतनौजोबरदासिकरीजै । दिनाहिनदूबरह्वैतनुछीजै ॥
कछुकदिनामेंखालउधीलै । याकीदवाकरौमातिढीलै ॥
दोहा–वृषभदाँतमुसकुरनके,ताकेबिचिबखानि ।
चनादालिसमहोतिइक, गूँथीरुजजरजानि ॥
चौ०–ताकोनखभेनोचिबहावै । ऊपरहदीरपीसिमलावै ॥
कोइचरखीदंडीभेदागै । खौरारुजतनुते सबभागै ॥
अन्य-तेलमहामिरचादिबनावै । ताकोसकलअंगमलवावै
अन्य-कच्छूराक्षसहैएकतेला । ताहिलगायेरुजपरहेला ॥

अथ कच्छूराक्षसतेलकोनाम । त्वचाकेसर्वरोगनाशन ।

दोहा–कच्छूराक्षसतेलयह, वरणौंगुणतोहिअंग ।
त्वचारोगजेतनेहवैं, लेपकियेतेभंग ॥
चौ, भावप्रकाशग्रन्थयकनामा । ताकोमतयहकहौंललामा॥
दवा–सोंठिपषाणभेदअरुपिपरी । कंजाकिगूदीजरकारियरी ॥
कूढदन्तूनीकिछालीलीजै । चीतकिलकरीतामेंदीजै ॥
गन्धकअरुहरतारमिलावै । औरकसीसमयनशिलवावै ॥
सेंधोलोनश्वेतमँगवावै । नींबपाततामेंडरवावै ॥
लेउकटैयाजरकीछोली । जाकेबीजश्यामजनुगोली ॥
बीजपवांरकेवायाभिरंगा । यतनीदवाकरौयकसंगा ॥

धेलाधेलाभरिसबलीजे । आगवचनऔरकहिदीजै ॥
सेहुँड़अर्कदूधकोलावै । टकाटकाभरिताहिमिलावै ॥
अरुगोमूत्रसेरदुइलीजै । सर्षपतेलसेरयकदीजै ॥
जुदीजुदीमिलिनीरपिसावै । कल्कबनायतेलपचवावै ॥
यकयकदवादेउपकवाई । पाछेकोगोमूत्रपचाई ॥
शुद्धभयेतबराखुधराई । मानुषत्वचारोगलगवाई ॥
अरुपशुकेतनुमेंलगवावै । सकलकुष्ठरुजखोयबहावै ॥

अथ तैलका नाम महामारिचाद्य ।

चौ-हैयहतेलमहामारिचाधी।ताकेगुणसबकाहिविधसाधी
वृषभअश्वगजवाईपकरै । मलेतेलतनुकोरुजाबिगरै ॥
औरकुष्ठफुरियात्वचरोगा । तेललगायेतेहिसुखभोगा ॥
दवा-मिरचनिसोतकूटहरतारू । वायभिरंगखदिरबचदारू ।
बीजपवाँरककूँदनिलीजै । गोगोबररसगुरुचभनीजै ॥
बकुचीदारुहरदऔहरदी । चन्दनलालकरोबहुगरदी ॥
सेहुँड़ाअर्कदूधमँगवावै । अरुदतूनिकीछालीलावै ॥
इन्द्रायनकरियारीकीजर । कंजकिगूदीचीतकोलैधर ॥
कनयरजरकीछालिमँगावै । नागरमोथाताहिमिलावै ॥
छालिनींबकुढसिरसालाज । हेमदारुमयनाशिलदीजै ॥
सतउनछालीकोलैआवै । जटामासतेहिमेंमिलवावै ॥
रोहसनामएकहैघासा । कछुकनीकतामेंहैवासा ॥
टकाटकाभरिसबपिसवावै । पानीडारिकल्कबनवावै ॥

टकादोइभिजहरासिंगिया । लेउपिसायताहिधरिदिया ॥
चौसठिटकातेलसर्षपका । तामेंदवापकावसोनीका ॥
दोहा–दुइसैछप्पनटकाभरि, लेगोमूत्रसुजान ।
पीछूकोतेहिपचैकै, रुजपरकरौविधान ।

अथ परिहुलरोगके लक्षण ।

वा दवा ।

दोहा–दाँतओठकेबीचमहँ, मुसुकुरसूजेहोयँ ।
परिहुलनामकरोगसोइ, जानिलेउसबकोय ।
चौ०–सोइपशुकोबहुदुखदेई । चारादानाखाननदेई ॥
ताकीदवालिखौंचितलाई । जातेपशुकोदुखमिटिजाई ॥
मेथीसाँभरिलोनुमँगाई । अरसीसमकरिलेउमिलाई ॥
पीसिवरमपरमालिसिकरई । देइलगायदुःखसबहरई ॥
दोहा–जोयहवरमगदूदकी, तरहदेखाइदेय ।
तौनस्तरलैयुगुतिसे, काटिदवायहदेय ॥
चौ०–हरदीसांभरिलोनुमँगाई । छिडिकिताहिपरदेइलगाई ॥
दोहा–सोंठिपानअरुमिरचले, समकरिदेइमिलाय ॥
पीसितीनिदिनदीजिये, परिहुलरुजामिटिजाय ॥

अथ चुप्पारोगलक्षण वा दवा ।

चौ०–दूनहुँओठनकेतरऊपर । होतहैवारजौनातिनकेतर ॥
खालकेमध्यमांसबढिआवै । चुप्पानामसोरोगकहावै ॥
सकलगदूदकोरिआसिहोवै । चाराखातबहुतदुखदेवै ॥

दवा ।

दोहा—नस्तरभेतेंहिचीरिकै, डारुगदूदानकिार ।
तापीछेयहदवाकरु, लिखीजोहमनिरधारि ॥

चौ॰ हरदीअरुकोइलासमलाइं । नींबकिछालीलेउमिलाई ॥
पीसिमहीनघाउमेंभारिये । चुप्पारोगपशुनकोटरिये ॥
अथवाहरदीनमकमिलाई । मलेतेचुप्पारुजनाशिजाई॥

अथ पिंगरोगदांतनका ।

दोहा—पिंगरोगपहिचानियो, दशनगिरयकबार ।
दानाचारास्वातदुख, वृषभदोषकोसार ॥

अथ तारूरोगकेलक्षण वा दवा ।

दोहा—रदनमूलतेंप्रगटहै, तारूलगुजाफूलि ।
कबहूंकोईवृषमके, छालापरै समूलि ॥

चौपाई—कछुदिनमेंचारापरिहरै । दूबरहोयबहुतदुखभरै ।
दवा·सोवाबीजजवायनिलावै । दुइदुइतोलातेहिचुरवावै ।
सीराकारिमालितेहिछनवाई । केहूविधिवृषदेइपियाई ॥

अन्य ।

सूजनिपरनस्तरलगवावै । चारिउचरणकिफस्तखोलावै॥

अथ अनछरारोगलक्षण वा दवा ।

चौ॰ जोपशुकीजबानकेऊपर । दानाछोटनोकीलेदुखकर ॥
सोरुजनामअनछराजानो । ताकीदवाकरोबुधिवानो॥
खानेकीबहुइच्छाकरई । दानेगड़ैंखातनहिंबनई ॥

दवा ।

चौ॰—प्रथमबौंसकीपरचमँगाई । तासेदानादेइछोलाई ॥

दोहा–काराजीरीमिरचलै, आँबाहरदामिलाउ ।
पीसिबराबारिताहिपर, बारहिबारलगाउ ॥
चौ०–दूसरिदवासुनौचितलाई । प्रथमहिधवकेफूलमँगाई ॥
दोहा–तिनकहँजलमेंभिजेपुनि, सेंधौरसवतलेइ ।
सोराकलमीसमकरै, फेनसमुन्दरदेइ ॥
चौ०–मलैअनछरारुजपरजोई । सत्यकहौंनीकोपशुहोई ॥
दोहा–धोकीजरअरुफूलत्वच, पातीलेइमँगाइ ।
पानीमेंऔटाइजब, आधाजलराहिजाइ ॥
चौ०–वहजलदातनपरलगवावै । रोगअनछरासोमिटिजावै ॥

अथ मेझुकीनाम रोग जीभपर होताहै ।

फारसीमें अलाई नामहै ।

दोहा–वृषभमहिषिपशुऔरजे, रसनामध्यजोहोय ।
ऊपरकीदिशिसोथहै, मेझुकीजानोसोय ॥
चौ०–चाराखाइनजलसोंनेहा । नितप्रतिदूबरिहोवैदेहा ॥
घासखातिपरघुरघुरकरै । यहिलक्षणमेझुकीकेधरै ॥

दवा ।

बरजतियाइकसपंकहावै । ताहिनिकायसुखैधरवावै ॥
तोलाभरितेहिलेउपिसाई । हरदीएकछटांकमिलाई ॥
चारिपाँचदिनपशुकोदीजै । मेझुकीनाकिहोपसुखलीजै ॥

अन्य ।

मेलावगुलीएकमँगावै । पंखउखारिकेमांसखवावै ॥

वाकेअस्थिपीसिरुजचुपरें । जहँमेझुकीकोठाँउनिहारें ॥

अन्य ।

मेझुकीऊतीनिदिनजै । याहूतेरुजनीकोलीजै ॥

मेझुकीदागेकीविधि ।

रविदिनतेलपरीलोहेकी । गरमकरायछुवावोमेझुकी ॥
कीकपासकीलकरलीजै । तत्तकरायवाहिविधिकीजै ॥
सातदाँयतेहिदेउछुवाइ । मेझुकीनीकिहोयसुखपाइ ॥
बुधजनदागेकोनहिंभावै । गिराबहुतकोमलतारावै ॥
दागेतेजोवृषमारिजाई । हत्यादोषमनुजसोपाई ॥
औरदागयकठौरविचारी । अजमावाहै बहुविधिभारी ॥
तीनिदागघूटीकेऊपर । कीठाढेकीबेंडतेहिपर ।
हलुकहलुकसोदेउदगाई । नीकहोयमेझुकीसुखपाई ॥

एकदागबाँयेपगपिछले । जौनसकलकोहैयहखुले ॥
भितरीदिशिवदखुरीसमूहै । दागेनीकहोयरुजबहै ॥

अथ बहतारोगनामलक्षण ।

चौ०–सूजैजीभअधिकमुखमाहीं । बहैलारदुखबहुतदेखाहीं ॥
अरुनेत्रनतेपानीबहै । बहतारोगताहितेकहै ॥
ताहिउपावयतनतेकरै । जासोंवृषमुखदूषणहरै ॥

दोहा–जीभकेनीचेचारिरग, चारौफरूतखोलाउ ।
नीकहोयवृषमहिषसो, याकोयहैउपाउ ॥

अथ सूतबामरोगका । यहिरोगकीतरहकी-बका नाम । सूतखोलन। ।

दोहा—महिषीमहिषागोवृषभ, सूतरोगमुखमाहिं ।
छिद्रहोयँताहूविषे, महाकठिनकहिताहि ॥

लक्षणपरखैक ।

चौ०—आँसूबहैभूँखनाहिंलागै । दिनदिनदूबरसबसुखभागै ॥
जलकेपीन्हेजीवडेराई । छिद्रनपरेपीरसरसाई ॥
वाहीपीरनेत्रजलढरकै । मारेडेरकेजलनाहिंचभकै ॥
मुखपसारिकैदखोजाई । विवरसाफआंखिनदेखराई ॥
दवा-सिरिकीसींकनींबकेसिकवा । इन्हैंलायतेहिछिद्रघुसेरवा॥
अधिकरहैसोडारुत्खराई । छिद्रबराबरिसोरखवाई ॥
ऐसीजतनसींकडरवावै । आँखिनलगेजोनाहिंपहुँचावै ॥
जोआँखिनढिगसिरकीजाई । तोअंधावृषहोइबनाई ॥
जेहिमाफिककोछेददेखावै।तेहिसमानसिरकीचलवावै ॥
जसजससीकविवरमेंगलिहै । तसतसजखमनीकह्वैजैहै ॥
यहिसमऔरउपायनजानौ।नीकहोयसंशयनहिंमानौ ॥

अथ आरजामुखबंद ।

दोहा—दूनौदिशिमुखपरलखौ, कल्ला बहुतकठोर ।
रदनपैठमालुमपरै, गिरै फेन अति जोर ॥

चौ०—मुखनहिंखोलैनाकछुखाई । पटकापेटुमनहुँदिखराई ॥
सर्षपतेलनारिभारिप्यावै । कल्लनपरतेहितसमलावै ।

अन्य ।

रंडपातगोगोबरलावे । पीसिमहीनगरमकरवावै ॥
कछुनऊपरलेपकराई । नीकहोयवृषबहुसुखपाई ॥

अन्य ।

जोनहिंरुजनीकोदेखरावै । सूजनिकछुनकीदगवावै ॥
जौनसकलुहमालिखीबनाई । लोहततकरितेसदगाई ॥

अथ वृषभकेमुखमेंकांटाह्वैजाते हैं ।

दूसरानाम अवाल ।

दोहा-वृषमुखभीतररोगहै, नामअवालबखानि ।
दूसरकांटाकहतिहैं, गलफरमेंपहिंचानि ॥
चौ०-चिपचिपकरिचारानहिंखाई । दिनादिनपशुजावदुबराई॥
गलफरमेंकाँटाजोहोई । बढैबहुतपशुकोदुखदेई ॥
रविदिनभौमवारजबआवे । तबचमारतेकाँटकटावै ॥
हरदीनमकपीसिचुपराई । तीनिदिनालगुयहैखवाई ॥

अथ घुमनारोगलक्षण वा दवा ।

दोहा-घुमनारुजघूमैवृषभ, घूमिघूमिरहिजाय ।
चारापानीपरिहरै, कछुदिनमेंमरिजाय ॥
चौ०-गोपयसेरसवाइकलावे । हरदीएकछटाँकपिसावे ॥
साँझभोरदिनसातपियाई । एकखुराकलिखतहौंभाई ॥

अन्य ।

कौनौजगहदेहजोसूजे । जानेउरुजताहीमगभूजै ॥
देउदागितेहिठौरततताई । रामकृपातनुनीकदेखाई ।

अन्य ।

घुमनारोगझारैकोमंत्र—सावर ।

समुद्राकिनारेअखैवरकविरवा तेहिकेतरेबडीबडा,
बडीबडाकाकरे । छत्तीसरोगहरै ॥
कौनकौनरोग । घुमनहाईव्याधि ॥
छलकहाइव्याधि । काटिकूटिसमुद्रतीरबहावो ॥
समुद्रतीरहंसा । हंसाकाकरै ॥
डंकपसारैविषझरै । निरमंगाचंगाकरैखोदाय ॥
आनिकेहिकैछत्तीसकोटिदेवताकी ॥ आनिकेहिके ॥
छत्तिसकोटिऋषिया । वाचाउलटैमपनेकाखप्परखाय ॥
वाचाउलटैवियानिमेहरियाकाखप्परखाय ॥
वाचाउलटैधोबीकेनादचमारकेकूँडानहाय ॥
गुरुगोविंदगुरुहोइ । गुरुमारहत्या ॥
जोबगलमारहै । तोफुरोवाचा ॥
आदेशगुरुकी । मन्त्रविधि ॥

चौ०—एकहाथमेंजलकोभरिके । इकइसबरमन्त्रपढिफूंके ॥
वहैनीरबृषछिरकनकीजे । बाकीरहैपियनकोदीजे ॥
सांझभोरादिनतीनप्रमाना । औरदवाकोकरोबिधाना ॥

अथ उदरफूलेके लक्षण वा दवा ।

दोहा—फूलैउदरजावृषमाहिष, पांचबिधिहितेजानु ।
ताकेलक्षणकहतहौं, भिन्नभिन्नपहिचानु ॥

चौ०–शरदकालजाडनमेंजानो । जादामेहनतिपरेबखानो ॥
धूपकालगरमिनमेंकहिए । दौरेबहुतसोगरमीलहिए ॥
तीसरिविधिबदहजमीहोई । चौथेपागुरिमूलतेसोई ॥
पंचमविधियहरोगबखानो । हवाबंदतेहिउदरफुलानो ॥
दवा–शरदीबदहजमीतेफूलै । ताकीऔषधिकरौउताहिलै ।
कुटकीलहसुनकाराजीरी । पिण्डबनायदेउमुखधारी ॥
अन्य–पागुरिभूलेजोवृषफूलै । नींबलगामदेउमुखखोलै ॥
अन्य-वायुबंदफूलोदेखरावै । ताकीदवाजोयहमनभावै ॥
हुक्कनकोमँगवाओपानी । तामेंडारुतमाखूथुकनी ॥
मलिकैछानिनीरसोंलीजै । नारिभरायवृषभमुखदीजै ॥
अन्य–गरमिनमेंदौरायफूलै । ताकीदवाकैरमतिभूलै ॥
हरियरिमेंहदीपातउस्यावै । वहैनीरवृषकेमुखनावै ॥
अन्य–जोगरमीतउदरफुलाई । ताकीदवासुनोमनलाई ॥
जीराश्वेतसौंफमंगवाई । धनियाँमलैताहिपिसवाई ॥
जौआटासंगखानकोदीजै । पटकैवृषभउदरजसलीजै ॥

अथ कटकवाउकेलक्षण ।

दोहा–कटकवाउलक्षणसुनो, फूलिपेटबहुजाय ।
हाथपाँवरगरैधराणि, वाकीदवाकराय ॥
चौ०–दूसरनामकुलिंजकहावै । हवाबंदतेहितेदुखपावै ॥
इन्द्रायनफलडेढछटाँका । ताहिकुचिलिजलमेंकरुपाका ॥
जबसेरायमलिछानिपियावै । फूलोउदरनीकहोईजावै ॥

अथगुदामेंबातीचलावैकीविधि ।

इन्द्रायनफलगूदमँगावै । साबुनसमजलमेंपिसवावै ॥
कपराचुपरिबातिबनवाई । गुदामध्यतेहिदेउदबाई ॥

अन्य ।

रेंडीतेलपावइकलावै । एकसेरगोदूधमिलावै ॥
गरमकरायकेदेउपियाई । वायुबंदखुलिहैसुखपाई ॥

अन्य ।

घृतअरुदूधगायकोलावै । गरमकरायताहिमुखनावै ॥

अन्य ।

खारीनमकछटांकपिसाई । एकपावगुडताहिमिलाई ॥
जलमेंऔटिवृषभकोदीजै । पटकैउदरनीकतेहिलीजै ॥

अन्य ।

लहसुनकालीमिरचमिलाई । एकपावजलमेंपिसवाई ॥
चनाकेआटामेंसनवाई । पिंडबनायकेदेउखवाई ॥

अथ सबतरहकेपेटफूलैकादवा ।

दोहा—फूलैवृषकोउदरजो, काहूविधिपाहिंचानि ।
ताकीदवाकराउबहु, जासोंहोयनहानि ॥

चौ०—चारापाणिनहिंवृषकरै । बहुतैदुखधीरजनाहिंधरै ॥
रँडकेघामिराकेलैफूला । सर्षपतेलपावइकतोला ॥
फूलपीसितेलैमिलवाई । नारिभराइवृषभमुखनाई ॥

अरुणवर्णकेचींटाहोई । माटीखोदिजमाकरसोई ॥
तेहिमाटीकोलैउमँगाई । आधपावतोहिलेतौलाई ॥
पानीघोरिपकायपियावै । जलदीवायुखुलैसुखपावै ॥

अन्य ।

अर्कफूल तोला दुइ लावै । गीले सूखे जो कछु पावै ॥
फूलनहींजोमिलैंसुजाना । तौमुहमूंदेपातविधाना ॥
सर्षपतेलपावइकलीजै । फूलपीसिपानीसँगदीजै ॥
तैलभरायनारिमेंभाई । ऊपरफूलधरायपियाई ॥
एकघरीमेंनीकदेखावै । बायुखुलैबहुसुखउपजावै ॥

अन्य ।

दोहा—दानाचाराखायकै, जोकोउमेहनतिलेइ ।
तासोंपागुरिबन्दहै, पेटफूलिहै तेइ ।
सर्षपतेलपावइकलावै । खारीनमकछटांकामिलावै ॥
नारिभरायकैदेउपियाई फूलाउदरनीकहैजाई ॥

अन्य ।

फूलेउदरबहुतदौराये । ताकीदवाकरौमनलाये ॥
सर्षपतेलनाकभेप्यावै । तुरतनीकहोवैसुखपावै ॥

अथ मन्त्रसाबरपेटफूलेतेझारैको

दोहा—गङ्गयमुनकेबीचमाँ, चरइकफुलवागाय ।
उँचवाचढिहनुमन्तपुकारै, यहफुलवाझारिजाय ॥
दोहाईगौरापार्वतीकीदोहाईमहादेवकी । फुरोमंत्रईश्वरोवाच॥

मंत्र विधि।

दोहा-गौंडरकोखरुलीजिये, कितौपतावरिहोय।
तासेझारैमंत्रपढि, वृषफूलेतेहिहोय॥

अन्य। दवाफूलेवृषभकी।

दोहा-धायफूलगाँजापिसवाई, दुधियाकत्थांदेउमिलाई।
डेढपावतीनोसमकरिये, आधसेरगुलकंदैधरिये॥
पीसिकूटिबरतनधरवावै, आधपाउनितप्रातखवावै।

अन्य।

जरअंजीरकिबकलीलावै। हरियरमेंहँदीपातमिलावै॥
श्यामामिर्चसमलेउपिसाई। रससिरकामेंउदरलिपाई॥

अन्य।

आकस्मातपेटजोफूलै। ताकीदवाकरौमतिभूलै॥
सर्षपएकछटाँकमँगाई। दूनौश्रवणनमेंभरव॥
फिरिहुक्काकोपानीभारिये। पटकैपेटपेशाबखुलैये॥

अथ शूलरोगलक्षण व दवा।

दोहा-शूलरोगलक्षणकहौं, जेहितेरुजपहिंचानि।
दवाकियेतपशुनकी, होतदुःखकीहानि॥
होतशूलबहुदुखकरै, इतउतकरवटलेत।
गोबरमेंदुर्गंधबहु, चारापरनहिंहेत॥

चौ०-बारबारउठिलोटैदेखै। ताकेउदरशूलअवरेखै॥
दवा-कंजाकीगूदीपिसवावै। मंदआँचसूखीकलहरावै॥
जीराश्यामश्वेतदोउलीजै। सोंचरनोनसबैसमकीजै॥

कूटिछानिकैपशुकहँदेई । शूलजनितसबदुखहरिलेई ॥

अन्य ।

दोहा—कंजाकेरेगूदसम, सूखि तमाखू डार ।
आटामेंजोदीजिये, उदरशूलदेइटारि ॥

अन्य ।

दोहा—सोंठिटकाभरिआनिकै, दूनोंगुडमेंसानि ।
हींगचारिमासेमिलै, गोलीकरुसुखदानि ॥

चौ०—दिनमंहँकइउबेरजोदेई । उदरशूलकोडारैखोई ॥
पीनेकेरितमाकूलाई । गुडपुरानदैलेउचुराई ॥
नारिभरायवृषभकोदीजै । उदरशूलवाकीहरिलीजै ॥

अथ हरकिस्मकीशूल वा बदहजमीकीदवा ।

चौ०—इंद्रायनिकीजरकोलीजै । तामहँअजवाइनिजरदीजै ॥
वायाभिरंगबीजढाँखके । भटकटायअरुसैंघोलैके ॥
यहसबटकाटकापरमाना । आधपावगुडलेउपुराना ॥
निर्गुंडीदुइतोलालावै । हरदीआधछटाँकामिलावै ॥
अजवायनिअरुहरंमँगाई । तोलापाँचपाँचतौलाई ॥
तोलाएकहींगभुनवाई । पीसिकूटिकैलेवछनाई ॥

दोहा—शामसबेरेतीनादिन, पशुहिखवावैजोय ।
बदहजमीअरुशूलको, देवैंजरतेखोय ॥

अन्य ।

दोहा—लायतमाकूपिवनकी, हुक्काकेजलघोरि ।
देयनारिभरिपशुनको, शूलरोगदेइतोरि ॥

अन्य–एरंडतेलपियावई, गरमेंजलमेंडारि।
पेटकिसूजनिकाजयत, शूलहिदेवेटार ॥
अन्य–गऊदूधमेंघृतामिलै, गुनगुनदेवपियाय।
तेहिपशुकेउदरकी, शूलसमूलनशाय ॥
अन्य–पीपरिकेरीछालिलै, आधपावपरमान।
बकलियरंडामूलकी, एकछटाँकसाआन ॥
चौ० भटकटाइलीजैसहमूला। तितिली कीपातीइकतोला ॥
दोहा–पानीमें औटायकै, गुनगुनपशुकोदेय।
शूलजायसबदुखमिटै, छिनमेंनीकोलेय ॥
अन्य–अजवायनिकालीमिरच, टकाटकाभरिलेय।
इकछटाँकगुडडारिकै, तुरतहिपशुकोदेय ॥
चौ० शूलरोगकीनाशनहारी। पशुनयोग्यबहुतैहितकारी।
अथशूलजोबहुतादिनहोयतेहिनेपटमें।

सूजनिआवैताहिकोदवा।

दोहा–बहुतादिवसकीशूलसे, उदरशोथजोहोय।
तोसूजनिअरुशूलकी, दवाकरौयइसोय ॥
चौ०–केवैयासमूललैआवै। आधपावकारिताहितुलावै ॥
लहसुनहरलेउमँगवाई। तोलातीनितीनितौलाई ॥
हरदीएकछटाँकप्रमाना। आधपावगुडलेइपुराना ॥
दोहा–पीसिसकलगुडसानिकै, पशुकहँदेइखवाय।
उदरशोथअरुशूलकहँ, छिनमोदेइबहाय ॥

अन्य ।

ताजोमहिषकिरलै, गोबरगरमकराय ।
लेपकियेतउदरकी, सूजनिदेइमिटाय ॥

अन्य ।

चौ०—पातसँभारूकेरमँगाई । देतबफारादुखमिटिजाई ॥

अथ करसारोगलक्षण ।

दोहा—करसारुजपहिचानियो, महिषवृषभकेहोय ।
ताकेअबलक्षणकहौं, गुणनिदानयुतसोय ॥
चौ०—फूलेउदरवृषभकोभाई । छुलकिछुलकिमूतैदुखपाई ॥
गोलीलेंडीबहुतकठोरा । थोराहगेचीन्हयहिकेरो ॥
मूतैहगैनदिनदुइचारी । फूलारहैनकरैअहारी ॥
ताहिजानियोकरसामारा । दवादेउतेहिकरोविचारा ॥
दीन्हेदवापेशाबलगाई । गोबरकरससमानहगाई ॥

दवा ।

आँबकिफाँकीसूखिमँगावे । पावएकताकोतौलावै ।
माटीकेबरतनउसनावे । वाहीजलमेंबहुतमिलावै ।
फाँकीमलेखाजजोनिकरै । ताकोफेंकिदेउजलधरै ॥
आधसेरघृतदेउमिलाई । नारिभराइकैदेउपियाई ।
याहूकियेननीकोदेखै । औरदवातेहिदेउविशेषै ॥

अन्य ।

हरदीसोंठिलेउमँगवाई । आधपावदूनोपिसवाई ॥
दूधसेरदुइमेंपकवावै । नारिभरायवृषभमुखनावै ॥

अन्य ।

पीपरपरनींबीकेपाता । आधसेरलीजौतेहिप्राता ॥
एकछटांकपुराननिमिठाई । पीसिनारिभरिदेउपियाई ॥

अन्य ।

हरदीसांभरिनमकमँगावै । श्यामामिरचतामेंमिलवावै ॥
तीनिछटाँकदवासमलीजै । बहुतमहीनपीसिकरिदीजै॥
सर्षपतेलपावइकलावै । सकलमिलायनारिभरिप्यावै ॥
एकैदिनकीयहपरिमाना । पाँचसातदिनकरौविधाना ॥
करसारोगनीकहैजाई । दवाप्रमाणिकवृषरुजजाई ॥
अथगरदनकीनसवापट्ठाचढिजायताकेलक्षण,वं दवा ।

दोहा–गर्दनकोपट्ठाचढै, अरुनसचैढहमेश ।
ऐसीवैसीनहिंलखै, दवाकरौयहवेश ॥

चौ०अकडाठाढरहैनहिंडोलै । चाराकोमुखतनकुनखोलै ॥
बाँबीनईदिमँककीमाटी । भेंडकिलेंडीलैसमबाँटी ॥
गऊकलोरिनईकोमूता । मिलैपकायमलाउबहूता ॥

अन्य ।

गेरूसाबुनसमकरिलीजै । सर्षपतेलमेंपकवनकीजै ॥
चारिपाँचदिनमालिसकरै । पट्ठानशैखुलैदुखहरै ॥

अथ नमकारोगलक्षण ।

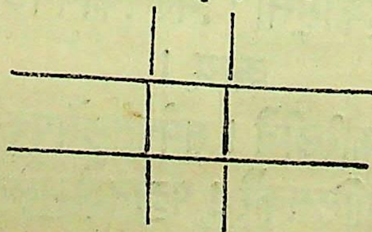
दोहा–नमकारुजकोनामहै, दूसराचिकनाजानु ।
याकेलक्षणपरखिक, कीजोदवाविधानु ॥

चौ–यॆंचवृषभकीबहुतानिजाई ।कौन्योदिशिनहिंझुकैझुकाई॥
आतिकठोरहैपशुदुखपावै । याकीदवाकरोमनभावै ॥
दोहा–पूँछकेनीचेगुदाढिग, तेहिरगकोपहिंचानु ।
वाकीफस्तखोलाइये, नीकहोयजियजानु ॥
चौ०–तेहिपाछेयहदवाकरावै । सर्षपतैलनाकमगप्यावै ॥

अन्य ।

गुडमीठाइकसेरखवावै।नितप्रतिआठरोजलगुपावै ॥
अन्य–इसरोगमेंदागदेनावाजिवहै । दागैकीविधि ।
दोहा–मर्दनमेंइकदीजिये, गोलगरेरिदगाय ।
हँसुलीसूताकीतरह, जनुदीन्होपहिराय ॥
दोहा–रीरगूरियाकेनिकट, अंगुलचारिप्रमान ॥
कांधेतेअरुपूँछलगु, दागैताहिसुजान ।
चौ०–दूनोंतरफदेउदुइलीका । तेहिपाछेकरुऔरतरीका ॥
यहिंवेंडीदुइलीकैकही, दुइठाढीकरुतामेंसही ॥

दागकीशकल ।



दुमउठायइकदागदिवावै । नीचेतरफविधानकरावै ॥
पीछेसर्षपतेलपियाई । गरदनिमें याहीमलवाई ॥

अन्य ।

रीरकेऊपरफस्तखोलावै । तापीछूफिरितेलपियावै ॥

अथ अर्धंगरोग–माफिकलकवाकेहोताहै ।

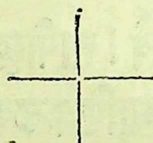
दोहा–भाषौंरुजअर्धंगको, लक्षणकहौंनिदानि ।
है असाध्यतेहिजानियो, पशुकोकरिहैहानि ।

चौ० वातव्याधिजानोतेहिभाई । लकवाकेमाफिकठहराई
दूनौकानसीधह्वैजावैं । लकरीसमकठोरदेखरावैं ॥
सकलशरीरजूडह्वैजाई । चारौंचरगलच्योनहिंजाई ॥
बैठतउठतनतेहिबनिआवै । याकीदवाकरौमनभावै ॥
कालाविषधरएकमँगाई । माटीकेघटमेंधरवाई ॥
तामेंचनादेउभरवाई । सेरअढैयककरितौलाई ॥
पक्कीतौलतोलितेहिलीजै । गोबरघूरमध्यधरिदीजै ॥
एकबर्षभरिमाडिरखावे ! फोरिसोदिलहिलानिकरावै ॥
सोअपनेघरमेंधारिराखे । जबरुजहोयएकनितचाखै ॥
कोइकोइदुइदुइचनाखवावैं । जानिपरैतौयहैकरावै ॥
वातव्याधिसबपरयहदीजै । चनाखवायबहुतयशलीजै ॥
पशुकेस्वामिनकोयहचाहिये । चनाबनायघाममेंधरिये ॥
जबतकरोगनीकनहिंहोई । तबतकचनाखवाओसोई ॥

अन्य ।

इसरोगमेंदेनेसेजल्दीअच्छाहोताहै ।

दागैकीविधि ।



चौ० बहुतदागदीज्योतनुमाहीं । जौनशकलकोलिखियहिमाहीं
चारौंपुट्ठनपरदगवावै । दुइदुइदागजरूरदेवावै ॥
डाढिकेनीचेदूनौओरा । एकएकरुजरुजकोझोरा ॥
दुवोकनपटिनपरदुइदीजै । दुइचुतरिनपरदुयेकरीजै ॥
याविधिवृषभेदइदमवाई । सोअधंगरोगबहिजाई ॥

अथ सींकुररोगका लक्षण व दवा ।

दोहा–सींकुररुजकोनामकहि, सिकुरारहेबनाय ॥
चौ०–चारौंचरणनवरमकछु, चलतबहुतलँगराय ॥
चौ०–चाराकमखावैवृषसोई । कछुदिनमेंदूबरबहुहोई ॥
वातरोगयाकोपहिचानौ । ताकीदवासुनौबुधिवानौ ॥
वरजातियाइकसर्पकहावै । ताकीमांजरिपीसिखवावै ॥
इकतोलेतदुइलगुदीजै । सिकुरारोगनीकपुनिलीजै ॥

अथ आरजानिघँटकालक्षण व दवा ।

दोहा–पशुकेरुजकोनामयक, हैनिघँटसुजान ।
गोवृषकेगलकंठमें, सूजमिदुहुँदिशिजान ॥
चौ०–अँवराकेसमगोलदेखावै दुखदेवेसुखदूरिकरावै ॥
जोयहरोगहेमंतमेंआवै । गोबरमूत्रबंदहोइजावै ॥

धूपकालगरमीमेंहोवै । चारापानीसबतजिदेवै ॥

दवा ।

बेनवरकुचिलिपोटरीकीजै । तासोंसेंकिबहुतविधिदीजै ॥

अन्य ।

बेनवरमानुषमूत्रमिलाई । पीसिमहीनगरमकरवाई ॥
पाँचसातदिनलेपकरावै । नीकहोयवृषबहुसुखपावै ॥

अन्य मसाला ।

गूदलेउइन्द्रायनिफलका । पीपरिमिर्चलोनसेंधौका ॥
अदरखमिलैपीसिसमलीजै । नितप्रतिगेरहादिनलैंदीजै ॥
बँगलापानदेउमेलवाई । बहुतफायदाकरिहैभाई ॥

अथ हन्नवायु ।

दोहा—हन्नवायुरुजकठिनहै, पशुकोकालसमान ।
एकपहरमेंजानियो, मृत्युनिकटनियरान ॥

चौ०—घूमिघूमिपशुगिरिगिरिपरै । देहीकाँपिकाँपिपगुधरै ॥
कछुकदेरमेंसोगिरिजाई । चारौचरणदेइफैलाई ॥
हन्नवायुकेलक्षणभाषैं । जोनिदानमतमेंगुणिराखैं ॥

दवा—इंद्रायनकेफलदुइलीजै । पीसिछानिमुखमेंभरिदीजै ॥

अन्य ।

व्याघ्रामिषजोदेउखवाई । हन्नवायुतुरतैखुलिजाई ॥

अन्य ।

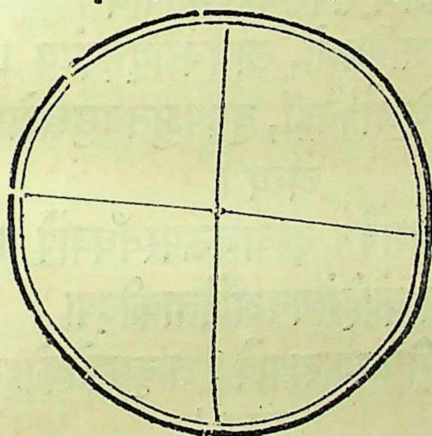
मृगा शृंगकोरगरिपियावै । कितेहिलेंडीपीसिखवावै ॥
अन्य—खुरासानिअजवाइनलीजै । दुइतोलातेहिपीसिधरीजै ॥

बारहासिंगारगरिमिलावै । तोलाएकप्रमाणकरावै ॥
हन्नाकी लेंडी मँगवाई । एकछटाँकरीसिमिलवाई ॥
अजयादूधसेरअधलावै । तामेंऔषधसकलमिलावै ॥
अग्निपकायवृषभकोदीजे । हन्नवायुकोनाशकरीजै ॥
अन्य–रुंबग्रीवकीअस्थिघिसाई । एकछटाँकवृषभसोखाई ॥

अथ टनकवायुकेलक्षण व दवा ।

सोरठा–दवाकियेखुलिजाय, ताकोयत्नकराइयै ।
पाँउटनकिलँगराय, टनकवायु ताको कहै ॥
चौ०–एकैचरणराहमेंघिसिलै । सूधचलैतबहिंनसपघिलै
दवा–कारियारीजरखोदिमँगावै । दुइतोलानितप्रातखवावै
चनाकेआटामध्यपिसाई । आठरोजलगुदीज्योभाई ।
अन्य–मुरगीकेअंडामँगवावै । सर्षपतेलमिलैलिपवावै ॥
मालिसकरैटनकनसपाघिलै । गरहैंदिनयाहीरुजसकिलै ॥
अन्य–पक्षीएकटिटिहिरीकहिये । ताकेअंडारविदिनलहिये ।
यवपिसानसँगवृषकोदीजे।टनकवायुकोनाशकरीजै ॥
अन्य–परजातियाइकसर्पकहावै । मूँडपूँछतेहिकाटिबहावै ।
तापीछेविधिऔरकराई । माटीचिकनीतालकिठाई ॥
ताकीडिमकीकूटिकरावै । माटीकोइकघटमँगवावै ॥
तामेंढिमकीअर्द्धभरावै । आधाघटखालीरहिजावै ॥
तामें सर्पदेउधरवाई । फिरिमाटीऊपरभरवाई ॥
मोहराबहुतबंदसोकरिये । एकमासलगुताकोधरिये ।
फिरिसरपैकोदेउफेंकाई । माटीकूटिपीसिछनवाई ॥

एकछटांकप्रमाणखवावै । बजराकेआटासनवावै ॥
पाँचसातदिनपशुकोदीजै । टनकवायुताकीहरिलीजै ।
अन्य–लहसुनतोलाचारिपिसावै । पाराषटमासेमिलवावै ॥
चनाकेआटापिंडबनाई । यकइसादिनयाहीविधिपाई ॥
हींगभूजितोलाभारिलाई । चनाके आटापीसिखवाई ॥
यकइसादिनकीहैयहरीती । औरविधानसुनौकारिप्रीती ॥
दूनोकूलनपरदगवावै । जौनसकलकोलिखावनावै ॥



अथ वेषलावायुलक्षण व दवा ।
सोरठा–पाछिलधरबेकाम, उठैनपावैपशुकछू ।
रोगबैखलाजान, दवाकरौततकालही ॥
चौ०–अकस्मातरुजभजाकरै । ताकीदवाकरौजोसपरै ॥
मुरगीअण्डासातमँगावै । वरजातियाकीमाँजरिलावै ॥
एकछटाँकताहिपिसवाई । चनाकेआटासानिखबाई ॥
सर्षपतेलपावइकलावै । मुरगीअंडामिलैघिपावै ॥
तेहिपाछेयहदेउपियाई । नारिभरायबृषभमुखनाई ॥
बन्दमकानपवननहिंलागै । तामेंतोपकरौदुखभागै ॥

जबहींअङ्गपसीनाआवै । जलदीनीकहोयसुखपावै ॥

अन्य ।

कोमलशाककरौंदालीजै । पातसमेतकाटिकुचिदीजै ॥
बहुतनान्हिचींटीजोहोई । तौनमृतिकाखोंदिसोलेई ॥
सेरसेरदूनौंकरवावै । जलमेंचुरईवृषभमुखनावै ॥
वाकीरहैमलोजलअङ्गा । रोगबैपलाकोकारिभंगा ॥

अथ सर्वरोगहरणउपाय ।

दोहा—लंबग्रीवकोअस्थिजो, लायघरोगृहकोय ।
सकलव्याधिआवैनहीं, वृषपशुतनसुखहोय ॥

अन्य ।

श्वेतप्याजकोलायवरावै । दरवाजेऊपरबँधवावै ॥

अथ कोईरोगनआवेताकीदवा ।

चौ०—रविदिनखारीनमकखवावै । तावृषकोकोइरोगनआवै॥

अन्य ।

साँभरिनमकटकाभरिलीजै ॥ पानीपकैप्रातानितदीजै ॥

अन्य ।

लेउसोहागाखीलकराई । पीसिछानिआटासनवाई ।
नितप्रतिबारहमासखवावै । कोईरोगनिकटनाहिंआवै ।
अथ मनियांफूटैकारोग । दूसरानामरीवाँ पंचक ।
रीवाँरुजइकनामकहावै । त्वचातेरसोहोतेहैं ॥
कीरासूत्रऐसबहुपतरे । भीतरभीतरचलतेहैं ॥
जबकबछेदकरैंऊपरको । शोणितकछुकनिकरतैहैं ॥
केशवपरसादविचारिकहैं । वृषदिनदिनदूबरहोतेहैं ॥

दूसरनामसुनोयहिरुजकोमनियाँफूटीकहतेहैं ॥
चारादानाकमीखातेहैंदुखीबहुतपशुरहतेहैं ॥
याकीदशाप्याजबबहुदीजैचारिदाँपनितकहतेहैं ॥
केशवपरसादविचारिकेहैंवृषदिनदिनदूबरहोतेहैं ॥
एकमासभरताहिखवाओवाहीविधिकरदेतेहैं ॥
जबवहसकलवोधित्वचजैहैमरैंकिमसुखहोतेहैं ॥
दवानीकिपरमानिकजानौबुद्धिवानसुनिकरतेहैं ॥
केशवपरसादबिचारिकैहैंवृषदिनदिनदूबरहोतेहैं ॥ ३ ॥
रूपघटैकमताागतिहोवैऔरदवाछिखिदेतेहैं ॥
भुजयलचिरियाएककहावैपंखसहितधरदेतेहैं ॥
यवपिसानमेंपिडबनावैमुखपसारिभरिदेतेहैं ॥
केशवपरसादविचारिकैहैंवृषदिनादिनदूबरहोतेहैं ॥ ४ ॥
वर्षाऋतुमेंढूँढमिलिहैंलैकेवृषकोदेतेहैं ॥
नामएकसीताकेएँडुरीकिर वावनवनहोतेहैं
कीकरियाझींगुरैखवावैभौमवारकोकहतेहैं ॥
केशवपरसादविचारिकैहैंवृषदिनादिनदूबरहोतेहैं ॥ ५ ॥

दोहा—करियासापकिकेचुली, तोलाभरिपरमान ।
गुडकेसाथखवाइए, भौमवारकोआन ॥
जोकीरायहिरोगको, देखनकामनहोय ।
जाछिनबूथीरुधिरचलि । चुटकीमेंधरुसोय ॥

चौ०—बहुतजोरकारदाबोताही । कीरानिकरैपकरोवाही ॥
हौलेहौलेचुटकिनखैंचै । कीराएकहाथभरिऐंचै ॥

निकरजायजबकीशतनते । सदारहैवृषसुखसामनते ॥

अथ ओदीनामरोग । बछियाबछरनकेहोताहै ।

दोहा-गोमहिषिनकेशिशुनको, वोदीरुजह्वैजाय ।
रोमगिरैढालीलखै, ताकोकरौउपाय ॥
लीजैपातभठारिकै, कूटिपीसिमलवाय ।
कीपानीमेंउसनिकै, बच्चनकोनहवाय ॥

अन्य-टटका ।

मंगरकीरविवारको, माटीचिकनीलेय ॥
क्वाँरीकन्याविप्रकी, पोतिसकलतनुदेय ।

अथ रोगकानाम तूल । बच्चनकेह्वैजाताहै ।

दोहा-तूलनामरुजकोकहौं, महाकाठिनदुखदेय ।
गोमहिषिनकेशिशुनको, पकरातिदेरनलेय ॥
चौ०-धरणिगिरैसोबहुमुरझाई । चारौंचरणदेइफैलाई ॥
ठढकियेपगभुँइनाहिंधरै । डेढपहरमेंसोवहमरै ॥
दवा-सर्षपतेलछटांकमँगाई । नारिभरायकैदेयपियाई ॥

अन्य दागकौविधि ।

नथुनाऊपरजहाँचिकनाई । तहँदागतेनीकदेखाई ॥

अथ नेत्रपिरायकेलक्षण व दवा ।

दोहा-आँखिनमेंसुरखीरहै, दिनकोआँसुबहाय ।
रातिकोकीचरआवई । जानोआँखिपिराय ॥

दवा ।

चौ०-शूकरविष्ठालेउमँगाई । टकाएकभीरताहिखवाई ॥

अन्य ।

दो०-भुजयलपक्षीआनिके, पंखउखारुसुजान ।
धरुपिसानकेमध्यमें, पशुकोदेउविधान ॥

अन्य ।

चौ०-रविकेदिनबढईबोलवावै । बसुलाऔररुखानीलावै ॥
इकइकचोटखुरनपरमारै । मुरदानखपरसोकरिधारै ॥

अन्य ।

दोहा-रजस्वलास्त्रीवसन, रुधिरभीजढुँढवाय ।
थोरापशूखवाइये, रविकुजवासरलाय ॥

अथ आँखिनमेंढरकाबहैकेदवा ।

दोहा-आँसूआवैंवृषभके, ढरकाबहैनिदान ॥
ताकीदवाकराइये, हगशीतलसोजान ॥

चौ०-सींगनबीचपछारीजानौ । खालीगडहासोपहिचानौ ॥
तामेंतेलडारुरेंडीको । पांचसातदिनमेंलेनीको ॥

आँखिनकीफूलीमांडाठेठरकीदवा ।

दोहा-सकलचौपयापशुजवन, आँखिनरोगबखानु ।
फूलीमांडाकीदवा , अजमाईयहजानु ॥

चौ०-अर्कदूधधेलाभरिलीजै । सातबुंदसीरातेहिदीजै ॥
रविकेदिनयहकरौदवाई । चारौतरफआँखिकेभाई ॥
सतदफातेहिदेहुगरेरी । बारबार अँगुरीलैबोरी ॥

दूजीलीकहोननाहिंपावै । ऐसीतरहदवालगवावै ॥
खालउधेलिवहिठौरकिजैहै । फूलीनीकिसकलविधिहै ॥

अन्य ।

हरियरिचुरियाँकांचकिलावै । डारिखरिलमाँखूबपिसावै ॥
शिरसपातकोरसमिलवाई । तेहिकेसातखरिलकरवाई ॥
सुरमाकेसमहैजबजावै । तबहींवाकोसुखेधरावै ॥
चुटकीभरिसोलेयनिकारी । आँखिनमेंतेहिभरैविचारी ॥
सातरोज लगु दवाकरावै । फूलीठेठरनीकदेखावै ॥

अथ रतौंधीकीदवा ।

दोहा-दिनकासूझैवृषभको, निशिमेंआँधरहोय ।
ताकेअंजनलेपुदृग, जाइ रतौंधीखोय ॥
चौ०-मछरीकापित्तामधुलीजै । दूनोसमकरियघोपिधरीजै ॥
यहअंजनदृगदेउलगाई । पांचरोजमेंनीकदेखाई ॥

अन्य ।

कुकुनकोलेकीटमँगाई । पानीमेंतेहिपीसिलगाई ॥

अन्य ।

गुंजादलकोपीसिनिचोवै । ताकोसुरसंनेत्रलगवावै ॥

अथ जारामाँडाफलीठेठरकेलक्षण व दवा ॥

दोहा-जारामाँडावृषदृगन, बहुतमहीनदेखाय ।
फूलीठेठरमोटहै, स्याहीपरलसिजाय ॥
चौ०-गजकोलेउनखूनमँगाई । पानीमेंघसिदृगनलगाई ॥
एकइसरोजाकिहैपरमाना । नेत्ररोगठेठरमिटिजाना ॥

दोहा—मामीराअरुतूतिया, सेंदुरसमकरिलेउ।
निंबुकागदीकेरसहि, तामेंखलकरिदेउ॥
चारिपहरतेहिरगरिकै, सुरमालेउबनाय।
अँगुरीतेआँखिनभरौ, सोरहदिनलगुजाय॥

अन्य।

चौ०—चीनीबर्तनकोलेटुकरा। अग्निजरायताहिलैधरा॥
अरुणाफिटकरीखीलकराई। दोनौसमकरिपीसिलगाई॥

अन्य।

गजनखखिंनीबीजमँगाई। समकरिनिंबकेरसै घोटाई॥
आठरोजदुँहुबेरलगावे। फूलीडेडरदोउमिटजावै॥

अन्य।

मानुषशीशकाओस्थमगांइ बहुतपुरानलेइढुँढवाई॥
धिसिपानीमेंताहिलगावे। नेत्ररोगकीजरमिटजावे॥

अन्य।

सेंदुरुफमिसिरीलेउमँगाई। लालफटकरीखीलकराई॥
औरखपरियासबसमडारी। पीसिखरिलसुरमाकरिधारी॥
जोनहिंकहूँखपारियापावे। सँगबसरीताहियोजामिलावे॥

अन्य।

सेंदुरुफमिसिसमकारीदीजै। निंबूरससेखरलकरीजे॥
मुर्गीकेपरभेलगवावे। यहसुरमारुजखोयबहावे॥

अन्य।

गेरूअरुसेरापिसवावै। दूनौनेत्रनमेंफुँकवावे॥

अन्य ।

गोलीजाराआँखिनकोमिटावैकी ।

सुरमावोहीलेउमँगाई । औरचारू सूरससउतलाई ॥
सोराकलमीगजकोदंता । नींबूरससमखरिलकरंता ॥
चनाप्रमाणबटीबनवाई । घामेसुखैधरोघरभाई ॥
पानीमेंघसिअंजनकरिये । जाराकटैनेत्रदुखहारिये ॥

अन्य ।

जारा मांडा फूली अच्छाकरैकीदवा ।

श्यामकाँचकीचुरियालावै । हरदीसाँभरिनमकमिलावै ॥
औरफटकरीकाचीलीजै । विष्ठकबूतरमिलैसोदीजै ॥
समकीरामिहीलेउपिसवाई । मांडाफूलीपरफुँकवाई ॥

अन्य ।

गोलिनदारकटैयालावै । ताकेफलकोरसनिकरावै ॥
नेत्रनमेंतोहिदेउचुवाई । नेत्रनकाठेठरामिटिजाई ॥
प्रथमनेत्रमेंवरमदेखावै । दवानीकिबहुशकनहिंआवै ॥
फिरपीछेकोनीकदेखावै । अरुणवरणभीतरह्वैजावै ॥

अथ रुजिनावृषभलक्षण व दवा ।

दोहा-रोगजुवाँरूजीकहौं, देहीमेंह्वैजाय ।
तासोंपशुदूबररहै, चाराथोराखाय ॥
वृषभरुजीलाजानिये, रोमगिरेसबअंग ।
जहँतहँखालउधीलई, रूपहोयबहुभंग ॥
चौ०-रूजीनामाकीमंइकहोई । पशुकेतनुप्रगटैबहुसोई ॥

खालरोमसगरेच्छुनिखाई। दिनदिनदूबरह्वैदुखपाई॥

दवा।

सिंगुवाँकंडाभस्मकरावै। नीरमिलायअंगमलवावै॥

अन्य।

हरदीसर्षपतेलमिलाई। वाकोलै तनुमें चुपराई॥

अन्य।

बीजसरीफाकेमँगवाई। कीखिन्नीजलपीसिलगाई॥

अन्य।

तितिलीकीपातीपिसवावै। जलकेसाथअंगचुपरावै॥

अन्य।

साँभरिनमकापिसावौभाई। रसनामेंदशादिनमलवाई॥

अन्य।

आँवाभस्मकपरछनवावै। हुक्कापानीतेहिमिलवावै॥
सकलशरीरदेहुमलवाई। कइउरोजलगकरोउपाई॥

अन्य।

मुरजीभारकरहुँवालावै। गेहूसर्षपतेलमिलावै॥
देहीमें बहु मालिस करै। हूजी मरै रोगदुख हरै॥

अन्य।

नींबपातजलमेंउसनावै। वासोमलिदशादिनअन्हवावै॥

अथ चपठीवाकिलनिनकीदवा।

दोहा—चपठीऔरकिलोनजो, वृषतनुमेंह्वैजाय।
ताकीदवाकराइये, किर्मरोगनशिजाय॥

चौ०-मुरकुडकीपातीमँगवावै । जलमेंचुपैरवृषभअन्हावै
लकरीमुरकुडकोरिमँगाई । खूटागाडिवृषभबँधवाई

अथ कमीलावृषलक्षण ।

दोहा-वृषभकमीलाजानियो, यहिपरमेहसुनाम ।
दवाकियहुजजातहै, तेहिमतिराखोधाम ॥
झराकरैनरियायबहु, दूबररहैहमेश ।
कमताकतशेखीबडी, कछुतनुरहैकलेश ॥

अथ वृषभमाहिषकेझरीलारोगलक्षण व दवा ।

दोहा-वृषभझरीलाजानिये, जेहिनितझरैमनोज ।
दिनादिनदूबरहोतहै, तागतिघटैसोरोज ॥

दवा ।

चौ० पीपरलाखकतीरालीजे । खदिरसफेदामिलैतेहिदीजै
दुइदुइतोलावजनकरावे । जीराश्वेतछटाँकपिसावे ॥
चावरसाठीकेमँगवावे । आधसेरतेहितौलिधरावे ॥
गायकेदूधपकायखवावे । प्रातकालइकइसदिनपावे ॥
अन्य-झलवेरियाजरछोलिमँगाई । सेंबरबबुरछालिमिल-
वाई॥सुखैपीसिचूरणवनवावे । जौपिसानसँगपिंडखवावै

अन्य ।

दोहा-झलबेरियाअरुबबुरकी, जरकीछालिछोलाय ।
दुइदुइतोलासबकरो, बबुरपातमिलवाय ॥
चौ—केलाजरतोलाभरिलीजै । एकछटांकछोहाराकीजै
आधसेरगोदूधमँगावे । सकलपीसितेहिगुरैखवावे ॥

अन्य–सिंगरीबबुरकेरिमँगवाई । जामेंबीजपरैनहिंभाई ॥
चनाकेआटामेंतोहिदीजै । आधआधसेरैकरिलीजै ॥
अन्य–खदिरश्वेतकेछाजरलीजै । औरकतीराकोतेहिदीजै ॥
तोलाएकएकपरमाना । यहआटासँगदेउसुजाना ॥
अन्य–मूरीबीजसौंफसितजीरा । इकइकतोलालेसबधीरा ॥
यवआटामेंपिंडबनवाई । सातरोजलगुवृषहिखवाई ॥
अन्य–श्वेतखैरअरुलेउकतीरा । अँवरामिलैकरौइकठौरा ॥
इकइकतोलाकीपरमाना । गेरहदिनलगुयहैविधाना ॥
साँझभिजैकैप्रातखवाई । रोगझरीलादूरिकराई ॥
अन्य–बेरिअनारबबुरकीपाती । दुइदुइतोलाकरुयहिभाँती ॥
फलबब्बुरदुइतोलालीजै । पीसिमहीनवृषभकोदीजै ॥

अथ अंडकोशसूजैताकेलक्षणवदवा ।

दोहा–कटवावधियाकेकिये, अंडकोशउसियायँ ।
याकीचिंतामतिकरो, जलदीनीकदेखायँ ॥
चौ०–दूसरिविधिवादीतेसूजै । तेहिकीदवाबहुतदिनकीजै ॥
तीसरिविधिगरमीतेजानो । ताकीदवाकरौबुधवानो ॥
यहरुजगरमीतेकमहोई । बादीतेवृषकोदुखदेई ॥
जोगरमीतेवरमदेखावै । मुलतानीमाटीमँगवावै ॥
शीतलपानीमेंपिसवाई । अंडनऊपरलेपकराई ॥

अन्य ।

जोसरदीबादीपहिचानो । तेहिकीदवाबहुतविधिजानो ॥
काराजीरीअरुअजवायन । गेरूसबसमनीरपिसायन ॥

गरमकरायलेपकरिदीजे । सततेंदिनतेहिनीकोकीजे ॥

अन्य ।

पानीमेंतिलश्यामपिसावै । अग्निपकायलेपकरवावै ॥

अन्य ।

लेउदालचीनीगुडभाई । पीसिगरमकरिलेपकराई ॥

अन्य बफारा ।

गोगोबरटाटकलैआवै । पानीमिलैपकायलगावै ॥

अन्य ।

योगियारंडकेपातमँगावै । जलमेंचुरैबाफसेंकवावै ॥
वाहीगरमनीरभेधोवै । पटकैअंडबहुतसुखहोवै ॥

अन्य ।

जलमेंगेंदापातउस्यावै । अंडकोशपरबाफदेवावै ॥
श्यामामिर्चइकतोलापीसै । लेपनाकियेसोरुजनाहिंदीसै
फिरवहगेंदापातबँधावै । नीकोहोयबहुतसुखपाव ॥

अन्यदवाखानेकी ।

सैंहिजनछालीलेउमँगाई । रंडाजरकीबकलीलाई ॥
गोलकटैथालेउसमूला । सुखैमहीनपीसिकरितोला ॥
सोंठिलेउमैदापिसवाई । सकलदवाकेसममिलवाई ॥
घृतमेंएकछटांकमिलावै । प्रातहिदशदिनवृषाहिखवावै ॥

अन्य ।

जवाखारगेरू अरुपिपरी । सोंठिमिलायखरिलमेंरगरी ॥
तोलातोलाभारिसबलीजै । मदिराआधपावमेंदीजै ॥

अथ गजचरणरोग । दूसरानामफीलपाँव ।

दोहा—गजसमानजाकेचरण, सूजेबहुतदिखाँय ।
सोगजचरणबखानिये, रुजकोनामकहाय ॥

चौ०—दूसरनामसुनौमनलाई । फीलपाँवसबकहँसुनाई ॥
काहूकेइकपाँवमेंजानौ । चारौमेकेंहुरोगबखानौ ॥
बदसूरतिबहुतैह्वैजावै । चलैनपावैपशुलँगरावै ॥

दवा ।

दोहा—छैपटोलजरानिबदल, छोटीहर्रमिलाय ।
पावएकघृतमेंमिलै, पशुकोदेउखवाय ॥
अजवाइनसैंधोनमक, वायाभिरंगमिलाय ।
सोंठिपीपरीसमकरौ; इकइकतोलालाय ॥
दूनोगुडमेंसानिकै, पशुकोदेउखवाय ।
फीलपाँवरुजकीव्यथा, दुइमाहिनामेंजाय ॥

अन्य ।

चौ०—लेउफरहकरीकाचिपिसाई । माखनमेंतेहिमिलैखवाई ।

अन्य ।

जोइनतेनाहिंनीकदेखावै । तौनस्तरलैपीबबहावै ॥
जलमेंधोयसाफक्षतकरिये । ताऊपरयहदवाचुपरिये ॥

दोहा—एकछटाँकखजूरिफल, जलमेंदेउभिजाय ।
दुइदिनलगुभीजैजबै, मलिकैलेउछनाय ॥
सज्जीखारमँगायअरु, जवाखारकोलेउ ।
दुइदुइतोलाकेवजन, ताहीजलमेंदेउ ॥

यहऔषधगजचरणमें, एकमासलगवाय ।
नीकहोयपशुसुखबढै, करियोयहीउपाय ॥

अन्य ।

गंधकातिलकेतेलमें, पीसिलगावैकोय ।
फीलपाँवगजचरणरुज, खोयबहावैसोय ॥
बहुतकठिनयहजानिये, नरपशुकोदुखदेय ।
दवाबहुतदिनलगकरौ । नीकहोययशलेय ॥

अथ जहरवातलक्षण व दवा ।

दोहा–जोनानौपशुवृषभके, जहरवातरुजहोय ।
ताकेलक्षणकहतहौं, जानिलेउसबकोय ॥
चौ–०गर्दनसूझिजायबहुभारी । चारापानीमुशकिलडारी
सूझनिबहुकठोरह्वैजाई । सबपशुकोदुखदेतसदाई ॥

दवा ।

कुटकीऔबंडारमँगावै । तोलातोलाकरिपिसवावै ॥
एकटकाभरिकाराजीरी । आटासानिजवनकाधरी ॥
एकादिनामेंदेउखवाई । कैयोबेरताहिमनलाई ॥

अन्य ।

कुटकीपिपरीवायविरंगी । चीतचिरैताककराशृंगी ॥
सोंठिमिर्चअरुजीराश्वेता । काराजीरिसमसबलेता ॥
इकइकरुउछटाँकमँगाई । पीसिकूटिकपराछनवाई ॥
लहसुनअरुबंडारापिसाई । पावपावदुहुँदेउमिलाई ॥
यवकेआटामिलिसनवावै । एकछटांकप्रमाणबतावै ॥

पाँचसातदिनपशुकोदीजै । जहरवातरुजकोहरिलीजै ॥

अथ मसालासबतरहकेजहरवातपरखवावैकाबहुत ।

अच्छाहै ।

दोहा—जहरवातसबतरहको, जो पशुके होजाय ।
ताकोदवाखवाउयह, रोगदूरिबहिजाय ॥

चौ०—चीतचिरैताककराशृंगी । जवाखारकुटकीऔभृङ्गी ॥
पिपरीबडीपीपरामूरी । बीचपलासैंगूगुरुधरी ॥
सूखसँभालूपातमँगावै । औरमिरोरफलीमिलवावै ॥
पावपावयहिदवाकरीजै । आगेवजनऔरलिखिदीजै ॥
सज्जीसांभरिनमकमँगावै । साधोखरियाकच्चालावै ॥
काराजीरीघोडवचलीजै । जीराश्वेतहींगमिलिदीजै ॥
अजवायनदेशीखुरसानी । राईअदरखफलइंद्रानी ॥
नींबबकैनापातमँगावै । बेलगूदसबसुखैमिलावै ॥
मिरचइन्द्रयवदेउमिलाई । गुरचहर्र्छेदिमँगवाई ॥
आधआधसेरसबलीजै । आगेऔरवजनसोकीजै ॥
बडीहर्रहरदीबंडारा । कचरी सोंठि बहेरे डारा ॥
सँहिजनछालिपुदीनाप्याजू । इकइकसेरदवायहसाजू ॥
कोचिलातीनिछटांकभिजावै ।बकलछीलितातहिमिलवावै॥
लेउसोहागाऔरफटकरी । दूनोंबीलपावइककरी ॥
सकलदवाकुटवायछनावै । आधपावमौताजखवावै ॥
सर्वजहरवातनपरदीजै । नीकहोयदुखकोहरिलीजै ॥

अथ लेपअजमायाहै ।

सुरसमकोइयाकाराजीरी । अरुचण्डारपीसितोहिधरी ॥
गुनगुनकरिलेपैथोपवावै । ऊपर मद्दुवापान बँधावै ॥

अन्य दवाखानेकी ।

सूतकेरिपातीइकपाऊ । मिरचैएकछटांकमिलाऊ ॥
कूटिपीसिआटासनवावै सोगलियायवृषैमुखनावै ॥
महथैपैयहदवाखवाई । यहितेऔरआधिकनाईभाई ॥

अथ गरदव्वारोगलक्षण किस्मजहरबातकीहै ।

दोहा-गरदव्वारुजनामहै, महाकठिनगलशूल ।
सूजनिआवैहलकमें, जहँरसनाकोमूल ॥

चौ०-मुखमेंहाथडारिकेदेखै । बहुतजूडताकोअवरेखै ॥
लक्षणजहरवातकेजानौ । हैअसाध्ययाकोपहिचानौ ॥
प्रथमदानकछुवृषहितकीजो । तापीछेफिरिदवाकरीजो ॥

दवा-मेंथीआधपावमँगवाई । काँदातीनिछटाँकमिलाई ॥
पानीमेंदूनौउसनावै । फिरिमलिकैतेहिछानिपियावै ॥

अन्य नासु ।

बेनवरघुवाँनासुकोदीजे । रोगगरदवानीकोलीजे ॥
अन्य-सर्षपतैलअफीमामिलाई । नासुवृषभकोदीज्योभाई ॥

अन्य दवाखानेकी ।

दोहा-देउमसालावृषभको, ऋतुहेमंतसोजानि ।
यासोतनुमोटोरहै, महावृद्धिबलखानि ॥

अन्य-करियारीजरलेउमँगाई । आधपावपिसवायखवाई
अन्य-तेलियाकन्ददवाइककहिये । जिमीकन्दसमपाताल-
हिये ॥ ताकोमूललेउखोदवाई । चनाकेआटापीसिखवाई ॥
अन्य-ग्राहशीशकीअस्थिमँगावे । ताहिपीसिकछुवृषहिख-
वावे ॥ पशुशालामेंजोधरवाई । तहाँगरदबानिकटनजाई ॥

अन्य

मानुषअस्थिछटाँकपिसावै । चनाकेआटासानिखवावै ।
अन्य--पल्लीएकसजिवमँगाई । आटासानिमध्यधरवाई ।
देउखवायवृषभकोजबहीं । रोगगरदबाजाइतबहीं ॥

अन्य लेपन ।

लैवंडारमहीनपिसाई । काराजीरीसममिलवाई ॥
सुरसमकोयमेंताहिपिसावै । महुवाकीपतरीबनवावै ॥
गरमकरैपतरीपरचुपरै । टोटीहलकेऊपरधरै ॥
तेहिपररुईपहलधरवाई । कपराभेतेहिदेउबँधाई ॥

अन्य बफारा ।

पातधतूरसँभारूपिलुवा । अंबरवेलिरूसकीमिलुवा ॥
इन्है उसेइ बफारा दीजै । गरदब्बारुजनीकोलीजे ॥

अन्य दागदेनेकीविधि ।

दहिनेपुट्ठापरसुनुभाई । दागत्रिशूलठाढकरवाई ॥

अथ रोगकानामपटका ।

दोहा--एकीएकाजोवृषभ, धरणीमोंगिरिजाय ।
वेदमऔरबेहोशहै, सोयमपुरकोजाय ॥

चौ०-पहरएकदुइमेंमारिजाई । यहरुजपटकानामकहाई ॥

उपाय ।

एककानवाआधेशिरतक । देउदगायनकीजैकछुशक ॥
मृत्युनहोयतौनीकिदेखावै । औरउपायनकछुबनिआवै ॥

अथ रोगकानामबुडका ।

दोहा-बुडकारुजवृषमहिपकै, जोहोवैपहिचानु ।
बेदमऔरबेहोशहै, बूडनीरजनुजानु ॥

उपाय ।

चौ०-मीठागुडइशरसेरमँगावै । सातबेरवृषपरउतरावै ॥
लैलैमहावीरकोनामा । सोधरिराखुआपनेधामा ॥
गुरधनियाँवाकीबनवावै । भौमवारबँदरनचबवावै ॥
कछुकपुण्यवृषकेहितकीजै । यथाशक्तिमनमेंगुणिलीजै ॥
औरदवायाकी नाहिंभाई । महावीरकी कृपा सेवाई ॥

अथ रोगकानाम घुरका यहजहरवातकी ।

किस्म गरदम्बाकीतरहहै ।

दोहा-घुरघुराय घुरै घुरकि, लेफाडारवहाय ॥
सियरेकर्णविलोकिये,लक्षणादियेबताय ॥
चारौपदफैलायकै, लोटिधरणिमोंजाय ।
सबशरीरशीतलकरै, नेत्रखुलेरहिजाय ॥
चौ०-दूनोआँखिजाँयपथराई । अरुनथुननतेनरिबहाई॥
श्वासगँभीरकण्ठरुँधिआवै । घुरघुरायकैशब्दसुनावै
तातेघुरकानामकहावै । गरदम्बाकीदवाकरावै ॥

अथ वेधनरोगका नाम ।

दोहा—वेधनरुजकोनामकहि, महाकाठिनहैजेर ।
ताकेलक्षणपरखिकै, दवाकरौमतिदेर ॥

चौ०—हैजासमतेहिजानौभाई । वृषभमहिषिकोहैदुखदाई ॥
मरैबहुतनीकेहोयथेरा । ताकेलक्षणसुनौघनेरा ॥
आँवखूनमिलिदस्तजोआवै । फाटफाटगोबरदेखरावै
बहुतपातरापोंकैभाई । वेहिअधिककछुहैचिकनाई ॥

दवा ।

दोहा—बब्बूररियादक्षिणी, औरसिलमिलीजानु ।
आधसेरपातीदुवो, पीसितक्रमेंसानु ॥

चौ०—पाँचसेरमाठामँगवावै । तीनौघोरिकेनारिभरावै ॥
साँझभोरदुहुँबेरपियाई । अर्द्धअर्द्धपरमानबताई ॥
तीनिदिवसयाविधिकरुभाई । नीकनहोयतौऔरउपाई ॥

अन्य ।

पातीसरसइहरियरिलावै । आधसेरताकोकुचिलावै ॥
औरकतीराकोकुटवाई । आधपावकीवजनकराई ॥
घडाएकपानीघोरवावै । रातिओसमेंताहिधरावै ॥
थीरनीरवहिघटतेलीजै । दुइनारीवृषप्रातेदीजै ॥
साँझभोरपीवैदिनतीनी । रोगामिटैसबसंशयहीनी ॥

अन्य ।

मदिरागुडकीलेउमगाई । एकपावताकोतौलाई ॥
तामेंईसबगोलभिजावै । एकछटाँकवजनकरवावै ॥

साँझभोरदिनतीनिखवाई । वेधनरोगदूरिह्वैजाई ॥

अन्य ।

अँबिलीकीपातीलेआवे । पीसिछानिकैताहिपियावे ॥
एकदिनामेंकेतन्योबेरै । देउवृषभवेधनरुजहेरै ॥

अन्य ।

छिरकाकीसिकञ्जवीबनावे । अर्कगुलाबामिलायापियावे ॥

अन्य ।

मिसिरीआधपावपिसवाई । एकसेरपानींघोरवाई ॥
निंबुनिचोयकागदीदीजै । नारिभरायवृषभवहपीजै ॥

अन्य ।

पोदीनाइकपावमँगावे । तोलाएकमिरचामिलावे ॥
जलमेंपीसिवृषभकोदीजै । वेधनरोगकोनीकोलीजै ॥
अन्य मसाला चालीसा । यहचारौंरोगकोहै ।
मुनासिबहैघरमेंतैयारधरारहै । वक्तपरकामआवैगा ॥
दोहा—पटकाबुडकाधूरका, अरुवेधनकारोग ।
चारौंरोगअसाध्यकहि, सुनौचातुरेलोग ॥
चौ०—चूरणनामकहौंचालीसा । करिहैसबरोगकोखीसा ॥
अँवराहर्रबहेरालीजे । मेथीऔरकचेलियादीजै ॥
आधआधसेरैयहिलावे । आगूऔरप्रमाणबतावै ॥
सोंठिपीपरीमिरचभरंगा । अँबिलतासअजमोदैभंगा ॥
तवाखीरअरुमूढमँगावे । चीतकिलकरीताहिमिलवे ॥
साँभरिसैंचरनमकजोखारी । जवाखारअरुगूगुरडारी ॥

घोडवचमिलैतौलिसबलीजे । पावपावकीवजनकरीजे ॥
छालिसहींजनसुखेपिसाई । चारिसेरतेहिलैतौलाई ॥
एकसेरकरुसौंफविधाना । आगेऔरप्रमाणबखाना ॥
जीराश्वेतअसेतैहरदी । बिजपललाहौआँबाहरदी ॥
बेलगूदअरुककराश्रृङ्गा । काचिफटकरीखीलसोहागा ॥
असगँधसोवाबिजहुरहुरा । लोधपठानीकाराजीरा ॥
फलीमिरोरकलौंजीकुटकी । सर्वरोगकोदेहैफटकी ॥
इतनदिवाप्रमाणकरीजै । आधुआधुपावैसबलीजे ॥
कूटिपीसिकपराछनवावै । आधपावानितप्रातखवावै ॥
बरहौमासतुरगकादीजै । सर्वरोगताकोहरिलीजै ॥

अथ जोचमारबैलकोजहरकीगोलीखवाइकैमारिडारते हैं खानेकेवास्ते तहिकेलक्षण व दवा ।

दोहा—जेचण्डालचमारअरु, वृषकोजहरखवाय ।
जीवमारिहत्याकरैं, खाललोभअधिकाय ॥

चौ०—गोलीजहरतीनिविधिजानो । वत्सनाभशंखिया-बखानो ॥ तीसरनामसिंगियाकहिये । इनगोलिन-तेमृत्यूजोलहिये ॥ तिनके लक्षणअरुपहिचानी ॥ खायेपर परखो बुधवानी ॥

चिह्न ।

जीभओठसूजनिदेखरावे । बेहोशीहफफानिमुखआवे ॥
मुखतेबहुदुर्गंधिसोजानो । अरुआँखैंटेढीपहिचानो ॥
येलक्षणपशुके तनुदेखै । वत्सनाभविषादियोसोलेखै ॥

दवा ।

बथुईऔरपलाँकीलाई । दूनोंकेरसलेउकढाई ॥
एकएककोअलगदेवावै । दूनोंमिलिकैचहैपियावै ॥

अन्य ।

गर्मदूधबकरीकोदीजे । गऊदूधविधियहैभनीजे ॥

अन्य ।

खट्टातक्रलेउमँगवाई । निंबूकोरसमिलैपियाई ॥

अन्य ।

दोहा–यहिरुजमेंदुइराजतक, चाराखाननदेइ ।
जलकीजगहगुलाबदै, जहरदुःखहारिलेइ ॥

अथ शंखियाकीगोलीके लक्षण ।

दोहा–दाँतजीभसूखीलख, मुखपजलनदेखाय ।
आँखेंमाफिकरक्तके, देहबहुतगरमाय ॥
श्याहखूनपाँकैअधिक, बहुबदहोशजोहोय ।
हाथपाँयफैलायके, परारहैपशुसोय ॥
चौ०–यहिलक्षणयुतदेखियजांही । दीनशंखियाजानौताही ॥

दवा ।

दोहा–गौकेदूधमामिलै, घततोहिदेइपियाय ।
बढोशंखियाकोजहर, ताहीछिनहटिजाय ॥

अन्य ।

कत्थाश्वेतगुलाबमेंदेवै । जहरशंखियाकोहारिलेवै ॥

अन्य ।

केलाकीजरकोजललीजै । मिलैकपूरनारिभरिदीजै ॥

अन्य ।

लेगुलाबउत्तममँगवाई । मिलैकपूरसोदेउपियाई ॥

अन्य ।

अजादूधमेंघृतहिचुरावै । नारिभरायकैताहिपियावै ॥

अन्य ।

ईसबगोलळुवाबबनाइ । गाईकोदधिदेइमिलाई ॥
डारिगुलाबनारिभरिदीजै । जहरशंखियाकोहरिलीजै ॥

अन्य ।

विहिदानालवाबलैलीजै । याहीविधिपशुखानकोदीजै ॥

अथ सिंगियाजहरकीगोलिनकेलक्षण व दवा ।

दोहा—पोंकैमूतैरुधिरबहु, अरुबेहोशदेखाय ।
दशनजीभनालवरण, जहरसिंगियाआय ॥

दवा ।

चौ०गाइदूधतेहिबहुतापियावै । तासोपशुकोजहरामिटावै ।

अन्य ।

बरफकेपानीमेंमिलवाई । पीसिकपूरदेउपियाई ॥
जोयहपानीनहिंकहुँपावै । तौगुलाबमेंमिलैपियावै ॥
कीखीराकोजलानिकराई । अरुतरबूजनीकबहुभाई ॥
ईसबगोलळुवाबनिकारै । कीविहिदानाभिजैसवाँरै ॥
इनमांकोइएकोमिलिजावै । पीसिकपूरमिलैतेहिप्यावै ॥

अथ खुरपकाज्वरलक्षण व दवाअँगरे-
जीमत । इलाजुलवहायमकिताबकोमत ।

दोहा-कहौंखुरपकाज्वरप्रबल, याकोसुनौहवाल ।
तीनिविलायतकेवृषभ, कीन्हेंसिसकलविहाल ॥

चौ०-हिंदुस्तानअवधकेदेशा । तहँखुरपकाकरेकमखीशा ॥
जेतनेपशुरोगनतेजकरैं । दवाकियेतेजलदीसँभैरं ॥
जेवृषबेबरदाशिरहतिहैं । कोइकोइतामेंमृत्युगहतिहैं ॥
फिरंगस्तान राज अँगरेजी । तहँखुरपकाकरेज्वरतेजी ॥
गरुवशरीरकेरवृषजानौ । ताहतिबड़दुः खवखानौ ॥
थोरेपशूमरतिहैंभाई । फिरंगस्तानदवाअधिकाई ॥
इंगलिस्तानमुलुकइकहवै । तहँखुरपकादुःख बहुदेवै ॥
जेतनेपशुनकेरज्वरआवैं । तामेंआधेतेहिमरिजावैं ॥

लक्षण ।

सकलशरीरथरथरीपाहिलै । फीरबोखारदेहमिंफैलै ॥
चरणहाथमुखसींगगरमहैं । दानापैरंजीभमुखमेंहैं ॥
हाथ पाँउ मुख थन नथुनन मा । परैंफफोलायीहठौरनमा ॥
श्रवणशरदमुखलारबहतिहै । क्षुधाजायतनुरोमफटतिहै ॥

दवा ।

दोहा-चरणखुरीमुखधोइये, प्रतिदिनपटवरजानु ।
गर्मनीरकरवायकै, साफकरौबुधवानु ॥

चौ०-पाँचटाँकफटकरिलैआवै । आधसेरपानीघोरवावै ॥
जखमऔरमुखयासोंधोवै । जलदीनीककरैसुखहोवै ॥

बगलअथनथनसाफरखावै। औरजखमजहँहोइघोवावै ॥
कपराकीपोटरेएकआइ। माछिनकीकछुजतनकराई ॥

तेलखुरपकोकजखममेंलगावेका।

चौ०—पावएकअरसीकोतेला। एकछटांककपूरेमेला ॥
तारपीनकोतेलमँगावै। तोलाडेढताहिमिलवावै ॥
अग्निपकायकपूरेडारै। शीशामेंभरिकैतेहिधारै ॥
जखमकेऊपरचुपरैजबहीं। कीरामरैनऔरौपरहीं ॥
माछीलगैंजोमुखमेंआई। तेलकपूरमिलायलगाई ॥
जोतेजीबहुज्वरकीहोई। औरौदवाकरौ पुनिसोई ॥

दवाखानेकै।

नवमासे करपूर मँगावै। तोलाभरिसोरामिलवावै ॥

दोहा—मादिरातोलातीनिले, पीसिकपूरमिलाय।
तापाछेसोरामिलै, याविधिकरौउपाय ॥
शीतलपानीसेरइक, तामेंसकलघोराय।
नारिभरायकेदीजिये, ज्वरकोशांतिकराय ॥

अन्य।

चौ०—कटुकाचिरैतालेउमँगाई। तोलातीनिताहिपिसवाई ॥
उतनेसाँभरिनमकमिलावै। पंद्रहमासेसोरालावै ॥
राबामिठाईडेढछटाँका। पानीआधसेरकूपैका ॥
सकलपीसिकैएकमिलावै। नारिभरायवृषभमुखनावै ॥
हरियरिनरमघासतेहिदीजै। तापाछेविधिऔरकरीजै ॥

अन्य भोजनपथ्य।

चाउरकीदरियापकवाव। वृषकोपेटभरायखवावै॥
डेढछटाँकमिठाईनावै। अर्द्धछटाँकनमकामिलवावै॥
दुइइकबेरयहैविधिकीजै। दरियामिलैखानकोदीजै॥

अन्य हिन्दुस्थानीमत लक्षण व दवा।

दोहा–दमैबहुतशोशाअधिक, चाराखायननेक।
नथुनाबोलैंवृषभके, चरणधरणिनहिंटेक॥
चौ०–मुखमेंहाथडारिकैदेखै। तप्तजानिज्वरताहिविशेखै॥
लारबहैकछुमुखतेआई। याकेलक्षणादियेबताई॥
चारौचरणउतारिज्वरआवै। फूटैंखुरीरोगदरशावै॥

दवा।

गुञ्जादलइकपावापिसाई। जलकेसाथामिलैमुखनाई॥

अन्य।

श्यामामिर्चदुइतोलालावै। तामेंघृतइकपावमिलावै॥
जलकेसाथमिर्चपिसवाई। साँझभोरदिनतीनिपियाई॥

अन्य।

ईसनिमूरिपावइकलीजै। ताहिपीसिमिलिघृतसँगदीजै॥
तीनिदिवसनितप्रातखवावै। पीछूदवाऔरकरवावै॥

अन्य।

पीपरपरकीनींवमँगाई। वाकेदलइकपावपिसाई॥
गोघृतवजनबराबरिलीजै। तामें मिलैवृषभकोदीजै॥

अन्य ।

तिल्लीश्वेतआधसेरलावै । जलमेंपीसिवृषभमुखनावै ॥
दोहा-श्यामउरदपिसवायकै, रोटीलेउबनाय ।
एकतरफकाचीरहै, एकतरफपकिजाय ॥
चौ०-तामेंसर्षपतेललगावै । छेदिगूंदिकैबहुचुपरावै ॥
थोराथोरावृषहिखवाई । खुरपक्काज्वरदूरिकराई ॥

अन्य ।

श्मशानकीमाटीलावै । कछुकअस्थिमिलितहिखोदावै ।
पीसिकूटिकैराखुधराइ । चारिपाँचदिनवृषहिखवाई ॥

अन्य ।

बब्बुरकीछालीउसनावै । सोजलबहुतगाढऔटावै ॥
खुरकेजखमदेउचुपराई । बहुमजबूतहोयसुनुभाई ॥
अथ खुरपक्काखुरहाज्वरझारैकामंत्रसाबर ।
अकतरखुरबावकतरदार । पाकैनीरमैंदिरउजियार ॥
आगेअर्जुनपाछेभीम । मोरखोरनाग्वादैसिंह ॥ गोरखना-
थनिहालीबाली । गोरखनाथकिबाचाफिरी ॥ मेरीभ-
क्तिगुरुकीशक्तिफुरोमन्त्रईश्वरोवाचआदेशगुरुकी ।

मन्त्रविधि ।

चौ०-यहेमंत्रपढिकरौविधाना । खुरज्वरनाशनहैपरिमाना ॥
एकहाथभेजलभारिलावै । पढामन्त्रमुखफूँकतजावै ॥

इकइसवेरमंत्रपढिकीजै । वाहीजलमुखछींटादीजै ॥
देहीछिरकिचरणछिरकावै । जौनबचैसोमुखैपियावै ॥
तीनिदिवसनितप्रातैकरै । औरौकछुकदवाअनुसरै ॥

अन्य । दूसरामंत्रसाबर, घुरका, बौंडी, डिंगरा, खुरपका-रोगनाशन ।

गंगयमुनदोबहैंसरस्वती । गऊचरावैगोरखयती ॥
गोरखयतीकिबाचाफुरी । नामहुंफूटेनआवैखुरी ॥
जारामारामाँदविसहरी । बडुकाबौंडीडिंगरारुजजारी
भस्मखुरखुट । दोहाईनोनाचमारीकीमेरीभक्तिगुरुकी
शक्तिफुरोमंत्रईश्वरोवाच ।

मन्त्रविधि ।

चौ०—नींबकेटेरुवाभेझरवाई । पाँचबेरपढिमंत्रसोहाई ॥

अन्य—तीसरामंत्रखुरपकाज्वरझारैका ।

गुडगुडझोपरीमुहैनआवैफूटैखुरी । मैराजाकाकुरहिलहो उराजैमहिकासौंपीगाय । मोरेचराएवहिलवियाय ॥ मोरे-चरायेवाढैनजाय वेढेजायसहरदुइघोडे ॥ दोहाईपाँचौ वीरपंडवनकी । धनछाँडिकैसोरिनजाय ॥

मन्त्रविधि ।

चौ०—एकहाथमेंनरिभरावै । पढिपढिमंत्रताहिफुँकवावै ॥
ग्यारहवेरमंत्रपाढिफूँकै । फेरिवहैजलमुखपराछिरकै ॥
थोरावृषभैपियनकोदीजै । सांझभोरादिनतीनिकरीजै ॥

अथ विसहरारोगलक्षण व दवा ।

सो०—फुटकीमिलीगँधाय, गोबरपोंकैनरिसम ।
पेटझरैअधिकाय, दिनादिनदूबरहोतहै ॥

चौ०—गोवृषमहिषीमहिषबखानौ। रोगकठिनयहदवाप्रमानौ॥
बनमेंबिरवाएककहावै । ताकोनामविसहरागावै ॥
पातपलाशकेरअनुहारी । बोंडाचलैमहीपरभारी ॥
आधुपावतेहिपातपिसाई । नारिभरायकेदेउपियाई ॥
सातरोजलगप्रातखवावै । नीकहोयपशुबहुसुखपावै ॥

अथ विसहरारोगदूसरीकिस्मकाताकेलक्षण ।

दोहा—रोगबिसहराजानियो, वृषमहिषीकेहोय ।
थरथरायकाँपैअधिक, मुखसूखैदुखसोय ॥

चौ०—चाराखायनजलसोंनेहा । नितप्रतिदूबरिहोवैदेहा ॥
यहिरुजकेलक्षणपहिचानौ । बहुतमरैनीकेकमजानौ ॥
अधिकउपायदवाजोकरिहै । मुश्किलतेसोनीकोहोइहै ॥

दवा ।

बाँबीदिमककीमाटीलावै । जौननवीनबहुतदेखरावै ॥
पानीमेंतेहिपीसिसनावै । वाकीगुरियागोलबनावै ॥
शनरसरीमसकलगुहावै । मालबनायवृषभपहिरावै ॥

अन्यलप ।

सोवाबीजजवायनिसरसौं । पाकीअँबिलीकालेसरसौं ॥
सेंधौजवाखारअरुराई । हरदीतामेंदेउमिलाई ॥
सकलदवासमभागपिसावै । गुनगुनकरिमुखलेपकरावै ॥

ऊपरतेपटदेउबँधाई । तीनिरोजलगुयहैलगाई ॥
झारैमंत्रनीकैह्वैजावै । दुहूँविसहरनकोयहभावै ॥

अथ मंत्रसावर ।

आरासारासरसरा । चरैसमुद्रकेतीर ।
पंख डोलावैविषझरै । निर्विषहोयशरीर ॥
दोहाईनोनाचमारन । इति मंत्रझारनविधि ।

चौ०-अर्कपातछोटापलईका । तापरडारुदूधवाहीका ।
पाँचबूंदको हैपरमाना । ताहिबराबरिगोघृतसाना ॥
कुशकीडाभलेउइकआनी । तापरघेपिघेपिपढ़ुवानी ॥
पढिपढिमंत्रफूँकुपातापर । कुशभेघेपिघेपिवाहीपर ॥
गेरहबारमंत्रपढिझारै । ताके पाछे और विचारै ॥
कान तरे कनपटीकहावै । बाईंतरफपाततहँछावै ॥
छुवतिछुवतियाहीविधिजावै।पूछलगेफिरिदहिनेआवै॥
छुवतछुवतपातालैजाई । दाहिनिकनपाटिमेंचपकाई ॥
तहाँसूजिआवैबहुभाई । तबजैहैरुजसुखउजाई ॥

अथ सरदी व वादीते बृषभपोंके दोनोंकेलक्षणएकहैं॥

दोहा-शरदीवादीदुहुँनते, वृष पोंकैअकुलाय ।
ताकेछक्षणकहतहौं, समुझेएकदेखाय ॥

चौ०-बोलैपेटपियासनलागै । ठंढशरीररहैसुखभागै ॥
गोबरबोहिदारकछुजानौ । ताकेलक्षणयहपहिचानो ॥
सोंचरसेंधोसांभारलीजे । जवाखारसज्जीमिलिदीजे ॥
हर्रबहेराअँवराडारो । हरदीछोटीहर्रविचारो ॥

जीराश्वेतअसेतमँगावै । भांगकक्रूदनिताहिमिलावै ॥
देवदारुमिरचैलैकारी । पिपरीपिपरामूरसोडारी ॥
मूरीसोवादुहुनकेबीजै । वायभरंगशतावरिलीजै ॥
नागौरीअसगंधलैधरिये । सोंठिमंगायताहिलैडारिये ॥
अजवायनअजमोदकहीजै । छालिसहींजनतामेंदीजै ॥
टकाटकाभीरसबपिसवावै । दुइतोलानितप्रातखवावै ॥

अथ गरमीते वृषपांकाकरैताकेलक्षण ।

दोहा–जो गरमीते वृषभोंको, पेटझरैदुखहोय ।
ताकेलक्षणसमुझिकै, दवाकरौसबकोय ॥
दमैंअधिकश्वासाचलै, प्यासबहुतसरसाय ।
हाथपाधेरतनगरमहै, याकोयहैसुभाय ॥

चौ०–एकछटाँककतीरालीजै । साँझैभिजैप्रातवृषदीजै ॥
जवआटेंमिलिपिंडबनाई । जोनहिंखायतौदेउखवाई ॥

अन्य ।

धनियाँजीराश्वेतमँगावै । टकाटकाभरिदुवोपिसावै ॥
एकछटाँकभँागमिलवाई । यवआटासँगसानिखवाई ॥
साँझभोरदुहुँबेरखवावै । अर्द्धअर्द्धताकोकरवावै ॥

अन्य ।

फलसछालिलीजौमँगवाई । आधपावताकोपिसवाई ॥
यवआटामोंपिंडबनावै । साँझभोरदुहुँबेरखवावै ॥

अन्य ।

जमुनीआँबकीगुठलूलावै । छोटीमाँईताहिमिलावै ॥

घीसियवनकेआटासाने । पिंडबनायवृषभमुखआने ॥

अन्य ।

आधपावअरसीपिसवावै । यवआटासँघसानिखवावै ॥

अथ महिषवृषरक्तपोंके ।

चौ०–पोंकैरुधिरमहिषवृषजोई । गरमीतपहिचानौसोई ॥
धनियाँसंधौनमकपिसाई । यवआटामिलिपिंडखवाई ॥

अन्य ।

औरकतीराभिजैखवावै । यवकेआटोंमसनवावै ॥

अथ पेशाबबन्दहोइके दवा ।

दोहा–गोमहिषीवृषपशुनको, मूत्रबन्ददुखहोय ।
रुजनाशनविधिकीजिए, सुखीरहैवहसोय ॥

चौ०–राईबहुतमहीनापिसावै । जलकेसाथगरमकरवावै ॥
अंडकोशपरलेपनकरै । खुलैपेशाबदुःखरुजहरै ॥

अन्य ।

बारनकेदुइजुवाँमँगाई । दूनौश्रवणनमेंडरवाई ॥

अन्य ।

कलमीसोरानान्हापिसावै तोलादुइकीतीनिकरावै ॥
गोदधिसेरएकमेलवाई । नारिभरायकेदेउपियाई ॥

अन्य ।

मदिरागोघृतदेउमिलाई । आधपावतेहिवृषहिपियाई ॥

अथवाधियारोगलक्षण ।

दूसरानाम दुरगवाँछाकहतेहैं ।

छन्द-इकमच्छिकाकोकाम । हैवाघियातेहिनाम ॥
सोगुदाकेढिगजाय । पैठैउदरमेंधाय ॥
माछीजियैकछुदेर । दुखरहैताकोघेर ॥
इकजुवाँकोलैआव । सोश्रवणमध्यचलाव ॥
लैनींबतेलमँगाय । सोगुदामध्यफुंकाय ॥
एकचोगमेंभरिफूँकु । जोकरयाहिसलूकु ॥
कटूतेललेइकपाव । सोवृषैमुखमेंनाव ॥
हुक्काकोनीरमँगाय । सोश्रवणनमेंदेनाय ॥

अथ लोहजारोगलक्षण ।

दोहा-सुस्तरहैवृषजोबहुत, आकस्मातसुजान ।
कछुकदेरपीछूलखो, मूतैरुधिरनिदान ॥
चौ०-याकोलोहजानामबखानौ । दवाकियेवृषनीकोजानौ ॥
बबुरपातइकपावमँगाई । हरदीदुइतोलापिसवाई ॥
जलमेंघोरिनारिभरिदीजै । सांझभोरदुहुँबेरकरीजै ॥

अन्य ।

ककईपातपावभरिलीजै । अजैदूधइकसेरमेंदीजै ॥
दूनोमिलैनारिभीरप्यावै । तीनिबेरपरमाणबतावै ॥

अन्य ।

दोहा-शिखरनदीजैवृषभको, जोलोहजापहिचान ।
तक्रामिठाईमिलैके, दीज्योताहिसुजान ॥

अन्य–जुलाबजबकोईदवा, नअसरकरैतबदेय ।
दोहा–लोहजामारैवृषभको, नीकनहोयसुजान ॥
तौजुलाबयहदीजिये, जल्दीखुलैनिदान ॥
चौ०–मेंथीअजवाइनिअरुहरदी तीनौपीसिकरौबहुगरदी ॥
पातकसौंजीऔरबकैना । ककईपातकंजकेलैना ॥
यहिचारोपातामँगवावै । गांडरजरपियाजकोलावै ॥
लहसुनगोलकटैयापाता । टका २ भरिसमकरुभ्राता॥
दुइसेरपानीमेंपिसवावै । नारिभरायवृषभमुखनावै ॥
अ०–दूसरीकिस्मकालोहजारोग । रक्तमूताकरै ।
दोहा–जोगरमीमारावृषभ, रुधिर स्रुतिअलसाय ।
भूखघटैतनुदूबरो, वाकीदवाकराय ।
चौ०–सूखीफाँकीआंमकीलावै । पक्केआधपावतौलावै ॥
माटीबरतनसाँझाभिजाई । प्रातैमलिखैाजीफिकवाई ॥
पांचसातदिनवृषकोदीजै । शीतलरहैदुःखसबछीजै ॥

अन्य ।

दोहा–तिल्लीश्वेतभिजायके, एकपावदिनसात ।
प्रातैपीसिपियाउनित, शीतलह्वैहैगात ॥

अथ पैरमेंरसबादीउतरैकेलक्षण ।

दोहा–रसबादीजेहिवृषभके, उतरैचारोपाँय ।
दवाकरोतत्कालही, रुजदूषणमिटिजाय ॥
चौ०–चारोचरणकिगाँठिजोसूजे । रसबादीतेहिनामकहीजै॥
गोवृषमहषीकेरसउतैर । ताहिमसालादैरुजहरै ॥

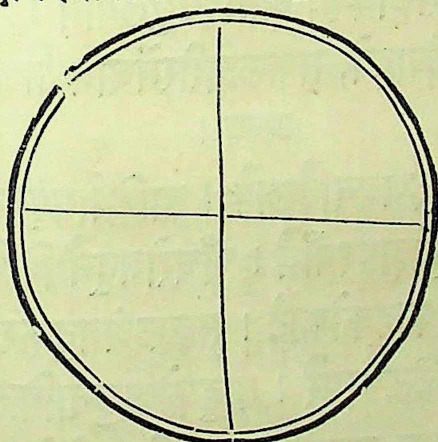
मसाला।

वायविरंगभांगअजवायन। सहिंजनजरकीछालिमिलायन।
निर्गुंडीअरुबीजपलासा। सेंधौसोंचरनमकसंवासा।
सकलदवासमभागपिसाई। चूरणकरिधरिराखोभाई॥
एकमासलगपशुकोदीजै। रोगहरैबहुसुःखबढीजै॥

अन्यलेप।

योगियारँडजरछालिमँगावै। पातधतूरसँभारूलावै॥
भांगमिलैसमभागपिसाईं। गुनगुनकरिलेपनकरवाईं॥

अथ दागेकीविधि-(यहिसूरतिकादागदेइ)



गाँठिगरेरिगोलदगवावै। मध्यलकीरैदुइकरवावै।
जौनसकलकीलिखीबनाई। यहविधिचारोगांठिदगाई।

अथ आगीमेंजोवृषभजरिजायताकीदवा।

दोहा-पावकमेंवृषजोजरै, जलदी दवा कराउ।
प्याजपीसिताकोसुरस, ऊपरतेहिटपकाउ॥
अन्य-चूनाकोजललीजिये, अरुअरसीकोतेल।
दुवौबराबरिघेपिकै, पोतिदेउसबमेल॥

अथ रोगकानामपरका ।

दोहा-पंखनदारभुजंगइक, चिटकैकछुकउडाय ।
जावृषऊपरनीकरै, तेहिरुजयहह्वैजाय ॥

चौ०-परकारुजतेहिनामकहावै । सकलअङ्गछालापरिजावै ॥
चाराखायनकछुकरिनेहा । नितप्रतिदूबरिहोवैदेहा ॥
जोगफलतिंमदवानकरिहै । खाऊचिटकतनुकीसबजैहै ॥
दूसरनामभुजंगकोजानौ । उडानागताकोपहिचानौ ॥

दवा ।

दोहा-गोहूँकाभुसलायकै, अग्निदेउसुलगाय ।
ताकीधुईदेवाइये, सकलशरीरमेंजाय ॥

अन्य ।

चौ०-रविदिनअरुणबनातैलावै । ताहिधोयवृषकेमुखनावै ॥
वहैबनातशीशपरबाँधै । पाँचरोजदूनौविधिसाधै ॥
यहविषधरकाहूकोकाटै । सकलअंगटुकराह्वैफाटै ॥
परछाईंजेहिऊपरपरै । ताहूकोकछुनाकिसकरै ॥

अथ रोगकानाम जराशरदऋतुकीघासमेंफेनाउठतहै । सोखायेतेयहरोगहोताहै ।

दोहा-कीटहोतइकशरदऋतु, तृणपरताकोवासु ।
श्वेतफेनमुखतेद्रवै, जरानामकहितासु ॥

चौ०-दूसरनामचौखराकहिये । जोरअढाईदिनुलगरहिये ॥
महिषीवृषवनमेंजोचरई । वहैघासखायेरुजबढई ॥
खातैघासबैठिपशुजाई । कछुनविसायहिलैनहिंपाई ॥

जहरदाराकिरवाअरुफेना । याकोदवाकरोबुधऐना ॥

पहिचान ।

पशुकेतनुइयाहीकछुदरस । जानौजरारोगवृषतरसै ॥

दवा ।

कूटिपीसिइकसेरकरेला । वृषभखवायदेउमुखमेला ॥

अन्य ।

श्यामिमिर्चमिलिघृतैपियावै । तासोंजहरमिटैसुखपावै ॥

अन्य ।

कुम्हडापीसिकैनीरनिचुवावै । नारिभरायवृषभमुखनावै ॥

अन्य ।

दोहा–नींबपातापिसवायबहु, आधसेररसुलेउ ।
एकपावगोदधिहिमिलि, वृषभनारिभरिदेउ ॥

अन्य । टटका ।

दोहा–वृषभपीठिपरकागजो, बैठैआयबनाय ।
ताहीक्षणविषसकलहर, सुखबाढैअधिकाय ॥

चौ० ताहित औरजतनकोकीजै । जाविधिकागबैठिदुखछीजै ॥
थोरादधिपीठीपरछिरकै । बैठिकागखावैमनभरिकै ॥

अथ सरेदमीरोगलक्षणघुरघुराकरै । श्वासबहुतचलै मेहनतिमेंजीभकाढिदेतहै ।

दोहा–घुरघुरायश्वासाचलै, मेहनतपरेकलेश ।
जीभकाढिठाढोरहै, सुस्तबहुतनहिंवेश ॥

चौ०—साँसउखरिताहीकीजाई । याकीदवाकरौमनलाई ।

दवा ।

दुइतोलाभरिसोरालीजै । यवआटासँगखानकोदीजै ॥

अन्य ।

सौंफकुलींजनामिरचैंकारी । तोलातोलाभरिसबडारी ॥
आधपावसक्करमिलवावै । अरुणवरणकीजौनदेखावै ॥
आधसेरगोदूधघोराई । प्रातसमयवृषके मुखनाई ॥

अन्य ।

सोंठिअतीससौंफकोलीजै । मिसिरीश्यामामिरचसमकीजै ॥
पीसिछानिबरतनभरिलीजै । साँझसमयवृषखानकोदीजै ॥
आधपावपरमानबतावै । यवआटामेंपिंडखवावै ॥

अन्य ।

सितासौंफइकपावमँगाई । तोलासातमिरचमिलवाई ॥
औराएकटकाभरिलीजै । कंजगूदइकतोलादीजै ॥
लोनयनूदुइटकाकरावै । सकलमहीनपीसिघेपरावै ॥
आटामेंदुइपिंडबनाई । साँझभोरपशुकेमुखनाई ॥

अन्य ।

मदिराआधपावपरमाना । एकमासलगदेउसुजाना ॥

अन्य ।

किशमिसिऔरमुनक्कापिपरी । मिरचसौंफअदरखलैधरी ॥
जीराश्वेतलेउबिहिदाना । मौरेठीमिलिकरौविधाना ॥
सकलदवासमभागपिसाइ । बनुरगोंदजलमोंभिजवाई ॥

तेहिपानीगोलीबनवावै । तोलाइकपरमानकरावै ॥
साँझभोरइकएकखवाई । रोगजायपशुबहुसुखपाई ॥

अन्य ।

प्याजकतरिइकपावसोलीजै । तामेंनमकटकाभरिदीजै ॥
जलपियायकैदेउखवाई । इकइसरोजप्रमाणबताई ॥

अन्य ।

नींबपातकोरसनिकराई । तामेंसर्षपतेलमिलाई ॥
गोदधितीनौंसमघेपवावै । सातरोजलगवृषहिपियावै ॥
घामेंमेंफिरिबहुदौरावै । सर्षपतेलनाकमगप्यावै ॥

अन्य ।

जीराश्वेतपावइकलीजै । सूखपातमेंहदीसमकीजै ॥
श्वेतखदिरअरुलेउकतीरा । आधपावलैदूनौधीरा ॥
रसवततोलातीनिमँगावे । सकलपीसिनान्हीकरवावे ॥
वाकीतीनिखुराककरीजै । सांझैभिजप्रातवृषदीजै ॥

अन्य ।

प्याजकतीराकुचिलिबनावै । जलपियायकैताहिखवावै ॥

अथ आरजासाँकमीका ।

दोहा—सेरदमीते अलगहै, साँकदमीरुजयेह ॥
सांकलेनमुशकिलकरै, दुबरावैबहुदेह ॥
चौ०—सेरदमीकोमेहनतपरई । नरीसांकघुरघुरधुनिकरई
सांकदमीमेंयहनहिंहोई । इतनेभेदकहतसबकोई ॥

दवा ।

चौ०-अँवराहर्रबहेरालीजै । श्यामामिरचचारौंसमकीजै ॥
पावपावभरिवजनकरावै । दुइसेरचावरमिलैपकावै ॥
शक्करलालिआधसेरडारी । हलुवाकारितेहिलेउउतारी ॥
तीनिछटांकप्रातानिशिदीजै । सांकदमीकोअन्तकरीजै ॥

दोहा-सेंहुडकेरीडारलै, दुइतोलापरमान ।
आगिमेंभूजेताहिकहु, पीसैतौनसुजान ॥

चौ०-पिपरामूलमिरचलेकारी । इकइकतोलातामहँडारी ॥
यवकोआटामिलैखवावै । सांकदमीसोंरुजमिटिजावै ॥

दोहा-इंद्रायनकीमूलअरु, पीपरिमिशचामिलाय ॥
रेंडाकेजरकीत्वचा, पिपरामूलमगाय ॥
अजवायनिवंडारअरु, त्रिफलाहरदीदारु ॥
कूलींजनखारीनमक, सेंधौसोंचरधारु ॥
दुइदुइतोलाकेवजन, सबकोलेइतुलाय ॥
गोहुँकेआटासेरइक, रोटिलेइबनाय ॥
बिनुवाकंडनमध्यधरि, वाकोदजिफूँकि ।
कोइलाकरिबरतनधरै, तारोटीकोबूँकि ।

चौ०-दवातीनितोलालैलीजै । यवपिसानमेंसानिकेदीजै ॥
आधीआधीदुहुँबेरदीजै । सांकदमीकादुखहरिलीजै ॥

अथरोगखांसीविधांसैकाशरदीवगर्मीदुहुँनतेहोतहै ।

दोहा-धांसकरैबहुजोरसे, खांसीअधिकबढाय ।
शरदीगरमीदुहुँनते, ताकोकरौउपाय ॥

चौ०-जोगरमीतेधांसकराई । ताकेलक्षणसुनौबताई ॥
सूखीखाँसीवृषभकोआवै । तौगरमीकीदवाकरावै ॥
दवा-बब्बुरगोंदकतीरालीजै । टकाटकाभरिपीसिकरीजै ॥
जवआटामेंताहिसनावै । पिंडबनायवृषभमुखनावै ॥

अन्य ।

शक्करसौंफमिरचलैकारी । गोघृतसकलबराबरिडारी ॥
दोहा-चारौरकमपावइक, यवआटामेंसानु ।
इकइसदिनलगुदीजिये, याकोयहीविधानु ॥

अन्य ।

चौ०-लेउमलाइदूधकीभाई । जलपियायइकपावखवाई ॥

अन्य ।

एकछटाँकरूसकेपाता । सांभारिनमकटकाभरिलाता ॥
यवआटामेंपीसिमिलाई । पिंडबनायकेदेउखवाई ॥

अन्य ।

जवाखारइकतोलालीजै । सोंठिछटाँकपीसिधरिदीजै ॥
रसकोछिरकादेउमिलाई । नारिभरायवृषभमुखनाई ॥

। अन्य

मदिरालेउमिठाईकेरी । गोघृतताहिमिलावौघेरी ॥
आधपावदोनोतुलकीजै । नारिभरायवृषभकोदीजै ॥
गोघृतसहतबराबरिलावै । कछुककैफरापीसिमिलावै ॥
थोरागुनगुनताहिकराई । नथुननकेमगदेउपियाई ॥

सर्षपतेलनारिभरिदीजै । खांसीधांसदुहूँरुजछीजै ॥
शरदीतेखांसीघाँसहोयताकोउपाय ॥
दवाकोनाम । महाकल्याणपिंड ॥

दोहा–सोंठिसोहागाकैफरा, कुटकीवायभिरंग ।
हींगफ़ःकरीमिर्चलै, जीराश्वेतैरंग ॥

चौ०–सकलदवासमभागपिसाई । मेथीआटादूनमिलाई ॥
जलसोंसानिपिंडबनवावे । एकछटांकप्रमाणकरावे ॥
गोलीएकप्रातनितखाई । वृषकोरोगदूरिह्वैजाई ॥
औररोगजोहोयदिमाकी । ताकोनीककरैमनताकी ॥

अन्य ।

तीनिवर्षकागुडलैआवे । एकछटाँकप्रमाणकरावे ॥
एकटकाभरिसोंठिपिसाई । दूनौमिलैकेदेउखवाई ॥

अन्य ।

दोहा–सोंठिपीपरीमिरचअरु, लहसुनचारोपीस ।
तोलातोलाभरिसकल, रुजकोकारिहैखीस ॥
चौ०–मेंथीकेरपिसानमँगावे । ताहिमिलायवृषभमुखनावै ॥

अन्य ।

हींगअधेलाभरिपिसवाई । अदरखएकछटांकमँगाई ॥
तेहिकोचीरिहिंगभरदीजे । ऊपरतेकपरोटीकीजे ॥ आगी
कीभुलभुलिमेंधारिये । पाकिजायतबदवानिकारिये ॥

पीसिमहीनताहिकोकीजे । जलपियायकैपीछूदीजै ॥
सातरोजलगुयहैखवावै । शरदीखाँसीघांसामिटावै ॥
अन्य० बाँसपातनितप्रातखवाई । याहूतेघाँसबमिटिजाई ॥

अन्य लेपनादिमागका ।

पडवामहिषकगोरबरलावै । आधपावताकोकरवावै ॥
खारीनमकटकाभरिलींजे । जलसोंघोरिपकायधरीजै ॥
शिरपरलेपनयाहिकोकरै । तीनिरोजमेतेहिरुजहरै ॥

अन्य ।

दोहा—अजादूधअरुसहतको, पावपावभरिलेउ ॥
सोंठिटकाभरिपीसिकै, मिलैप्रातनितदेउ ॥

अन्य ।

धेलाभरिअफीममँगवावै । अदरखमेंतेहिचीरिभरावै ॥
अग्निपकायपीसितेहिलीजे । तीनिखुराकयहीकीकीजै ॥
तीनिरोजलगुप्रातखवावै । खांसीघांसनीकह्वैजावै ॥

अन्य ।

हरियरिबोडीपुस्ताकिलावै । ताहिपीसिकैसतानिकरावै ॥
अदरखचीरिसतैकोभरै । माटीलेसिभारमेंधरै ॥
जबपरिपक्कहोयानिकराई । पीसिवृषभकोदेउखवाई ॥
याविधिचारिपांचदिनकीजे । घांसजायरुजदुखहरिलीजै ॥
दोहा—दूनौदवाअफीमकी, अधिकगरमतेहिजानु ।
बहुउपायकरिथकिरहे, तबयहकरोविधानु ॥

अथ तिलानामरोग ।

दोहा-तिलानामरुजहोतहै, गोवृषमहिषीमाहिं ।
ताकेलक्षणकहतहौं, समुझिलीजियोताहिं ॥
दोहा-दमैअधिकशोसाबहुत, देहदूबरीहोय ॥
रंगतिबदलैभूखकम, येलक्षणवृषसोय ॥
चौ०-आवैसांसखुरखुरीगरमें, तिलानामरुजजानौतनमें ॥
दवा-कोरतिलअरुसोंठिमँगावै । मूसारिश्वेतामिठाईलावै ॥
सकलपीसिघृतदेउमिलाई । पावपावसमलेतौलाई ॥
गोहूँसेरअढाइकलाव । सांझभिजप्रातैकुटवावै ॥
पंद्रहपिंडमिलैकैबाँधो । प्रातसांझानितवृषमुखसाधो ॥
अन्य-दोहा-जौंननीमकेवृक्षमें, पानीबहैबनाय ।
ताकोलीजेपावइक, नारिभरायपियाय ॥
चौ०-आठरोजलगुदीज्योभाई । तिलारोगनीकोह्वैजाई ॥

अन्य ।

महिषीकोखिदुवौदगवावै । याहूतेरुजखोयबहावै ॥

अथ कृमिउदरनाशनजोंकीवगैरह ।

दोहा-गोवृषमाहिषीकेउदर, जोजोंकीह्वैजाय ।
दवाकरौतेहिपशुनकी, तासोंरुजबहिजाय ॥
घासएकबहुतजामई, गंगनदिनकेतीर ।
ताकेखायेप्रगटतन, जोंकीउदरशरीर ॥
चौ०-वृषभमहिषदूबरह्वैजाई । कछुकदिनोंमेंसोमरिजाई ॥
श्वेतवरणकीजोंकदिखावै । कबहूँगोबरसँगइकआवै ॥

दवा बकी क्वाथ।

चौ०-मैलाबगुलीएकमँगावै। दशसेरपानीमेंउसनावै॥
अष्टविशेषीजबरहिजाई। तबमलिकैसबअस्थिफेंकाई॥
जेहिपशुकोइकादिवसपियावै। जोंकीझरैबहुतसुखपावै॥
निबकौरीकोतेलमँगावै। आधपावनितप्रातपियावै॥
पांचसातदिनपशुकोदीजै। जोंकीझरैनीकतेहिलीजै॥

अन्य।

बहुहुक्कनकोलीजोपानी। तामेंघोरुतमाखूफुकनी॥
कपरछानिभरिनारिपियावै। जोंकीउदरकेरिझरिजावै॥
पावएकराईपिसवावै। आधसेरदधिघोरिपियावै॥
तीनिचारिदिनदीज्योभाई। जोंकीउदरकेरिझरिजाई॥

अन्य।

एकछटाँकपलासपापरा। पावएकगुडमिलिकैधरा॥
पाँचसातादिनलगुयहदीजै। जोंकीसकलउदरकीछीजै॥

अन्य।

पलासपापराराईलीजै। अजवाइनिकामीलादीजै॥
खारीनमकसकलसमडारौ। पीसिकूटिबरतनमेधारौ॥
एकछटाँकदवातौलाई। आधपावदधिमेंसनवाई॥
यवकेआटापिंडबनावै। पाँचसातदिनलगुवृषपावै॥

अन्य।

त्रिफलापातसरीफालीजै। औरगंदनापातकहाजै॥

इंद्रायनिकीजरमिलवाई । सकलदवासमभागपिसाई ।
एकछटाँकवजननितकीजै । दधिमेंघोरिपियनकोदीजै ॥

अन्य ।

लहसुनअरुगुलकन्दामिलाई । आधपावदूनौपिसवाई ॥
गूगुरुतोलाएकमिलावे । चनाकेआटासानिखवावे ॥

अथ सर्वविषनिवारण गरुडमंत्र ।

छिपॐस्वाहा

दोहा-गरुडमंत्रपहिचानियो, याकोबहुतविधान ।
सर्वहलाहलकोहरै, जानौचतुरसुजान ॥
मंत्रमहोदधिग्रंथइक, हैचौदहोंतरंग ।
ताहिअंतमोंलिखोयह, याकोसकलप्रसंग ॥

चौ०-सर्पवीछिकुत्ताअरुस्यारू । लघुअरुबडेजीवविषधारू॥
औरजहाँलगविषधरयोनी । तिनकेकाटेमृत्युजोहोनी ॥
विषपत्थरकाष्ठादिमेंजानौ । मूलपत्रफलमाहिबखानौ ॥
धोकेनरपशुखायजोकोई । नाशहोयतेहिजानौसोई ॥
येसबजहरनाशकरवावे । गरुडमंत्रविधिवतझरवावै ॥

अथ कोईपशुसूजीखायजाय ताकेलक्षण ।

दोहा-गोवृषमहिषीऔरपशु, सूजिखायजोजाय ।
ताकेलक्षणऔषधी, जोअजमाईआय ॥

चौ०-कठिनरोगयहपशुकोजानो । मानौकालआयनियरानो॥
जेचंडालवैरकरिपावैं । तेनरपशुकोसूजिखवावैं ॥
आटाकोगोलाइककरिकै । ताकेबिचमेंसूजीधरिकै ॥

देयखवायपशूकोजबहीं। गडैझोंझआँतनमैंतबहीं ॥
औरसूजिकोन्योविधिखावे। दानाअरुचारापरिजावे ॥
दरदउदरमेंपैदाकरै। भूखपियाससकलपरिहरै ॥
सुस्तशरीरहैदिनराती। नरिबहैनथननबहुभाँती ॥
दिनदिनदेहजातदुबराते। फिरिमरिजायकछुकदिनबीते॥
पेटचिरायचमारनदेखा। बहुतपशुनकोकरिकैसीखा ॥
चोंकीसूजिझोंझआँतनमें। रुजलक्षणचीन्हेपशुतनमें ॥

दवाखानेकी।

चुंबकपत्थरनामकहावै। मकनातीसफारशीगावै ॥
लोहेसेबहुप्रीतिरखावै। छुवतैलपिटिजायतेहिभावै ॥
दुइतोलालैमिहीपिसाई। अरुगुलाबकेनीरघोराई ॥
नारिभरायपियनकोदीजै। याकेखायेरुजयहछीजै ॥
पीछूतीनिदंडघाटिकाके। औरदवातेहिकीज्योनीके ॥
रेंडीतेलआधसेरलीजै। पक्कीतोलकिवजनकरीजै ॥
डेढसेरगोदूधमिलावै। थोराथोरापशुहिपियावै ॥
यहितेसूजिझोंझतेनिकरै। सुखीहोयपशुकोदुखहरै ॥

अन्य।

दाखमुनक्काएकछटांके। रेंडीतेलउतनहींलैके ॥
सनईकीपातीमँगवावै। आधपावपरमानबतावै ॥
दोहा—पानीलीजैसेरइक, दूधगऊदुइसेर।
गुडपुरानइकपावभरि, पीसिएकमेंगेर ॥
फिरिआगीमेंचुरैके, जबपानीजरिजाय।

दूधरहैतबछानिकै, घरुवरतनमेंलाय ॥
पहिलेचुंबकवृषभको, पीसिफँकाउप्रवीन ।
पीछूदवापियाउयह, सूजिगिरेदुखहीन ॥
चौ०—फेरिमसालादेउबनाई । साँझभोरजोहजमकराई ॥
चारानरमवृषभवहपावै । नितप्रतिथोराथोरबढावै ॥

मसालाहाजमेका ।

चौ०—घोडवचवायाभिरंगमँगावै । अजवायनअरुकुटकीलावै॥
छोटीबडीहर्रअरुमोथा । करपसकाराजीरीसाथा ॥
हींगसोहागाखीलकरावै । वजनबराबरिसबपिसवावै ॥
जलपाकेइकसेरचुराई । हींगपीसितामेंपकवाई ॥
जबपानीआधाजरिजाई । सकलदवातेहिदेउमिलाई ॥
एकएकतोलाजानितखाई । साँझभोरदुहुँबेरबताई ॥
धूपकालगरमीजबआवै । चौथाईतबसौंफमिलावै ॥

अथ सुजवारोगलक्षण ।

दोहा—सुजवाकोपहिचानियो । सूजिजायसबअंग ।
ताकेअबलक्षणकहौं । दवाकियेरुजभंग ॥
दाबेऐंचेखालके, चुरचुरातमरराय
ताकोसुजवानामकहि, लक्षणदियेबताय ॥
चौ०—आधपावगेरूमँगवावै । नींबपातइकसेरमिलावै ।
पीसिछानिकैताहिपियाई । पुनिकरिगरमदेहमलवाई ॥

अन्य ।

सांभरिनमककमहीनापिसावै । सकलअंगमेंसूखमिलावै ॥

बहैपसीनातनमेंजबहीं। सुजवारोगजायगोतबहीं॥

अन्य।

श्यामकसौंजीपातापिसाई। आधेसरताकोतौलाई॥
एकछटाँकमिरचमिलवावै। जलमेंघोरिवृषभमुखनावै॥

अन्य—दूसरीतरहकेसुवाकीपहिचान।

दोहा—फूलउदरजोवृषभको, खालछुयेचरराय॥
ताकीदवाबखानिये, सुजवाएककहाय॥
चौ॰ साबुनपानीमेंपिसवावै। गुरियारीरकेउपरमलावै॥
बहुतदेरतकमालिसकरै। दवाखायतुरतैदुखहरै॥

अन्य।

साबुनएकछटांकमँगावै। गोघृतआधपावऔटावै॥
तामेंसाबुनदेउमिलाई। जबसेरायतबदेउपियाई॥
पाँचसातदिनयाविधिकीजै। सुजवानीकहोयदुखछीजै॥

अन्य—तीसरीतरहकेसुजवाकीपहिचान।

दोहा—सुजवारोगबखानिये, सूजैसकलशरीर।
अँगुरीदेइगडाइये, मडहाहोयगँभीर॥
चौ॰—बठियाकेकंडनकीरूनी। पावएकापिसवावौआगी॥
एकसेरपानीऔटावै। ताहिघोरायसेरायपियावै॥
तीनिरोजलगदीज्योभाई। सुजवारोगदूरिह्वैजाई॥

अथ मढुवावीसीरोग लक्षण।

दोहा—भौंहैंसूजैंवृषभकी, श्रवणसूजिबढुजायँ।
थलथलायथलकेवदन, मढुवावीसीआय॥

चौ०—सेरएकमहुवापिसवावै । एकपावगुडताहिमिलावै ॥
चारिसेरदेतक्कामिलाइं । एकखुराकप्रमाणबताइं ॥
याविधचारिपांचदिनदीजै । महुवावीसीरोगहरीजै ॥

अथ रसपित्तीउछरेकालक्षण व दवा ।

दोहा—रसपित्तीरुजनामहै, वृषभमाहिषतनुमाहि ।
भौहैंतोंदीसूजबहु, थलथलायदुखताहि ॥

चौ०—सकलशरीरददोरापरै । कछुचकलेकछुलंबेधरै ॥
महुवावृक्षकिरूनीलावै । आधपावताकोकरवावै ॥
इतनैगोहूँचपरीलीजे । गेरूएकछटाँककरीजे ॥
धेलाभारिअफीममिलवावै । दुइतोलातेहिनमकडरावै ॥
सर्षपतेलआधसेरलीजै । दवापीसितामेंमिलदीजे ॥
सकलअङ्गमेंदेउमिलाई । शरदीऋतुमेंधुवाँतपाई ॥
बेरकिलकरीकोफुकवाव । ताकेधुवांअग्नितपवावै ॥

अथ मसालावसंतऋतुको । अर्षवतीसा ॥

पंचक—अर्षवतीसालिख्योवृषभकोवृक्षवतीसाकिछालैहै ॥
ऋतुवसंतमेंवृषैपियावैबढैसुखनकोजालैहै ॥
अर्जुनअँविलीआँबअकोहरअँवराकीज्योख्पालैहै ॥
केशवपरसादबिचारिकहैफिरयाहिकायहीहेवालह ॥ १ ॥
कैथाअरुकचनारकरादाकटहरकैवाँग्वालैह ॥
वेलवेलसोंधवेहनाबब्बूरलेउवकैनाछालैहै ॥
सिरसाअरुसिरसईसहोरासाहिंजनसरौंविशालैहै ॥
केशवपरसादविचारिकहोफिरियाहिकायहीहेवालैहै॥ २ ॥

पिलुवाकहौंपलाशपदों हूपीपरकोअरझालैहै ॥
महुवालेउमयनफरजमुनीनींबखैमारिकरीलैहै ॥
कनकोहरिफलगोलदेखावैकंजाकांटकटीलैहै ॥
केशवपरसादविचारिकहैफिरियाहिकायहीहैवालैहै ३ ॥
इनकोछीलिकूटिसुखवायैमनभरिसमकरितौलैहै ॥
मीठागुडइकमनहिमिलावैनामजासुकोभेलैहै ॥
पानीडारिकपासउठावैमदिराचुवैअमोलैहै ॥
केशवपरसादविचारिकहैफिरियहिकायहीहैवालैहै ॥ ४ ॥
पावसेरनितदेउवृषभकोनारीभरिमुखमेंलैहै ॥
प्रातकालइकमासपियावैभूँखबढैतनुपालैहै ॥
दूबरपशुमोटाहैजावैरुजकामानौकालैहै ॥
केशवपरसादविचारिकहैफिरियहिकायहीहैवालैहै ॥ ५ ॥

अथ मसालाग्रीष्मऋतुका

दोहा–ग्रीषमऋतुहिबखानियो, घरतीतपैअकाश ।
हाहाकरिमारुतबहै, कीज्योदशाप्रकाश ॥
चौ०–एकछटाँकमिरचपिसवावै । वतनोसाँभरिनमकमिलावै ॥
पावएकघृततामेंदीजै । यवपिसानमेंपिंडकरीजै ॥
ग्रीषमऋतुहिविशेषखवावै । हृष्टपुष्टतनुरुजनाहिंआवै ॥

अथ मसालावर्षाऋतुका ।

दोहा–वर्षाऋतुमेंवृषभको, देउचनेठिविशेष ।
भूँखबढैताकतिकरै, कहौंग्रंथकेलेष ॥

चौ०–हरदीखारीनमकमँगावै । चनायवनकोआटालावै ।
असगँधकीजरसुखैपिसावै । टाटपुरानाकाटिकुटावै ॥
दुइदुइसेरदवासबकीजै । पांचसेरगुडतामेंदीजै ॥
माटीकेबरतनभरिधारिये।मनुभारितकमहिषिकोडरिये ॥
जहँगोबरकोघूरदेखावै । एक मासतहँगाडिधरावै ॥
पीछूखोदिखोलिमुखधरिये । कीरापैसिद्धितबकहिये॥

दोहा–सकलमीसिमलिमिहींपट, छानिधरोवुधवान ॥
इकइकनारिपियाइये, । सांझभोरसोजान ॥

चौ०–प्रथमबनायजेठमेंधारिये । वर्षाऋतुमेंवृषैपियइये ॥
माछीमसाडांसनहिंलगिहै । हृष्टपुष्टतनुबलउपजैहै ॥

अथ मसालाशरदऋतुका ।

दोहा–शरदऋतुहिमेंदीजिये, सीरामहाअनूप ।
दुर्बलतेमोटाकरै, बाढैअंगस्वरूप ॥
गुम्माकोबिरवाहरा, लेउसमूलउखारि ।
पांचसेरमुसरेकुचिलि, देहांडीमेंडारि ॥

चौ०–दशसेरसीरादेउमिलाई । घामेंआठदिवसधरवाई ॥
नवयेंदिननारीमेंभरै । वृषभापियायपुष्टबहुकरै ॥
गेरहदिनलगुदेउसुजाना । ताकेपीछूऔरविधाना ॥

अन्य।

पावसेरानितप्याजकुचावै । एकमासलगुताहिखवावै ॥

अन्य ।

काईतालकेरीपिसवाई । एकपावानितप्रातखवाई ॥

यवपिसानमेंपिंडबनावै । अठयेंदिनऋतुमाहिंखवावै ॥
मोटाहोयअधिकसुखलीजै । चाराबहुतहजमकरिदीजै ॥

अन्य ।

दोहा–लेउचमरौधाखोदिकै, एकपावपरमान ।
शरदऋतुहिमेंदीजिये, यवपिसानमेंसान ॥

अथ मसाला चनोठि शरद व हेमन्तऋतुमें देय ।

दोहा–कहौंचनेठीवृषभकी, शरदहिमन्तैहोय ।
शीतनव्यापैबलकरै, रुजनहिंआवैकोय ॥

चौ०–चनायवनकोआटालीजै । मेथीहरदीकूटिधरीजै ॥
राईलहसुनकुचिलिपिसावै । पाँचपाँचसेरैसबनावै ॥
साँभरिलोनेप्याजकुटाई । सर्षपतैलैदेउमिलाई ॥
गुम्मालेउसमूलउखारी । चारोदवाएकमनडारी ॥
माठामनपाँचकतेहिभरौ । माटीकेबरतनकरिधरौ ॥
क्वांरमासभरिघूरे धरिये । कातिकमेंवृषमुखमेंडरिये ॥
पावएकनितबजनकरावै । यवकेआटसानिखवावै ॥

अथ मसालहेमन्तऋतुके घुघुवारीपिंड ।

दोहा–घुघुवारीयहपिंडहै, सकलसुखनकी खानि ।
ऋतुहेमन्तमेंदीजिये, वृषको कहौंबखानि ॥

चौ०–झिकवरिकोगूदमँगावै । तौलपसेरीपाँचकलावै ॥
कारोतिलअरुलेउमिठाई । तामेंमहुवादेउमिलाई ॥
तीनौदशदशसेरकरीजै । औरदवाआगेलखिलीजै ॥
सोवाबीजजवायनिहरदी । राईचँदसुरसबकरुगरदी ॥

राईजौनवनरसीभाई । सेरसेर पाँचौ पिसवाई ॥
कूटिछानिसबदवामिलावै । महुवातिलमूसरकुटवावै ॥
माटीकेबरतनभरिधरिये । एकसेरनितप्रातखवैये ॥
चनाकेआटामेंतेहिदीजै । रोगहरैतनुपुष्टकरीजै ।

अथ मसाला औटि शिशिरऋतुमें देय ।

दोहा-औटीदीजैवृषभको, शिशिरऋतुहिमेंमीत ।
अतिबलिष्ठतनुरुजहरन, करोग्रन्थपरतीत ॥

चौ०-हरदीएकछटाँकपिसावै । साँभरितोलातीनिमिलावै
आधसेरगुडतामेंदीजै । दुइसेरपानीमेंऔटीजै ॥
अठयेरोजवृषभजोपावै । भूखबढैतनुमोटदेखावै ॥

अथ मसालातनुपुष्टकरन । हेमन्तऋतुको ॥

दोहा-देउमसालावृषभको, ऋतुहेमन्तसोजानि ।
यासोंतनुमोटोरहै, महावृद्धि बलखानि ॥

चौ०-बैंगनभांटालेउमँगाई लम्बेलम्बेकाहिदेखराई ॥
डेढसेरतेहिनोलकरीजै । दुइसेरमहिषीतक्रधरीजै ॥
भांटानीरउसेयमिलावै । आधसेरसांभरितेहिनावै ॥
तीनौंमिलैइकत्रकरीजै । आधसेरनितप्रातहिदीजै ॥
चुकिनावेतबओरबनावै । याहीदवाजरूरकरावै ॥

अथ नासुहिमंतऋतुको ।

दोहा-नासुदीजियेवृषभको, बहुदौरेकरिरोश ।
नथुरातबोलैनहीं, हलुकारहैहमेश ॥

चौ०-आँबाहरदीकोपिसवावै। सर्षपतेलैताहिमिलावै॥
नासुवृषभाहिमऋतुमेंदीजे। दौरैबहुतसकलसुखलीजै॥

अन्य।

यलुवानकाछिकनीमँगवावै। रीठाडारिसूखपिसवावे॥
पैसापैसाभारिपरमाना। रंडकिचोंगीभरोविधाना॥
नथुनामेंताकोफुकवावे। दौरैरोशकरैसुखपावे॥

अथ मसालायलुवापाग। हेमन्त वा शिशिरऋतुमेंदेय॥

दोहा-यलुवापागहिदीजिये, हिमऋतुशिशिरमेंजानु।
याकेगुणअबकहतहौं, समुझिदेखुयहमानु॥
चौ०-दौरावैमेजालिबढवावै। थकवाहीकबहूँनाहिंआवे॥
कब्जमसाफबहुतैसोहोई। दमकसकोसबढैबहुसोई॥
दोहा-यलुवालीजैटकाभरि, पीसिमहीनकराय।
एकसेरगोदूधमें, हांडीमध्यपकाय॥
मीठीआँचकराइये, युगलयामलौंतात।
चारादानादेइकै, दवाखवावोप्रात॥
चौ०-आठरोजलगवृषकोदीजै। नवयेंदिनतेमेहनातिलीजै॥
दौरावैनितकोशबढावै। भोजनबहुवरदासिकरावै॥
घीवामिरचसाँभरिंनितदीजै। दानाभिजैचनातेहिलीजै॥

अथ मसाला। सेंदुरुफगुटिका। दौरायेबहुतदमकस
रहै। रंगतिबढै।

दोहा- दौरैबहुदमकसरहै, रंगतिबढैअनूप॥
भूखअधिकमोटारहै, देहनलागैधूप॥

चौ०-मैजलिकीसाधनकरवावै । इकडुइनितैकोशबढावै ॥
सेंदुरफगुटिकानामकहीजै । माघमाससमैंवृषकोदीजै ॥

दवा

सेंदुरफचारभरिपिसवावै । एकछोहारामेंभरवावै ॥
दूधगायकादुइसेरलावै । इकहाँडीमेंताहिपकावै ॥
तामेंडारिछोहारादीजै । दिनभरिमीठीआँचकरीजै ॥
आधादूधरहैजबभाई । काढिछोहारापीसिमिलाई ॥
सेंदुरफसहितदूधवृषदीजै । एकमासभरियतनकरीजै

अथ मसालाछोहारावटीपाग ।

दोहा--पौषमाघकोमासजब, धनअरुमकरबखानि ।
कहौंछोहारावटीतब, वृषभखवावोआनि ॥

चौ०-बहुतबलिष्टपुष्टस्थूला । होयअरोग्यहरैसबशूला ॥
शिरसाकेबीजामँगवावै । बकठाफोरिकैगूदपिसावै ॥
एकछोहाराकोलैलीजै । गुठलूकाढिकैताहिभरीजै ॥
ऊपरतेतागाभरिबाँधौ । एकसेरगोपयमेंरांधौ ॥
आधादूधरहैजबभाई । पीसिछोहारादेउमिलाई ॥
एकमासानितप्रातखवावै । रंगतिबढैबहुतसुखपावै ॥

अथ मसालाक्षुधाकारण ।

दोहा-कहौंमसालावृषभको, अतिमोटाहैगात्त ।
मगमैंथकैनभूखबहु, अतिअहारकरिजात्त ॥
गोसकटैयासुखैकै, मूलसहितपिसवाय ।
हरदी उतनी डारिये, सांभरिसेरसवाय ॥

चौ०-पाँचसेरमीठागुडलीजै।गूगुरआधपावतोहिदीजै ॥
कारीजीरपावइकलावै । सकलदवाकोपीसिछनावै ॥
घरौमिठाईमेंसबसानी । डेढपावनितप्रातखानी ॥

अथ मसालाहाजमा व पाचनका शिशिरऋतुका ।

दोहा-कहौंमसालापचनको, औरनीरबहुपेय ।
यासोंतनुमोटोरहै, शिशिरऋतुहिमेंदेय ॥

चौ०-हाटपुरानेनकोफुकवावै । कोइलाकरिकैताहिधरावै ॥
गोलकटैयालेउसमूला । फूकिकरौताहीकोकोइला ॥
सांभरिनमकपीसिसबलीजै । तीनौदवाबराबरिकीजै ॥
प्रातहिएकछटाँकखवावै । चूनकोआटाताहिमिलावै ॥

अथ मसाला सर्वरोगडदरव्याधिवगैरहपर ।

दोहा-कहौंमसालावृषभको, सबरोगनपरदेय ।
भूखबढैमोटाकरै; सकलरोगहरिलेय ॥

चौ०-नितप्रातिबारहमासखवावै । ताकेरोगनिकटनाहिं आवै॥
दवा-त्रिफलाबजिपवाँरजवाइन । सेंधौराईसोंठिमिलाइन ॥
कचरीसहिंजनछालिमँगावै । सकलदवासमभागपिसावै॥
माटीकोमटुकीमेंभरिये । दहीमिलायऔर विधिकरिये॥
तुरँगलीदिमेंदेउगडाई । सातरोजपीछूखुदवाई ॥
शिशिरहेमन्तशीतजबआवै। छिरकादधिकेयोजामिलावै॥
एकपावनितवृषकोदीजै । सुखीरहैसबरुजहरिलीजै ॥

अथ मसालाकमताकीतिवृषको ।

दोहा–अबलवृषभकोसबलजो, कीन्होचहौसुजान ।
तौयहदवापियाइये, मोटहोयबलवान ॥

चौ०–महिषिबियानिजौनदिनजानौ । ताहीदिनतेयहु-
परमानौ ॥ उत्तमपहिलाभैंसिबियानी । मध्यमदो-
हलातिहलाजानी ॥ अथवावृद्धयुवाजोहिपावै ।
ताकोदूधवृषभमुखनावै ॥ तीनिछटाँकघृतैमिलवाई ।
नारिभरायकैदेउपियाई ॥ बारहदिनलगयाविधिकरै ।
सुखीरहैतनबलबहुधरै ॥

अथ मसालाकोनामअठरोजाहरमहीनेमेंआठरोज
देनाचाहिये ।

दोहा–कहौंमसालाअठरोजा, हरमहिनोंमेंदेय ।
उदरव्याधिसगरीमिटै,बादीकोहरिलेय ॥

चौ०–पिपरीपिपरामूरिजवाइन । मिरचसोंठिजरलेइंद्रायन ॥
कामोला असगंधनागोरी । बीजपलाशताहिवेधरी ॥
पीपरजरकीछालिसुखावै । अरुहुरहुरासमूलमँगावै ॥
अजमोदैअरुवायभिरंगा । सोवापातसूखतेहिसंगा ॥

दोहा–इकइकलेउछटाँकसब, पीसिमिहीछनवाय ।
श्वेततिलनकोतेलतेहि, पावएकमलवाय ॥
तीनिबरसकोलायगुड, सबकेदूनाडारि ।
हाथेभेसबमिलैकरु, बरतनधरोविचारि ॥

चौ०–पारिवातेआठइलगखाई । प्रातैएकछटाँकबताई ॥

अथ मसालासर्वउदरव्याधिपर बादी, बदहजमी, पेटफूलै पेट बोलै हेरुहाजोंकीवगैरहका है ।

दोहा–कहौंमसालाउदरका, सर्वव्याधिहारिलेय ।
बादीबदहजमीमिटै, क्रिमिजिगरनाहिंहोय ॥

चौ०–गलगलायबोलैवृषपेटा । अरुफूलैवहुताहिसमेटा ॥
हर्रबहेराअँवरालीजै । कचरीअजवायनितेहिदीजै ॥
मिरचपीपरीहरदीलावै । राई गूगुरभांगमिलावै ॥
सेंधौसोंचरनमकमँगाई । इंद्रायनजरताहिमिलाई ॥
इतनीदवाभागसमलीजै । इकइकताहिछटाँककरीजै ॥
झिकवारीकोगूदमँगावै । तामेंअदरखपीसिमिलावै ॥
पावपावदूनौपरमाना । गोदधिसेरअढाइकजाना ॥
पीसिमिलैबरतनधरिराखै । एकछटाँकप्रातनितचाखै ॥

अथ मसालाबदहजमी व देहसूजिजायतोहिका ।

चौ०–त्रिकुटाकारजीरालीजै।जीरसफेदचीतवचदीजै ॥
हींगसौंफदेशीराईलइ । कचरीअजवायनिहरदीदइ ॥
भूँजिसोहागाऔरफिटकरी । सेंधौसोंचरअरुभैडखरी ॥
त्रिफलावायबिडङ्गमँगाई । कुटकीसज्जीखारमिलाई ॥
जवाखारमिलिसबसमकरै । पीसिछानिबरतनमाधरै ॥
बदहजमीअरुसूजनिजावै । कामपरैजोपशुहिखवावै ॥

अथ सारामसाला ।

चौ०–माठापंद्रहसेरमँगाई ।तौलिदसेरपियाजुमिलाई ॥
पांचसेरआटागोहूँका । खारीनमकसेरपांचैका ॥

दोहा—मटुकामें भरिदेइ सब, सातरोजलगुसारि ।
अठयेंरोजापियांवई, गुणसुनियनिरधारि ॥
चौ०—होयतयारभूखबहुलागै । माँछीडांसदेखितेहिभागै ॥

अथ मसालातयारीका ।

दोहा—दानाको यह हजमकरि, अरुचाराबहुखाय ।
होयमोटबलअधिकतनु, लक्षणकहौंसुनाय ।
चौ०—अदरखामिरचपीपरामूरी । गूदबदामलेउतेहिफोरी ॥
तजसमेतयहपांचौलीजै । आधआधपावैसमकीजै ॥
लौंगैएकछटाँकमँगावै । औरदवाकीवजनकरावै ॥
दोहा—जावित्रीअरुजायफल, छोटिइलाचीजानु ।
सोंठिसहितचारौरकम, छःछःटंकबखानु ॥
चौ०—बंगलापानचारिसौलीजै । सकलदवामिलिकुटिधरीजै॥
सांझसुबहदुहुँबेरखवावै । पैसापैसाभारिकरवावै ॥

अथ मसालाबदहजमीका ।

दोहा—बदहजमीवृषकोलखै, ताहिमसालादेउ ।
सांझभोरदुहुँबेरकहि, यहखुराककरिलेउ ॥
चौ० घोडवचामिरचहींगमँगवावै । अरुअजमोदाताहिमिलावै॥
पैसापैसाभरिसबलीजै । सैंधोएकछटाँककरीजै ॥
कूटिछानिसबपिंडबनावै । चनाकेआटामिलैखवावै ॥

अथ मसाला वादी बदहजमीरफाकरनेका ।

दोहा—यहैमसालावृषभको, प्रातटकाभरिदेय ।
वादीबदहजमीदुवो, हजमनिकतेहिलेय ॥

चौ० सैंधोनमकभांगअजवायन । नागौरीअसगंधमिलायन ॥
पावपावचारौंकरिलीजै । आगेऔरप्रमाणकरीजै ॥
सोंचरनमकलेउसेरआधौ । सांभारिसेरसवाइकसाधौ ॥
अजवायनखुरसानीलीजै । लोटासज्जीतेहिमिलिदीजै ॥
एकपावदूनोपरमाना । कूटिछानिसबधरोसुजाना ॥
चनाकेआटापिंडबनावे । प्रातटकाभरिनित्तखवावे ॥

अथ मसालायहबहुतफादेकाहै ।

दोहा–कहौंमसालनीकयह, सकलफायदाहोय ।
टकाएकभरिदीजिये, प्रातपिंडकरिसोय ॥

चौ० अजमोदाअजवायनहरदी । त्रिफलात्रिकुटाकोकरु
अँगरैलाअरुभांगभरंगी । पांचोलोनकरासमअंगी ॥

अथ फस्तखोलैरुधिरलेवेकीजगहै व रगनके नाम । गरदी ॥
वा इनफस्तनके खोलेजोरोगअच्छेहैजातेहैं तिनकेनाम.

दोहा–प्रथमरगनकोपराखिवो, जानोनामसुजान ।
तेहिपाछेनस्तरहनो, रुधिरलेउपरमान ॥

चौ० –बिनजानेछेदैनसकोऊ । हाथकाटिडारोतेहिदोऊ ॥
सकलचौपयापशुतनजानो । रक्तलेनइकइसपहिचानो ॥
तिनकेनामसुनोमनलाई । भिन्नभिन्नमैंकहौंबनाई ॥

अथ जीभमेंदुइरगेहैंतिनके नाम । जफदयन ।

जीभकेनीचेदुइरगजानो । दांतनकेसामुहेबखानो
इनफस्तनकेखोलेभाई । मुखकेरोगसकलबहिजाई ॥

अथ दूनोनथुनोमेंदुइरगेहैंतिनकेनाम । अरकन ।

दूनोनथुनोमेंदुइजानो । दूनोकोइकनामबखानो ॥
बहुनिगाइकरिदेखोजाई । तबपहिचानपरैगोभाई ॥
इनफस्तनकेगुणसुनिलीजै । नेत्ररोगसगरेहरलीजै ॥
नाकश्रवणअरुमुखकेजानो । इनफस्तनमेंनीकबखानो ॥

अथ दोनोंश्रवणनकेनीचेदुइरगैहैंतिनकेनाम-दुवाजीन ।

दूनोश्रवणकेतरजानो । एकएकरगसोपाहिचानो ॥
सोगरदनकेतरफगईहै । फस्तखोलिगुणबहुतकहीहै ॥
खजुलीबदखोरामिटिजावै । फूलपरैतनुताहिमिटावै ॥
जितनेरुजगरमितेजानौ । खोलैफस्तनकोतिहिमानो ॥

अथ दोनोंमोढनतेदुइरगैपीठिकेतरफगईहैंतिनकेनाम-आखिरसान ।

दुइरगदूनोकन्धमेंजानो । एकएकदुहुँओरबखानो ॥
सोपीठीकेतरफगईहै । इनकीफस्तकइउरुजमेंहै ॥
पीठकमरकेरोगबहावै उठबैठमेंचरणखिचावै ॥
बोझानाहिंकछुउठैउठाई । औरखुरनकेरोगनशाई ॥
जोपशुतनयहफस्तखोलावै । इतनेरोगनीकह्वैजावै ॥

अथ दुइरगैदोनोमोढनकेअगारीछातीपरसेपेटकेतरफ-दूनो ओर एकएकगईहैंतिनकेनाम ।

वारजीन ।

दूनोंमोढनअग्रबखानो । भितरीतरफसोइपहिचानो ॥
छातीपरतेप्रगटसोकहिये । पेटओरइकएकसोलहिये ॥
इनमेंफस्तलियेतेहिजानो । केतनोरोगनाशकरिमानो ॥

दीमागीमुडहलनाहोई । खफती बेहोशी काहिसोई ॥
बदहवासघबराहटतनमें । इतनेरोगजाँयइकपलमें ॥

अथ दुइरगैंदोनोंतरफछाती–सीनामेंएकएकहैंसोदि-
मागपरकोगईहैं तिनकेनाम । अदजान ।

दोहा–छातीसीनामेंप्रगट, दुइरगकहौंसुनाय ।
एकएकदुहुँतरफहैं, सोदिमागपरजांय ॥

चौपाई–इनमेंफस्तखोलिजोजानै । छातीकेसबरोगहेरानै ॥
अरुअगिलेपैरनकेरोगा । तेसबनीकहोयँयहियोगा ॥

अथ येचारौंरगैंचारोंपाँयनमेंघुट्ठनागाँठिनकेनीचोभि-
तरीतरफहोतीहैंतिनके नाम । साफिनात ।

दोहा–याहिरगचारौंचरणमें, गाँठिघूटुनाजौन ।
ताकेनीचेकहतहौं, तरफभीतरीतौन ॥

चौ०–इनचरणुनमेंफस्तखोलावै । खुरनरोगसगरेमिटिजावै ॥
चलैसुस्तपगुजखमजोहोई । लीन्हेंरुधिरनीकसोहोई ॥

अथ यहचारोरगैंचारोपाँयनमेंघुटुनागाँठिनकेबाहिरी-
तरफवहीरगनकेसामने होती हैं तिनके नाम । वहासियात ।

दोहा–याहिचारौरगजानियो, घुटुनागाँठिनमाहि ।
बहिरीदिशियेप्रगटहैं, बहुनिगाहकरुताहि ॥

चौ०–भितरीरगजोप्रथमबखानी । तिनकेसमुहेहैंयाहिजानी ॥
इनफस्तनकोखोलिजोजानै । छातीभरीजकारिखुलिमानै ॥
पगकेरोगहराततिनकी । नीकहोययहजानोमनकी ॥

अथ यहएकरगदुमकेनीचेनरमेंबहुतपतरीबडीनिगाहै-
तेदेखिपरतिहैतेहिकानाम । जनव ।

दोहा–यहरगएकबखानियो, दुमनीचेनरमाहि ।
बहुतपातरीहोतिहै, करुनिगाहबहुताहि ॥

चौ०–यहरगफस्तखोलिजोजानै । अंडकोशकेरोगनशानै ॥
उदरमेंझोरियाजोबच्चनकी । तेहिकेरोगहरैयहनीकी ॥
दूधसूखिजावेजेहिपशुको । अरुबदहजमीहोवेवाको ॥
यतनेरोगसकलुहारिजाई । जोमनचिततेकरोउपाई ॥

अथ अग्निपुराणे द्विनवत्यधिकद्विशततमोऽध्याये
गोशांतिर्लिख्यते । धन्वन्तरिरुवाच ।

श्लोक–गोविप्रपालनंकार्यंराज्ञागोशान्तिरेवच ।।
गाव पवित्रामाङ्गल्यागोषुलोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ १ ॥
शकृन्मूत्रंपरंतासामलक्ष्मीनाशनंपरम् ।।
गवांकण्डूयनंवारिशृङ्गस्याघौघमर्द्दनम् ॥ २ ॥
गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिश्चरोचना ॥
षडङ्गंपरमंपानेदुःस्वप्नादिनिवारणम् ॥ ३ ॥
रोचनाविषरक्षोघ्नीग्रासदःस्वर्गगोगवाम् ।।
यद्गृहेदुःखितागावः सयातिनरकंनरः ।। ४ ।।
परगोग्रासदःस्वर्गीगोहितोब्रह्मलोकभाक् ।।
गोदानात्कीर्तनाद्रक्षांकृत्वाचोद्धरतेकुलम् ॥ ५ ॥
गवांश्वासात्पवित्राभूः स्पर्शनात्किल्बिषक्षयः ॥
गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिः कुशोदकम् ॥ ६ ॥

एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत् ॥
सर्वाशुभविनाशायपुराऽऽचरितमीश्वरैः ॥ ७ ॥
प्रत्येकंचत्र्यहाभ्यस्तंमहासान्तपनंस्मृतम् ॥
सर्वकामप्रदञ्चैतत्सर्वाशुभविमर्दनम् ॥ ८ ॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्रंपयसादिवसानेकविंशतिम् ॥
निर्म्मलाःसर्वकामाढ्याः स्वर्गगाः स्युर्नरोत्तमाः ॥ ९ ॥
त्र्यहमुष्णांपिबेन्मूत्रंत्र्यहमुष्णंघृतंपिबेत् ॥
त्र्यहमुष्णंपयः पीत्वावायुभक्षः परंत्र्यहम् ॥ १० ॥
तप्तकृच्छ्रव्रतंसर्वपापघ्नंब्रह्मलोकदम् ॥
शीतैस्तुशीतकृच्छ्रंस्याद्ब्रह्मोक्तंब्रह्मलोकदम् ॥ ११ ॥
गोमूत्रेणाचरेत्स्नानंवृत्तिंकुर्य्याच्चगोरसैः ॥
गोभिर्व्रजेच्चभुक्तासुभुञ्जीतायचगोव्रती ॥ १२ ॥
मासेनैकेननिष्पापोगोलोकीस्वर्गगोभवेत् ॥
विद्याञ्चगोमतींजप्त्वागोलोकंपरमंव्रजेत् ॥ १३ ॥
गीतैर्नृत्यैरप्सरोभिर्विमानेतत्रमोदते ॥
गावः सुरभयोनित्यंगावोगुग्गुलगन्धिकाः ॥ १४ ॥
गावःप्रतिष्ठाभूतानांगावः स्वस्त्ययनंपरम् ॥
अन्नमेवपरंगावोदेवानांहविरुत्तमम् ॥ १५ ॥
पावनंसर्वभूतानांक्षरन्तिचवहन्तिच ॥
हविषामन्त्रपूतेनतर्पयन्त्यमरान्दिवि ॥ १६ ॥
ऋषीणामग्निहोत्रेषुगावोहोमेषुयोजिताः ॥
सर्वेषामेवभूतानांगावः शरणमुत्तमम् ॥ १७ ॥

गावःपवित्रंपरमंगावोमांगल्यमुत्तमम् ॥
गावः स्वर्गस्यसोपानंगावोधन्याः सनातनाः ॥ १८ ॥
नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यएवच ॥
नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ॥ १९ ॥
ब्राह्मणाश्चैवगावश्चकुलमेकंद्विधाकृतम् ॥
एकत्रमन्त्रास्तिष्ठन्तिहविरेकत्रतिष्ठति ॥ २० ॥
देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिःसकलंजगत् ॥
धार्य्यतेवैसदास्मात्सर्वे पूज्यतमामताः ॥ २१ ॥
पिबन्तियत्रतत्तीर्थंगङ्गाद्यागावएवहि ॥
गवांमाहात्म्यमुक्तंहिचिकित्साञ्चतथा शृणु ॥ २२ ॥
शृङ्गामयेषुधेनूनांतैलंदद्यात्ससैन्धवम् ॥
शृंगवेरबलामांसीकल्कासिद्धंसमाक्षिकम् ॥ २३ ॥
कर्णशूलेषुसर्वेषुमंजिष्ठाहिंगुसैन्धवैः ॥
सिद्धंतैलंप्रदातव्यंरसोनेनाथवापुनः ॥ २४ ॥
बिल्वमूलमपामार्गंधातकीचसपाटला ॥
कुटजंदन्तमूलेषुलेपात्तच्छूलनाशनम् ॥ २५ ॥
दन्तशूलहरैर्द्रव्यैघृतंरामविपाचितम् ॥
मुखरोगहरंज्ञेयंजिह्वारोगेषुसैन्धवम् ॥ २६ ॥
शृङ्गवेरंहरिद्रेद्वेत्रिफलाचगलग्रहे ॥
हृच्छूलेवस्तिशूलेचवातरोगेक्षयेतथा ॥ २७ ॥
त्रिफलाघृतमिश्राचगवांपानेप्रशस्यते ॥
अतीसारेहरिद्रेद्वेपाठाञ्चैवप्रदापयेत् ॥ २८ ॥

सर्वेषुकोष्ठरोगेषुतथाशाखागदेषुच ॥
शृङ्गवेरञ्चभार्ङ्गीञ्चकासेश्वासेप्रदापयेत् ॥ २९ ॥
दातव्याभग्नसन्धानेप्रियंगुर्लवणान्विता ॥
तैलं वातहरंपित्तेमधुयष्टीविपाचितम् ॥ ३० ॥
कफेव्योषञ्चसमधुसपुष्टकरजोऽस्रजे ॥
तैलाज्यंहारिताळञ्चक्षतभग्नेशृतंददेत् ॥ ३१ ॥
माषास्तिलाः सगोधूमाः पशुक्षीरंघृतंतथा ॥
एषांपिण्डीसलवणावत्सानांपुष्टिदात्वियम् ॥ ३२ ॥
बलप्रदाविषाणांस्याद्ग्रहनाशायधूपकः ॥
देवदारुवचामांसीगुग्गुलुहिंगुसार्षपी ॥ ३३ ॥
ग्रहादिगदनाशायएषधूपोगवांहितः ॥
घण्टाचैवगवांकार्याधूपेनानेनधूपिता ॥ ३४ ॥
अश्वगन्धातिलैः शुक्रं तेनगौः क्षीरिणीभवेत् ॥
रसायनञ्चपिण्याकंमत्योंयोधारयेद्गृहे ॥ ३५ ॥
गवांपुरीषेपञ्चम्यांनित्यंशान्त्यैश्रियंयजेत् ॥
वासुदेवञ्चगंधाद्यैरपराशान्तिरुच्यते ॥ ३६ ॥
अश्वयुक्छुक्लपक्षस्यपञ्चदश्यांयजेद्धरिम् ॥
हरिंरुद्रमजंसूर्यंश्रियमग्निंघृतेनच ॥ ३७ ॥
दधिसम्प्राश्यगाः पूज्यकार्यंवह्निप्रदक्षिणम् ॥
वृषाणांयोजयेद्युद्धंगीतवाद्यरवैर्बहिः ॥ ३८ ॥
गवान्तुलवणंदेयंब्राह्मणानाञ्चदक्षिणाम् ॥

नैमित्तिकमाकरादौयजेद्विष्णुंसहाश्रिया ॥ ३९ ॥
स्थण्डिलेऽब्जेमध्यगतंदिक्षुकेसरगान्सुरान् ॥
सुभद्राजोरविः पूज्योबहुरूपोबलिर्बहिः ॥ ४० ॥
खंविश्वरूपासिद्धिश्चऋद्धिः शान्तिश्चरोहिणी ॥
दिग्धेनवोहिपूर्वाद्याः कृसरैश्चन्द्रईश्वरः ॥ ४१ ॥
दिक्पालाः पद्मपत्रेषुकुम्भेष्वग्नौचहोमयेत् ॥
क्षीरवृक्षस्यसमिधः सर्षपाक्षततण्डुलान् ॥ ४२ ॥
शतंशतंसुवर्णस्यकांस्यस्यचाद्विजेददेत् ॥
गावः पूज्याविभोज्याश्चशान्त्यैक्षीरादिसंयुता ॥ ४३

अग्निरुवाच ।

शालिहोत्रःसुश्रुतायहयायुर्वेदमुक्तवान् ॥
पालकाप्योऽङ्गराजायगजायुर्वेदमब्रवीत् ॥ ४४ ॥

इति श्रीवृषकल्पद्रुमे गोवृषशुभाऽशुभलक्षणाचिकित्सा-
मन्त्रयन्त्रगोशांतितन्मुहूर्तादिनिरूपणं समाप्तम् ॥

शुभं भूयात् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस
कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस
खेतवाडी–मुंबई.


गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार